वेदान्तसार एवं कुर्आन में तत्त्व-मीमांसा

(एम.फिल.उपाधि हेतु प्रस्तुत शोधपत्र)

शोधकर्ता:-
साकिब अली

पर्यवेक्षक:-
प्रो.राम नाथ झा

संस्कृत एवं प्राच्यविद्या अध्ययन संस्थान
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली – 110067

2022

Scanned with CamScanner

School of Sanskrit and Indic Studies
JAWAHARLAL NEHRU UNIVERSITY
New Delhi – 110067

DECLARATION

I Sakib Ali hereby declare that this thesis entailed **"वेदान्तसार एवं कुर्आन में तत्त्व-मीमांसा"** submitted in the Jawaharlal Nehru University, New Delhi – 110067 for the award of the Degree of Master of Philosophy, is my original work and has not been submitted so for in part or full for any other Degree or Diploma in any University/Institutions.

Sakib Ali

Sakib Ali

Scanned with CamScanner

School of Sanskrit and Indic Studies
JAWAHARLAL NEHRU UNIVERSITY
New Delhi – 110067

CERTIFICATE

This thesis **"वेदान्तसार एवं कुर्आन में तत्त्व-मीमांसा"** submitted by Sakib Ali to Jawaharlal Nehru University, New Delhi – 110067 for the award of the Degree of Master of Philosophy, is an original work and has not been submitted so for in part or full for any other Degree of Diploma in any University .This may be placed before the examiners for evaluation and for of the degree of Mater of philosophy.

Prof. Sudhir Kumar
(Chairperson and Dean)

31.01.2023
Prof. Ram Nath Jha
(supervisor)

Dean
School of Sanskrit & Indic Studies
Jawaharlal Nehru University
New Delhi-110067 India

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

आभार (Acknowledgement)

वर्तमान में संसार के अधिकतर मनुष्य संसार को सुख भोगने का साधन समझते हैं। वह आध्यात्मिक विषय में रुचि नहीं लेना चाहते। आध्यात्मिक जीवन है या नहीं उससे हमें क्या करना, संसार ही हमारे लिए पर्याप्त है। ईश्वर क्या है? आत्मा क्या है? अधिकतर मनुष्य इन तत्त्वों का अन्वेषण करना पसन्द नहीं करते हैं। वह चाहते है कि इस प्रकार के शोध होंना ही बन्द हो जाएँ। यह यथार्थवादी दृष्टिकोण है। सनातन एवं इस्लाम दोनों धर्मो का आधार ही "आत्मा और परमात्मा" पर आधारित हैं। आध्यात्मिक विषय को चुनना मेंरे लिए शौभाग्य की बात हैं। प्रस्तुत शोध में अनेक व्यक्तियों का योगदान रहा हैं। मेंरे द्वारा शोध कार्य के, मुख्य विषय पर चिंतन करने का आश्रय वर्तमान परिस्थितियों एवं चिंतन मनन को जाता है। मैं अपने प्रिय एवं सम्माननीय आदरणीय प्रो.राम नाथ झा गुरु जी के मार्गदर्शन से इस शोध कार्य को पूर्ण करने में सफल हुआ, जो कि मेंरे पर्यवेक्षक भी है। जिनके आशीर्वाद एवं सहयोग के बिना यह कार्य सम्भव नहीं था। मैं सदैव आदरणीय प्रो. सुधीर कुमार गुरु जी का आभारी रहूँगा। गुरु जी ने 'आध्यात्मिक तुलनात्मक' विषय पर कार्य कार्य करने की मुझें प्रेरणा दी। मैं ह्रदय से विनम्रतापूर्वक आदरणीय प्रो.संतोश कुमार शुक्ला, प्रो.रजनीश कुमार मिश्रा, स्वर्गीय प्रो.सत्यमूर्ति एवं संस्थान के सभी आदरणीय गुरुजनों का आभार व्यक्त करता हूँ। आप सभी ने समय-समय पर मुझें सुझाव दिये। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के प्रो. हिमांशु शेखर आचार्य, प्रो.शरीफ, स्वर्गीय प्रो. खालिद बिन युसुफ, जफर इफ़्तेखार, सारिका वाष्णे, हेमबाला आदि सभी का ह्रदय से आभार व्यक्त करता

Scanned with CamScanner

हूँ। इन सभी ने मेंरे शैक्षणिक जीवन को आगे बढ़ाने में योगदान दिया। विषय को चयनित करने में सहायता करने वाले मेंरे प्रिय मित्र 'दबे भारती' को ह्रदय की अनन्त गहराइयों से धन्यवाद देता हूँ। साथ ही मेंरा अन्य रूपों में साथ देने वाले मेंरे मित्रों में सतेंद्र यादव,रियाज़ त्यागी,ताहाहसन ज़ाफरी, आकिब खान,सद्दाम हुसैन,शाहरुख़ चौहान,कुँवर मोहम्मद अहमद,अबूज़र खान,अज़रुद्दीन,शमीम बारी, नासिर हुसैन, महेश चौहान, तारा चंद खुराव, सिबतेन रज़ा,मोहम्मद आरिफ़,आनिफ़ पठान,अफराज अहमद आदि अन्य सभी का आभार प्रकट करता हूँ।

मुझें शिक्षा के माध्यम तक पहुंचाने वाले मेंरे माता-पिता श्रीमती मेंहराज बेगम, श्री मसूद अहमद मेंरे बड़े भाई साजिद अली, खलील अहमद, और सभी बहनों का आभार व्यक्त करता हूँ। मेंरे लेखन कार्य में पठन-पाठन एवं चिंतन में उपयोग होने वाले सभी ग्रंथो, लेखों, पुस्तकों एवं तकनीकी उपकरणों की सहायता से शुभ कार्य सम्पन्न हो सका।

Scanned with CamScanner

विषय-सूची

प्रथम अध्याय तत्त्व-मीमांसा का समान्य परिचय

द्वितीय अध्याय वेदान्तसार एवं क़ुर्आन में तत्त्व-मीमांसा
(क)वेदान्तसार में प्रतिपादित तत्त्व-मीमांसा कास्वरूप
(ख)क़ुर्आन में प्रतिपादित तत्त्व-मीमांसा का स्वरूप

तृतीय अध्याय वेदान्तसार एवं क़ुर्आन में प्रतिपादित
तत्त्व-मीमांसा का तुलनात्मक अध्ययन

चतुर्थ अध्याय वेदान्तसार एवं क़ुर्आन में प्रतिपादित तत्त्व-मीमांसा
के स्वरूप की आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समीक्षा

उपसंहार

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Scanned with CamScanner

भूमिका

संसार में जन्म लेने के बाद धीरे-धीरे मानव बुद्धि का विकास होता है। जब वह इतना बुद्धिमान हो जाता है-कि सोचना समझना एवं विचार करना बुद्धि का कर्म समझता है। इस विशाल संसार को देखकर अपनी बुद्धि से विभिन प्रश्न करता है कि इस विशाल संसार में प्रत्येक वस्तु इतने सुव्यवस्थित तरीके से कैसे चल रही है ? इस विशाल संसार को कौंन चलाता है ? यदि मैं मिट्टी से घड़ा बनाता हूँ तो घड़े का निर्माता मैं हूँ। परन्तु इस विशाल संसार का निर्माता कौंन है ? यह संसार कैसे बना ? हम क्यों जन्मे ? कहाँ से आए ? कहाँ जायेंगे ? इत्यादि अनेक प्रश्नों से बुद्धि निरन्तर विचारशील रहती है । बुद्धि की निरन्तर चिन्तनशील कला को ही दर्शन कहते है। पाश्चात्य दार्शनिक अरस्तू का कथन है कि – "दर्शन का आरम्भ ही आश्चर्य से होता है"। जब मानव इस विशाल संसार को देखता है तो आश्चर्य चकित हो जाता है। अपने मन की कौतूहलता को शान्त करने का साधन तलाश करता है। और अपनी बुद्धि के सामर्थ्य के अनुसार सत्य ज्ञान की खोज में लगा रहता है। चिंतन-मनन का दूसरा नाम दर्शन है। मानव 'बुद्धि' के माध्यम से जैसे- जैसे सभ्यता एवं समाज का विकास कर रहा है। वैसे- वैसे दर्शन के क्षेत्र में भी दिन-प्रतिदिन विकास हो रहा है।

आंग्ल भाषा में दर्शन शब्द दो शब्दों Philos+ Sophy से मिलकर बना है।

Philos + Sophy = Philosophy

⇓ ⇓

Love Knowledge

Scanned with CamScanner

फिलोस

इसका अर्थ – 'प्रेम' है । यदि प्रेम न हो तो कुछ भी सम्भव नहीं है। सम्बन्धों के अनुसार प्रेम की परिभाषाएँ अलग–अलग दी जा सकती हैं परन्तु सामान्य दृष्टि से यदि कोई वस्तु आपको आकर्षित करती है तो आप की बुद्धि उस विषय को जानने में इच्छुक हो, वही 'प्रेम' है।

सोफी

सोफी शब्द लैटिन भाषा के 'सोफिया' शब्द से बना है। जिसका अर्थ – 'ज्ञान' है। किसी भी विषय या वस्तु के बारे में सत्य अथवा असत्य जानना ही 'ज्ञान' कहलाता है।

सामान्यतः मानव एक दूसरे से हर प्रकार भिन्न है। वह अनेक पद्धतियों के माध्यम से अपना जीवन-यापन करता है। दर्शन एक ऐसा मार्ग है कि जहाँ सभी विषयों एवं परिस्थितियों की सीमाएँ निरर्थक हो जाती हैं। दर्शन के जगत में भारतीय दृष्टिकोण अदृश्य आध्यात्मिक विषयों का दर्शन कराता है। विशाल जगत में ज्ञान के माध्यम से श्रेय मार्ग को प्रदर्शित करता है। भारतीय दर्शन के अनुसार प्रथम प्राप्त 'ज्ञान' वेद है। संस्कृत साहित्य में शब्द उत्पत्ति की प्रक्रिया निर्वचन कहलाती है । इस प्रक्रिया में शब्द की उत्पत्ति धातु एवं प्रत्यय से होती है। वेद शब्द 'विद्' धातु 'ल्युट' प्रत्यय से बना है। जिसका अर्थ – 'ज्ञान' है। ठीक इसी प्रकार 'दृश' धातु से 'देखना' शब्द बना है ।

"दृश्यते यथार्थतत्त्वं अनेनिति दर्शनम्"[1]

अर्थात- जिसके द्वारा देखा जाए वह दर्शन कहलाता है । अब प्रश्न यह बनता है कि क्या देखा जाए ? देखना भी दो प्रकार से होता है ।

प्रथम - आँखों के माध्यम से किसी दृष्ट वस्तु या तत्त्व का साक्षात्कार ।

[1] शब्दकल्पद्रुम - पृष्ट संख्या: 689

Scanned with CamScanner

द्वितीय – वस्तु या तत्त्व का साक्षात्कार अनुभूति के माध्यम से ।

जिस तत्त्व का साक्षात्कार आँखों के माध्यम से नहीं होता इस प्रकार के ज्ञान को देखना 'दर्शन' कहलाता है। क्या अपने कभी सोचा है ? यह प्रकृति सभी के लिए समान क्यूँ है ? सूर्य सभी को प्रकाश देता है? हवा सभी को शीतलता प्रदान करती है? घूमती हुई पृथ्वी सभी को समान रूप से जल,अन्न ,वायु इत्यादि पदार्थ प्रदान करती है। लेकिन फिर भी कुछ व्यक्ति बुद्ध, महावीर, शंकर इत्यादि बन जाते हैं। और कुछ व्यक्ति धन एकत्रित करने में अपना पूरा जीवन व्यर्थ कर देते हैं। आपकी बुद्धि कभी इस प्रकार के प्रश्न करती है? व्यक्ति का दृष्टिकोण ही संसार में उसकी उपस्थिति एवं पहचान को निर्धारित करता है। अतः तर्क के माध्यम से उत्पन्न ज्ञान के द्वारा तत्त्व का साक्षात्कार करना दर्शन कहलाता है। दर्शन ही संसार के समस्त तत्त्वों को देखने एवं समझने के लिए प्रेरित करता है।

वेदान्त दर्शन

भारतीय दर्शन के अनुसार 'वेदान्त' संसार का सर्वश्रेष्ट दर्शन है। संसार की उत्पत्ति से प्रलय तक का ज्ञान 'वेदान्त' है। 'विद' धातु से उत्पन्न 'वेद' का अर्थ 'ज्ञान' है। और जहाँ ज्ञान का अन्त होता है , वह वेदान्त कहलाता है। वेदान्त से आगे कोई ज्ञान नहीं है। यह संसार का पूर्ण एवं अंतिम ज्ञान भी कहलाता है। वस्तु प्रतिपादन के अनुसार वेदान्त शब्द के अनेक अर्थ है-

१. सरल शब्दों में "वेदों का अन्त" वेदान्त कहलाता है । जहाँ आकर वेद पूर्ण हो जाते हैं, वह वेदान्त है।
२. वैदिक साहित्य की परम्परा में वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, इत्यादि साहित्य का अंतिम भाग उपनिषद् है। उपनिषदों का दूसरा नाम वेदान्त है ।

Scanned with CamScanner

३. उपनिषदों में ब्रह्म,जीव,आत्मा, का विषद् वर्णन किया गया है। वेदान्त भी जीव,आत्मा एवं ब्रह्म का विवेचन प्रस्तुत करता है।

४. वेदान्त में सभी प्रमाण उपनिषदों से प्रमाणित है। अर्थात एक ऐसा शास्त्र जिसके प्रमाण उपनिषद् हो वह वेदान्त है ।

५. उपनिषद् वेदों का अंतिम सार होने के कारण 'वेदान्त सार' कहलाता है।

वेदों का सार जन-मानस में फैलाने के लिए वेदान्त एक महत्वपूर्ण माध्यम है। वेदान्त ब्रह्म और जीव के बीच रहस्यों का उदघाटन करता है। उपनिषद् शब्द तीन शब्दों से मिलकर बना है ।

उप - समीप या निकट
नि - श्रद्धा
सद् - बैठना

अर्थात – "गुरु के समीप श्रद्धा से बैठना" वेदान्त कहलाता है। अतः वेदान्त किसी दर्शन के नाम का द्योतक नहीं है। यह तो सत्य के लिए प्रयोग होने वाला अंतिम शब्द है।

ब्रह्म

किसी स्थान या वस्तु का नामकरण उसके कर्मो के आधार पर किया जाता है। यह नामकरण प्रक्रिया कब और कहाँ से शुरू हुई इस विषय के सम्बन्ध में प्रमाणित रूप से कुछ नहीं कहाँ जा सकता है। यह नामकरण की प्रक्रिया व्याहवारिक दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी है। ब्रह्म शब्द दो अक्षरो से मिलकर बना है, यह शब्द दिखने में अत्यन्त सरल प्रतीत होता है लेकिन इस शब्द की महिमा उतनी ही जटिल है। संस्कृत व्याकरण के अनुसार ब्रह्म शब्द की उत्पत्ति 'बृह' धातु से हुई है। ब्रह्म का शाब्दिक अर्थ 'विशाल' है। अर्थात- जिसका कोई परिमाण एवं आकार निश्चित न हो वह 'विशाल' कहलाता है। जो सम्पूर्ण संसार को अपने अन्दर

Scanned with CamScanner

समाहित किये हुये है वह 'ब्रह्म' है । विशालता के आधार पर ब्रह्म अन्य रूपों में भी जाना जाता है। पहले वेदों को ब्रह्म कहते थे। उसके बाद कर्मकाण्ड की अधिकता होने के कारण यज्ञ को ही 'ब्रह्म' कहा जाने लगा। यज्ञ को जगत उत्पत्ति करने वाली शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया। ब्रह्म एक अद्वितीय शक्ति है, जिसके अन्दर समस्त जगत प्रपंच समाहित है। वह स्वप्रकाशयुक्त होते हुये समस्त जगत को प्रकाशित करता है। अनन्त, अखण्ड,चेतनयुक्त, अनादि, अविनाशी, और आनन्दमय है। ब्रह्म को सिद्ध करने के लिए अनुमान एवं प्रमाण दोनों ही व्यर्थ है। ब्रह्म श्रुति के माध्यम से सिद्ध होता है। क्योंकि अनुमान वर्तमान स्थिति को देख कर किया जाता है, और प्रमाण के लिए साक्षात्कार का होना आवश्यक है। श्रुति के अनुसार –

"यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मन सा सह" ।[2]

अर्थात – मन के साथ वाणी ब्रह्म को न पाकर वापस लौट आती है, ब्रह्म अगम्य है। इस लिए ब्रह्म के विषय में अनुमान और प्रमाण दोनों ही असिद्ध होते हैं। श्रुतियाँ साक्षातरूप से ब्रह्म के स्वरूप का प्रतिपादन करती हैं – यह जो सत्य ज्ञान है वह ब्रह्म है।

"सत्य ज्ञानमनन्तं ब्रह्म"[3]

ब्रह्म सांसारिक वस्तु के अधीन नहीं है, बल्कि सांसारिक वस्तुएँ इसके अधीन हैं। ब्रह्म को न तो शब्दों और न ही चित्रों के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है। ब्रह्म किसी अन्य के समान नहीं है ,वह 'अवाङ्गमनसगोचर' है। त्रिकालवादित होते हुये माया शक्ति के माध्यम से दृश्यमान जगत का निमित्त और उपादान कारण है तथा स्वयं माया से लिप्त नहीं होता है। ब्रह्म सत्य, ज्ञान, आनन्द, एवं चेतन्य स्वरूप है। वह

---

[2] तै.उ. (१२-४-१)

[3] तै.उ. (२-२-१)

Scanned with CamScanner

जगत उत्पत्ति से पहले भी था और जगत के विनाश के बाद भी रहेगा। जगत मिथ्या, असत्य, जड़, एवं दुखात्मक है। ब्रह्म सत्-चित् आनन्द स्वरूप है।

सत् - त्रिकालवादित
अर्थात- वह अपने स्वरूप में ही बना रहता है।
चित् – ज्ञान स्वरूप चैतन्य होने के कारण ज्ञानी है।
आनन्द – वह कामनाओं से रहित आनन्दमय है।

ईश्वर

वेदान्त के अनुसार ब्रह्म को सर्वोपरि माना गया है। यह सत्ता की प्रथम स्थिति है। जिसने स्वयं को व्यावहारिक और परिमार्जित रूप में व्यक्त किया है। जिसका परब्रह्म एवं अपरब्रह्म रूप है। परब्रह्म निर्गुण एवं अपरब्रह्म सगुण रूप है। ब्रह्म का सगुण रूप ईश्वर कहलाता है। जब ब्रह्म आलौकिक शक्ति 'माया' से मिल जाता है तभी से वह ईश्वर उपाधि वाला हो जाता है। ईश्वर दृश्य,अदृश्य जगत के बीच एक रेखा के समान है। यह प्रकाशमय एवं ब्रह्म का ही वास्तविक रूप है। जब ब्रह्म से मिलकर ईश्वर होता है तो यह माया भी कहलाता है। माया के कारण ईश्वर ही समस्त जगत प्रपंच का कारण है। ईश्वर सर्वव्यापी एवं जगत के कण-कण में व्याप्त है।

"ईशावास्यामिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्" ।[4]

यह चेतना शक्ति से जगत का निमित्त कारण एवं माया द्वारा रचित जगत का उपादान कारण भी है। ईश्वर सदा आनन्दमय स्थिति में रहता हुआ कभी सुख दु:ख

[4] ईशवासयोपनिषद मंत्र - ०१

Scanned with CamScanner

इच्छा, द्वेष, से मुक्त है। जगत में प्रत्येक प्राणी आनन्द प्राप्ति के लिए उन्मुख होता है। लेकिन माया के कारण आनन्द को प्राप्त करने में असमर्थ हो जाता है। जो माया रूपी जाल से बच कर ईश्वर के यथार्थ रूप को जान लेता है। वह ईश्वरमय हो जाता है। अतः ईश्वर में लीन हो जाता है। जिसका प्रमाण 'तत्त्वमसि' आदि महावाक्यों से सिद्ध होता है। ईश्वर जीव को कर्मो के अनुसार फल देता है। ईश्वर भोक्ता नहीं अपितु साक्षी है जो जीव को कर्म करने के लिए प्रेरित करता है। प्रत्येक वस्तु अपनी क्रियानुसार कर्म करती है। माया में अभाषित होता हुआ, अज्ञान के समूह को जो प्रकाशित करता है, वह ईश्वर है। प्रत्येक प्राणी के अन्दर ईश्वरतत्त्व विद्यमान है, न इसका कोई रूप है और न चित्रित किया जा सकता है।

"मायाबिम्बो वशीकृत तां स्यात सर्वज्ञ ईश्वर: ।

अविद्यावशगस्त्यन्य: तदवैचित्र्यादनेकधा" । ।[5]

जब प्राणी ब्रह्म के परिमार्थिक रूप को प्राप्त नहीं पाता तो वह ब्रह्म के व्यवहाँरिक रूप की उपसना करता है। ईश्वर ब्रह्म की व्यवहारिक सत्ता है। ब्रह्म प्राप्ति हेतु ईश्वर रूपी मार्ग से होकर गुजरना अनिवार्य है। अतः ईश्वरीय ज्ञान के माध्यम से ही ब्रह्म के ज्ञान की प्राप्ति होती है।

आत्मा

आत्मा दर्शन का महत्वपूर्ण विषय रहा है। जगत में जब-जब ईश्वर के विषय में चर्चा होती है तब–तब आत्मा का विषय आना निश्चित है। चेतना के अस्तित्व को आत्मा का स्वरूप स्वीकार किया है। वह चाहे पश्चमी अथवा नास्तिक वादी दर्शन रहा हो। वेदान्त में आत्मा सदैव महत्वपूर्ण विषय रहा है। क्योंकि आत्मा के द्वारा परमात्मा को जाना जाता है। आत्मा सर्वव्यापी परमात्मा का एक अंश है। यह सूक्ष्म स्थूल एवं कारण शरीर से भिन्न है। मानव शरीर में सक्रियता का माध्यम आत्मा ही है। बिना आत्मा के शरीर निष्क्रिय है। जिस प्रकार शरीर को स्वस्थ रहने

[5] पंचदशी: १-१६

Scanned with CamScanner

के लिए भोजन की आवश्यकता होती है ठीक उसी प्रकार आत्मा को भी भोजन के रूप में परमात्मा उपासना की आवश्यकता होती है। अर्थात परमात्मा ही आत्मा का भोजन है। जब आत्मा को परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है तो आत्मा ईश्वरमय एवं सन्तुष्ट हो जाती है। शरीर के सभी तत्त्वो का आधार आत्मा है जो कि शरीर को सक्रिय रखती है। वेदान्तवादी आत्मा के विषय में किसी भी प्रकार का प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं समझते क्योंकि आत्मा स्वयंसिद्ध है। जो स्वयं प्रमाण का आधार हो वह कैसे सिद्ध हो सकता है। मन, बुद्धि, अहंकार, इत्यादि पर नियंत्रण रखने वाली चेतना शक्ति आत्मा है। जो कि शरीर में अदृश्यमयी सत्ता के रूप में विद्यमान है।

ब्रह्म और आत्मा दोनों की एकता ही अद्वैतवाद का सिद्धान्त है। अनेक स्थान पर आत्मा एवं परमात्मा की सिद्धी को 'अयमात्मा ब्रह्म' इत्यादि महावाक्यों के माध्यम से सिद्ध किया गया है। यदि संसार में चेतना रूपी आत्मा न हो तो संसार निरर्थक है। ब्रह्म से चेतना शक्ति आत्मा उत्पन्न हुई जो संसार रूपी माया से भ्रमित होकर परमात्मा को भूल जाती है। जब आत्मा को परमात्मा रूपी ज्ञान प्राप्त हो जाता है तो आत्मा परमात्मा में लीन हो जाती है।

"इयमात्मा परानन्दः पर प्रेमा स्यदं यतः ।
मा न भूवं हि भूयासमिति प्रेमात्मनीक्षयते" । ।[6]

आत्मा शरीर में प्रवेश करने के बाद ब्रह्म से भिन्न हो जाती है। आत्मा परमात्मा का अंश है। जो अलग होते ही परमात्मा को भूल जाती है। आत्मा इच्छा,द्वेष, प्रयत्न, धर्म,अधर्म,सुख-दुख इत्यादि के माध्यम से शरीर का संचालन करती हुई परमात्मा की प्राप्ति हेतु निरन्तर प्रयत्नशील रहती है।

"कालत्रयेअपि तिष्ठतीति सत्

[6] पंचदशी - ८

Scanned with CamScanner

चित्किम् ज्ञानस्वरूपं सुख- स्वरूपं ।

एवं सच्चिदानंदमस्वरूपं स्वात्म विज्ञानीयात"। ।[7]

कुम्भकार घड़ा बनाने हेतु अपने हाथों से क्रिया करता है यदि आत्मा न हो वह कभी घड़ा नहीं बना सकता क्योंकि कुम्भकार का शरीर आत्मा पर आश्रित है। आत्मा ही शरीर को सक्रियता प्रदान करती है। जो अनन्त,चिर काल तक जीवित रहती है। आत्मा भूत,भविष्य,वर्तमान आदि काल के बन्धन से मुक्त है। अतः आत्मा अमर अजर एवं सच्चिदानन्द स्वरूप है।

माया

वैदिक काल से ही माया अन्य अनेक रूपों में वर्णित होती आ रही है। परन्तु वेदान्त में माया का विशेष रूप से चिंतन किया गया है। माया वेदान्त का महत्वपूर्ण विषय है।

माया की उत्पत्ति ब्रह्म से हुई है। माया जड़ रूप है जो की ब्रह्म से चेतना शक्ति प्राप्त करती है। इसका अनादि एवं नित्य होने से यह तात्पर्य नहीं है कि कभी नष्ट नहीं होती। ब्रह्म प्राप्ति के बाद माया का अन्त हो जाता है। इसका स्वयं कोई अस्तित्व नहीं है। यह ब्रह्म पर आश्रित है। माया अपनी शक्ति से जगत को वास्तविक रूप में प्रस्तुत करती है। यह अपनी शक्ति से जगत के सभी प्राणियों को भ्रमित कर देती है। यह अत्यन्त शक्तिशाली है,इसके जाल से बच पाना असम्भव है। सामान्य पुरुष अधिकतर माया के वश में रहते हैं। मात्र सिद्ध पुरुष ही इसके जाल से बच पाते हैं। यह पुरुषों को सांसरिक भोंगों में फसाँ कर रखती है। जो माया को 'जान' कर सांसरिक भोंगों को त्याग देते हैं। वह ब्रह्म प्राप्ति के मार्ग पर चल पड़ते हैं। माया

[7] तत्वबोध - ३४

Scanned with CamScanner

ब्रह्म का परिवर्तित रूप है, यदि मिट्टी से घड़ा बनाया जाए तो घड़ा मिट्टी से अलग नहीं है,बल्कि वह मिट्टी का परिवर्तित रूप है। इस प्रकार ब्रह्म से माया उत्पन्न हुई है।

"यस्य च यस्मादात्मलाभो भवति,

स तेन अविभक्तो दृष्ट: यथा घटादीनि मृदा" ।[8]

माया रूप एवं आकार रहित है। यह अनादि एवं सर्वभौमिक है। अविद्या का जो समूह है, वह माया है। आवरण और विक्षेप यह दोनों माया की शक्तियाँ हैं। ब्रह्म को ब्रह्म रूप में न समझना यह आवरण शक्ति के कारण होता है। ब्रह्म को अन्य रूप जैसे - सुख दु:ख,जगत इत्यादि समझना यह विक्षेप शक्ति के कारण होता है। माया त्रिगुण रूप है। यह सत्त्व,रज, तम प्रधान है। तीनों गुणों के माध्यम से अनेक वस्तुओं की रचना करती है।

सत्त्व – ज्ञान

रजस् – क्रिया

तमस् – दृव्य

"सद्सद्भ्यास निर्वनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधी भावरूप यत्किंचिदि" ।[9]

माया न सत्य और न असत्य है, इस कारण से यह अनिर्वचनीय कहलाती है। मानव को भ्रमित करने के कारण से यह ज्ञान विरोधी है। मायारूपी जगत मिथ्या है, एक मात्र ब्रह्म ही सत्य है। यह कथन अद्वैत सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है।

---

[8] बृहदारण्यक भाष्य (३ - ५)

[9] वेदान्तसार - ३४

Scanned with CamScanner

सृष्टि प्रक्रिया

जगत कैसे बना ? इसका संचालन कैसे होता है ? और यह नष्ट कैसे होगा ? इस प्रकार अनेक प्रश्नों से सम्बन्धित विधि-विधान की व्याख्या करना सृष्टि प्रक्रिया कहलाती है। धर्म गुरुओं का कहना है कि जगत की उत्पत्ति ईश्वर की एक लीला है। विज्ञान इस मत का खण्डन करते हुये कहता है कि- जगत का अपना एक नियम है। इस नियम को मानव अपनी बुद्धि से सरलता पूर्वक समझ सकता है।

प्रत्येक दर्शन ने जगत प्रक्रिया को अपने-अपने अनुसार प्रस्तुत किया है। वेदान्त ने जगत प्रक्रिया का वैज्ञानिक दृष्टि से सूक्ष्म अनुसरण किया है। जो कि जगत विनाश, उत्पत्ति एवं प्रक्रिया का वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत करता है। तर्क मात्र से जगत प्रक्रिया को समझना असम्भव है। इस लिए वेदान्त जगत के रहस्यों को व्यक्त करने के लिए श्रुति कि सहायता लेता है। श्रुति के अनुसार- जगत उत्पत्ति ईश्वर की इच्छा एवं क्रमबद्ध तरीके से किया हुआ कार्य है। ईश्वर अपनी इच्छा से अनेक हुआ उसके बाद चेतन तत्त्व ईश्वर से जगत उत्पन्न हुआ। ठीक वैसे ही जैसे कि- मानव शरीर से केश एवं लोम निकलते हैं। लोम तथा केश उत्पत्ति का माध्यम शरीर है। इस प्रकार ईश्वर ने माया को माध्यम बना कर जगत की उत्पत्ति की। माया ब्रह्म की स्वभाविक,अत्यन्त शक्तिशाली एवं अनिर्वचनीय शक्ति है।

Scanned with CamScanner

सृष्टि क्रम

वेदान्त ने जगत प्रक्रिया को क्रमानुसार प्रस्तुत किया है। यह क्रम विकास रूप से स्थूल रूप की ओर जाता है।

कारणावस्था ⟹ सूक्ष्मावस्था ⟹ स्थूलावस्था

माया की तमोगुण प्रधान विक्षेप शक्ति के कारण ब्रह्म को ईश्वर की संज्ञा प्राप्त है। ईश्वर ही जगत का कारण है। ईश्वर से सर्वप्रथम आकाश उत्पन्न हुआ। जो सूक्ष्म एवं व्यापक है। इस प्रकार आकाश से अन्य स्थूल तत्त्व उत्पन्न हुये।

आकाश – वायु

वायु – तेज

तेज – जल

जल – पृथ्वी[10]

यह स्थूल तत्त्व पंच महाभूत कहलाते हैं। यह तत्त्व निरन्तर अपना रूप परिवर्तित करते रहते हैं। परन्तु इन पंच महाभूतों की सत्ता सदैव बनी रहती है। सत्ता के कारण ये अपने-अपने गुण उत्पन्न करते हैं। यह गुण तन्मात्राएँ कहलाते हैं। यह भी पाँच होती हैं। पंच महाभूत एवं पंच तन्मात्राएँ दोनों की क्रिया से अन्य सूक्ष्म तत्वों की उत्पत्ति होती है। यह प्रक्रिया पंचीकरण कहलाती है।

पंच महाभूत		**पंच तन्मात्राएँ**
आकाश	-	शब्द
वायु	-	स्पर्श
तेज	-	उष्णता
जल	-	रस
पृथ्वी	-	गन्ध [11]

[10] वेदान्तसार- 57

[11] वेदान्तसार- 58

Scanned with CamScanner

पंचीकरण प्रक्रिया

पंचीकरण प्रक्रिया स्थूल शरीर के लिए महत्वपूर्ण है। यह क्रिया पंच महाभूत एवं पंच तन्मात्राओं से मिलकर होती है। ये दोनों पाँच भागों में विभक्त हो जाते हैं। इन पंचीकृत भूतों से चौदह लोकों का निर्माण होता है। संसार के सभी प्राणियों के शरीर पंचीकरण प्रक्रिया से उत्पन्न होते हैं।

द्विधा विधाय चैकैकं चतुर्था प्रथमं पुनः ।
स्वस्वेतर द्वितीयांशैर्याजनात पञ्चपञ्चते । ।[12]

अपंचीकृतभूत		**पंचीकृतभूत**
पृथ्वी	=	१/२ पृथ्वी + १/८ जल + १/८ तेज + १/८ वायु + १/८ आकाश
जल	=	१/२ जल + १/८ पृथ्वी + १/८ तेज +१/८ वायु + १/८ आकाश
तेज	=	१/२ तेज + १/८ पृथ्वी + १/८ जल + १/८ वायु + १/८ आकाश
वायु	=	१/२ वायु + १/८ पृथ्वी + १/८ तेज + १/८ जल + १/८ आकाश
आकाश	=	१/२ आकाश + १/८ पृथ्वी + १/८ जल + १/८ तेज + १/८ वायु

[13]

इन पंचीकृत भूतों से चौदह लोकों का निर्माण होता है। सभी प्राणियों का स्थूल शरीर भी पंचीकृत प्रक्रिया से उत्पन्न होता है।

---

[12] पंचदशी-२७

[13] वेदान्तसार-98,99

Scanned with CamScanner

ज्ञानेन्द्रियाँ

पंच तन्मात्राओं के सात्त्विक अंशों से पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ उतन्न हुई। यह अतिसूक्ष्म होने के कारण अपने–अपने विषयों में प्रवृत रहती हैं। ज्ञानेन्द्रियाँ बहिर्मुखी होते हुये भी कभी-कभी अन्य विषय को भी ग्रहण कर लेती हैं।

ज्ञानेन्द्रियाँ		विषय
कर्ण	-	शब्द
त्वक	-	स्पर्श
नेत्र	-	रूप
रसना	-	रस
नासिका	-	गन्ध[14]

कर्मेन्द्रियाँ

पंच तन्मात्राओं के राजस् अंशों से कर्मेन्द्रियों की उत्पत्ति हुई है। कार्य करने के लिए क्रिया की आवश्कयता होती है। यह क्रियाओं पर निर्भर होती हैं। क्रिया के माध्यम से ही कर्म (कार्य) करती हैं। यह भौतिक होने के कारण अनित्य हैं।

कर्मेन्द्रियाँ		कर्म
वाक	-	वाणी
हस्त	-	आदान
पाद	-	गमन
पायु	-	मलोत्सर्जन
उपस्थ	-	संतानोत्पत्ति[15]

[14] वेदान्तसार - 63,64

[15] वेदान्तसार - 75,76

Scanned with CamScanner

पंचप्राण

शरीर में व्याप्त पंचप्राण,रजो अंश से उत्पन्न होते हैं। यह पूरे शरीर में अलग-अलग स्थान पर कार्य करते हैं। यह इन्द्रियों के व्यापार से भिन्न होते हुये सम्पूर्ण शरीर में विद्यमान हैं।

पंच प्राण		स्थान एवं गति
प्राण	-	नासिका के अग्रभाग, ऊर्ध्वगति
अपान	-	पायु, नीच्चेगति
व्यान	-	सम्पूर्ण शरीर, चारों दिशा में
उदान	-	कंठ,जीवात्मा को ऊपर करना
समान	-	उदर(गर्दन),पाचन क्रिया में[16]

मन एवं बुद्धि

मन एवं बुद्धि दोनों ही अन्तः करण की बृत्तियाँ हैं जो कि सात्त्विक अंशों से उत्पन्न हुई हैं। बुद्धि का कार्य 'निश्चय' करना तथा मन 'संकल्प-विकल्प' करता है। दोनों में क्रमशः 'चित्त तथा अहंकार' का निर्वाह होता है। दस इन्द्रियाँ,पंचप्राण,मन एवं बुद्धि इन सत्रह तत्त्वों से मिलकर सूक्ष्म शरीर बनता है। इन सभी तत्त्वों का अलग-अलग समूह 'कोश' कहलाता है। सूक्ष्म शरीर में मनोमय,प्राणमय,विज्ञानमय तीन कोश होते हैं। जो कोशत्रय कहलाते हैं।

[16] वेदान्तसार - 77,78,78

Scanned with CamScanner

कोश

यह पाँच प्रकार के होते हैं जो कि आत्मा को अपने अन्दर छुपाये रहते हैं। सभी कोशों के आवरण से शरीर में चेतना रूपी आत्मा अदृश्यमय हो जाती है।

- **अन्नमय कोश**

यह स्थूल शरीर का प्रथम भाग है। सम्पूर्ण शरीर पूरी तरह अन्न पर निर्भर रहता है। अन्न का सम्बन्ध शरीर के स्वास्थ्य से जुड़ा है। इसकी साधना व्यायाम, उचित आहार तथा औषधियों के माध्यम से की जाती है।

- **प्राणमय कोश**

यह पाँच वायु एवं पाँच कर्म इन्द्रियों से मिलकर बनता है। ये हमारे शरीर में वायु के रूप में प्रविष्ट है। यह शरीर में ऊर्जा,शक्ति एवं बल का स्रोत है। इसकी साधना प्राणायाम एवं अभ्यास के द्वारा की जाती है। यह स्थूल शरीर का द्वितीय भाग है।

- **मनोमय कोश**

यह पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ एवं मन से मिलकर बना होता है। ये मौन एवं अन्य मुद्राओं के माध्यम से सम्पन्न किया जाता है। इसमें इच्छा शक्ति की प्रधानता होती है।

- **विज्ञानमय कोश**

यह निर्णात्मक प्रवृत्ति वाला है। जो की अच्छे-बुरे काम का निर्णय लेता है। ये पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ एवं बुद्धि से मिलकर बनता है। यह सात्त्विक शिक्षा को ग्रहण करने का मार्ग है। इसकी साधना 'ध्यान' के माध्यम से की जाती है।[17]

---

[17] वेदान्तसार - 89

Scanned with CamScanner

- **आनन्दमय कोश**

यह सम्पूर्ण जगत एवं यथार्थ का बोधक है। इसका सम्बन्ध अन्तः करण से है। इसके माध्यम से साधक 'आनन्दमय' अवस्था को प्राप्त करता है।

स्थूल शरीर

स्थूल शरीर संसार का महत्वपूर्ण घटक है। इसका निर्माण पंचीकरण प्रक्रिया के माध्यम से होता है। शरीर व्यावहारिक रूप से जन्म-मरण प्रक्रिया का साधन है। स्थूल शरीर आत्मा के माध्यम से सक्रिय रहता है। यह चार प्रकार के होते हैं।

- जरायुज - मनुष्य,पाशु आदि
- अण्डज - सर्प,पक्षी आदि
- स्वेदज - जू,कीट इत्यादि
- उद्भिज - वृक्ष,लता आदि[18]

इन चारों में मनुष्य योनि सर्वश्रेष्ट है। जो चिंतन,मनन,संकल्प,विकल्प,इत्यादि के लिए स्वतंत्र है। मनुष्य अच्छे-बुरे दोनों प्रकार के कर्म करने के लिए स्वतंत्र है।

मोक्ष

इस दृश्यमान जगत में प्रत्येक मानव इच्छा, द्वेष,सुख-दु:ख इत्यादि से मुक्ति पाना चाहता है, दु:ख एवं पीड़ित शरीर के नष्ट होने पर मोक्ष को प्राप्त हो गया परन्तु यह वास्तविक मुक्ति नहीं है। सामान्य जन-मानस मृत्यु को ही मोक्ष समझता है। वेदान्त में मोक्ष मृत्यु से भिन्न आनन्दमय परमशक्ति ब्रह्म अवस्था का नाम है। वेदान्त के अनुसार – मृत्यु अगर मोक्ष प्राप्ति का साधन होती तो प्रत्येक मानव संसार

[18] वेदान्तसार - 105,106,107

Scanned with CamScanner

में पुनर्जन्म के बन्धन में बधा न रहता। वह मृत्यु के माध्यम से मोक्ष प्राप्त कर चुका होता। परन्तु वास्तव में मृत्यु सांसारिक क्रिया-कलापों से मुक्त होने का एक साधन मात्र है। अतः पुनर्जन्म प्रकृति का शाश्वत नियम है,और इस पुनर्जन्म से मुक्ति पाना 'मोक्ष' कहलाता है। मोक्ष शब्द 'मुच' धातु से 'त्यागना' अर्थ में उत्पन्न हुआ है। मोक्ष ही वेदान्त का अंतिम लक्ष्य है। यह अदृश्यमान जगत के सुखो की आनन्दमयी अवस्था है। आत्मा सभी प्रकार के माया जाल एवं अविद्या,आवरण,विक्षेप इत्यादि रूपी अज्ञान को त्याग कर आनन्दमय ब्रह्म में लीन हो जाने पर पुनर्जन्म के बन्धन से मुक्त हो जाती है।

इत्थं तत्त्वविवेकं विधाय विधि बन्मनः समाधाय ।
विगलितसंस्रतिबन्धः प्राप्रोति परंपदंनरो न चिरात । ।[19]

मृत्यु और जन्म के बीच ब्रह्म स्थिति मोक्ष है। इस प्रकार दर्शन मोक्ष प्राप्ति के मार्ग बताता है। मार्ग पर चलकर मानव स्वयं मोक्ष प्राप्त कर सकता है। जो भी मानव मोक्ष पाने की इच्छा करता है वह मुमुक्षु कहलाता है। मोक्ष प्राप्ति की दो अवस्थाएँ होती है, मोक्ष केवल पुरुष योनि के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। अन्य योनि से नहीं।

१.जीवनमुक्ति :- उस ब्रह्म ज्ञान के द्वारा उसमें स्थित अज्ञान को दूर करके, अपने ही स्वरूप अखण्ड ब्रह्म का साक्षात्कार होने पर, अज्ञान के कारण और अज्ञान की दशा में किए गये एकत्रित कर्म,संदेह,विपर्यय,आदि को समाप्त करके तथा सभी बंधनों से रहित होकर ब्रह्मनिष्ठ रहने वाला पुरुष जीवन मुक्त कहलाता है। [20]

[19] पंचदशी- ६५

[20] वेदान्तसार - 215,216

Scanned with CamScanner

२. विदेहमुक्ति :- शरीर क्षय होने के बाद पूर्ण विदेहमुक्ति प्राप्त करना।

अब प्रश्न यह है-कि पुरुष योनि कैसे प्राप्त होती है? पुरुष अपने कर्मों के अनुसार अनेक योनियों से निकलता रहता है। पुनर्जन्म में अच्छे कर्मों के कारण उसको पुरुष योनि या मानव शरीर प्राप्त होता है।
जीवन चक्र में लिप्त न होकर ब्रह्म ज्ञान प्राप्त कर लेता है। वह समझ जाता है कि शुद्ध आनन्द स्वरूप ब्रह्म एक ही है। वह ही जगत के बाहर-भीतर,ऊपर-नीचे सर्वत्र व्याप्त है। इस प्रकार मृत्यु के माध्यम से शरीर क्षय होने के बाद मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

सदुरूपदेशेन च सर्वेष्वपि भूतेषु येषाम् ।
ब्रह्मबुद्धिरुत्पन्ना ते जीवन मुक्ता इत्यर्थः। ।[21]

अतः मोक्ष 'ज्ञान' के माध्यम से भी प्राप्त किया जा सकता है। प्रत्येक मानव मोक्ष का अधिकारी हो सकता है परन्तु उसके लिए वेदान्त द्वारा बताए गये मार्ग का अनुसरण करना अतिआवश्यक है। गुरु श्रुति के माध्यम से मुमुक्षु को ब्रह्म के स्वरूप का ज्ञान कराने के पश्चात उपदेशों एवं तर्कों के माध्यम से ब्रह्म का साक्षात दर्शन भी करवा देता है।

[21] तत्त्वबोधटीका- ४५

Scanned with CamScanner

कुर्आन

संसार में प्रत्येक वस्तु नियमों से बधीं रहती है। यदि नियम के विरुद्ध जाती है तो वह लुप्त हो जाती है। मानव प्राचीन समय से ही चिंतन करता आ रहा है। यह चिंतन की क्रिया बुद्धि में सदैव प्रश्नों को उत्पन्न करती है। विद्वानों के अनुसार मानव जब तक जीवित रहता है तब तक उसकी बुद्धि प्रश्न करती है। बुद्धि का बार-बार प्रश्न करना विद्वानों के लिए एक बड़ी समस्या है। इस कारण से वह सदैव विचलित रहता है। पूरे संसार में मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो सोचने एवं समझने की शक्ति रखता है। अन्य प्राणी (पशु-पक्षी) अपने नियमित धर्म का निरन्तर पालन करते हैं। धर्म का अर्थ 'धारण' करना है। क्या धारण करना? सत्य परक व्यवहारिक नियमों को धारण करना धर्म कहलाता है। धर्म का व्याख्यान करने वाला ग्रन्थ, धर्म ग्रन्थ कहलाता है। क़ुर्आन सत्य मार्ग को बताने वाला इस्लामिक धर्म ग्रन्थ है। जो सभी प्राणियों को सत्य मार्ग पर चलने के लिए प्रेरणा देता है। प्रत्येक धर्म के अनुसार संसार स्वयं उत्पन्न नहीं हुआ अर्थात कोई भी वस्तु स्वयं उत्पन्न नहीं होती, उसको बनाने वाला एवं संचालन करने वाला कोई न कोई कर्ता अवश्य होता है। इस संचालन अर्थात चलाने वाली शक्ति को क़ुर्आन ने 'अल्लाह' नाम की उपाधि प्रदान की है। अरबी भाषा में धर्म को 'दीन' कहते हैं। क़ुर्आन में धर्म का नाम इस्लाम बताया गया है।

إِنَّ ٱلدِّينَ عِندَ ٱللَّهِ ٱلْإِسْلَـٰمُ[22]

(इनद्दीना इंदल्लाहिल इस्लाम)

हिन्दी अनुवाद- दीन तो अल्लाह के नज़दीक इस्लाम ही है।

इस्लाम धर्म के अनुसार संसार की प्रत्येक वस्तु 'अल्लाह' के आदेश(हुक्म) से चलती है। यह विश्वास इस्लाम धर्म में प्रत्येक अनुयायी के लिए अनिवार्य है। उपाधि से युक्त 'अल्लाह' अपने बनाए गए नियमों अर्थात धर्म के द्वारा समस्त प्राणियों को सत्य

[22] पारा न.03 सूरह :आले-इमरान
आयत न.19

Scanned with CamScanner

मार्ग पर चलने हेतु इस्लाम धर्म को अपने दूत के माध्यम से धरती पर भेजता है। इस प्रकार इस्लाम एक धर्म है। इसका पवित्र ग्रन्थ कुर्आन है,जो कि नियम एवं कानूनों को बताता है।

अल्लाह

कुर्आन में संसार को बनाने एवं संचालित करने वाली शक्ति ने स्वयं को 'अल्लाह' बताया है। अल्लाह कुर्आन में अपना परिचय अनेक स्थानों पर बताते हुये प्रश्न करता है और साथ में उत्तर भी देता है।

إِنَّ رَبَّكُمُ ٱللَّهُ[23]

(इन्ना रब्बाकुमुल्लाह)

हिन्दी अनुवाद- कुछ शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार अल्लाह ही है।

अल्लाह कहता है कि, है कोई मेरे सिवाए बनाने वाला? फिर मुझे छोड़ कर दूसरों से क्यों मदद् माँगते हो। ज़मीन को किसने बिछाया? ये खूबसूरत बर्फीले पहाड़ किसने खड़े किए? तुम इन्सानो में बहुत ऐसे हैं जो मुझे जानते ही नहीं। माद्दा नहीं था अर्थात ऐसा नहीं था कि लोहा पड़ा था तो लोहे से हथियार बनाया या लकड़ी पड़ी थी तो लकड़ी से कुर्सी एवं मेंज़ बना दिया। अल्लाह ने हर पहली चीज़ को उसके बगैर बनाया।
पानी को पानी के बगैर बनाया।
पत्थर को पत्थर के बगैर बनाया।
हवा को हवा के बगैर बनाया।
आसमान को आसमान के बगैर बनाया।
मिट्टी को मिट्टी के बगैर बनाया इत्यादि।

---

[23] पारा न- 08, सूरह अल-अराफ़
आयत न - 54

Scanned with CamScanner

इस तरह हर पहली चीज़ को किसी दूसरी चीज़ के बगैर बनाया है। अल्लाह मुबदी है अर्थात वह अकेला ही है जो बगैर किसी आश्रय से कुछ भी बना सकता है। इंसान ख़ालिक़ अर्थात एक आश्रित हैं। जो लकड़ी से अनेक वस्तुएँ बना लेता है। अल्लाह ने ही हर पहली चीज़ को बनाकर उसके बाद एक दूसरे पर आश्रित किया। अल्लाह ने ज़मीन और आसमान को छः दिन में बनाया। जो दिन-रात का निज़ाम(संचालन) चलाता है। सूरज और चाँद को निकालता है। नींद के लिए रात को कपड़ा बना कर उड़ाया ताकि आराम कर सके। दिन को काम करने के लिए बनाया ताकि जरूरतों को पूरा किया जा सके। सब अल्लाह के ही हुक्म के मुताबिक चलते हैं। रहता कहा है? अल्लाह अर्श पर रहता है। जो कि सात आसमानों के बाद का स्थान है।

ٱلَّذِى خَلَقَ ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ فِى سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ ٱسْتَوَىٰ عَلَى ٱلْعَرْشِ يُغْشِى ٱلَّيْلَ ٱلنَّهَارَ يَطْلُبُهُۥ حَثِيثًا وَٱلشَّمْسَ وَٱلْقَمَرَ وَٱلنُّجُومَ مُسَخَّرَٰتٍۭ بِأَمْرِهِۦٓ ۗ أَلَا لَهُ ٱلْخَلْقُ وَٱلْأَمْرُ ۗ تَبَارَكَ ٱللَّهُ رَبُّ ٱلْعَـٰلَمِينَ.[24]

(अल लज़ी ख़लकस समावाते वल अरदे फी सित्तते अय्यीयाम सुम्मसतवा अलल अर्शि युग्शिल्ल लयिलन नहारा यतलुबु हसीसा वशसमसा वल-क़मर वन्नुजूमा मुस्ख्खाराते बे अम्री अला लहुल ख़ल्कु वल-अमरु तबाराकल्लाहो रब्बुल आलमीन)

हिन्दी अनुवाद – "जिसने आसमान और ज़मीन को छः दिन में पैदा किया फिर अर्श पर जलवा अफ़रोज(निवास स्थान) हुआ। वही रात को दिन का लिबाश पहनाता है कि वो उसके पीछे दोड़ता चला आता है। और उसी ने सूरज, चाँद सितारों को पैदा किया सब उसके हुक्म के मुताबिक काम में लगे हुये हैं देखो सब मख़लूक़ भी उसी की है। और हुक्म भी उसी का है अल्लाह रब्बुल आलमीन बड़ी बरकत वाला है"।
अल्लाह अकेला है वही पहला है वही आख़िर है उसके बाद कुछ भी नहीं वही ज़िंदा है और हर ज़िंदा के बाद ज़िंदा है।मौत से पाक है उसकी खासियत यह है कि दूर तक देखो कहीं नज़र न आए और पास इतना जैसे इंसान की साँसें। उससे कुछ छुपा नहीं है कोई भी चीज़ उसको नुकसान नहीं पहुँचा सकती है। उसके जैसा कोई और नहीं।

---

[24] पारा न-08, सूरह अल-अराफ़
आयत न - 54

Scanned with CamScanner

अल्लाह की बादशाही चारो तरफ है। वह रहीम और रहम करने वाला रहमान है। न कोई उसका बेटा है न बीवी है न कोई दोस्त है न कोई दुश्मन हैं। आसमानों और ज़मीन में उसी की बादशाही है।

قُلْ هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ[25]

(कुल हुवल्लाह हु अहद)

हिन्दी अनुवाद- अल्लाह एक है

मारने वाले का मालिक 'मरने वाले का मालिक' जिन्दा करने वाले का मालिक और एक दिन सारी दुनिया को खत्म करेगा। कैसे खत्म करेगा? एक तेज़ आवाज़ आएगी जिससे पहाड़ हवा में उड़ने लगेगें ज़मीन फटने लगेगी समन्दर में आग लग जाएगी। उस दिन मौत को भी मौत देगा(मौत देने वाला फरिस्ता) वो अपने हुक्म से अर्श के नीचे सब को इकठ्ठा करेगा और बोलेगा मैं ही बादशाह हूँ कहाँ गए वो जो लोगों पर जुल्म(अत्याचार)करते थे। अल्लाह ने जैसे मौत दी वैसे ही दुबारा ज़िंदा करेगा। कहेगा कि आदम की औलाद मैंने तुझे आँख दी तूने वो नहीं देखा जो मैंने कहा। समान्यतः आँख के देखने की क्षमता तीस करोड़ केमरों के बराबर हैं। मैंने तुम्हें हाथ दिये तुमने वो नहीं किया जो मैंने तुम्हें करने के कहा फिर भी मैं तुम्हारे करीब हूँ। तुम्हें दुनियाँ के किसी बादशाह से मिलना हो तो बहुत वक्त लगता है। उसके बाद भी मिलना होगा की नहीं यह भी निश्चित नहीं होता और तुम अल्लाह से जब चाहों जहाँ चाहों मिल सकते हो। वह कहता है ए मेंरे बंदे में तुझ से प्यार करता हूँ तो तू भी तो मुझ से प्यार कर। तू मुझे भूल जाता है फिर भी में तुझे याद रखता हूँ। यदि तू मेंरी तरफ चल कर आता है तो में तेरी तरफ दौड़ कर आता हूँ। अल्लाह अपने दूत दाऊद से कहता है कि जाओ
आज्ञा न मानने वालों को खुशखबरी सुना दो।
और आज्ञा मानने वालों को चेतावनी दे दो।

---

[25] पारा न.30,सूरह- इखलाक
आयत न. 01

Scanned with CamScanner

दाऊद ने अल्लाह से कहा, आज्ञा न मानने वालों को क्या खुशखबरी सुना दूँ? अल्लाह ने कहा उनसे कह दो अल्लाह गलतियों को माफ करने वाला है। ये उनके लिए खुशखरी है ताकि वह गलत कामों से तोबा(माफी) माँग लें। और जो अच्छे काम करते हैं वो अपने अच्छे कामों का तकब्बुर(घमण्ड) न करें। यदि घमण्ड करेंगे तो उनके सारे अच्छे काम खत्म कर दिये जाएगें। और अगर घमण्ड नहीं करते तो वह मेंरे दोस्त हैं। इस्लाम धर्म में दाख़िल(प्रवेश) होने कि पहली शर्त यही है कि तुम हज़ारों या अलग-अलग जगहों से न माँग कर सिर्फ एक अल्लाह से ही मांगो। वैसे समाज में भी भीख माँग ने वाले भिखारी की कोई इज्ज़त नहीं होती। इसलिए अल्लाह सिर्फ अपने आप से माँग ने के लिए कहता है। यह नियम इस्लाम में सभी पर लागू होता है।

لَا إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ[26]

(ला इलाहा इल्लल्लाह)

हिन्दी अनुवाद- अल्लाह के सिवा और कोई इबादत(प्रार्थना) के लायक(योग्य) नहीं।

अल्लाह इंसानों से कहता है कि ए-इंसान तुम मुझे छोड़कर जिसकी इबाबत(प्रार्थना) करते हो। उनसे कहो एक मक्खी बना कर दिखाये। अगर बना दें तो उनकी इबाबत (प्रार्थना)करो। और अगर नहीं बना पाये तो मेंरे पास आओ मेंरी इबादत करो। अल्लाह, एक लकड़ी से फल को पैदा करता है। उसने आसमान को बिना खम्भे लगाए छत बनाया। अल्लाह के कामों की बहुत निशानियाँ हैं। इंसान निशानियों पर गौर नहीं करता। अल्लाह कहता है कि कोई भी इंसान किसी इंसान से जबर्दस्ती मेंरी इबादत नहीं करवा सकता जब तक मैं खुद न चाहूँ। यानि किसी को इस्लाम धर्म में लाया नहीं जा सकता। दार्शनिक विचार एवं विज्ञान अल्लाह के कामों और तरीके, को नहीं बता सकते। अल्लाह ने कुर्आन में खुद अपने बारे में बहुत अच्छे एवं विस्तार से बताया है। कुर्आन की आयतों के जरिये अल्लाह को पहचाना जाता है।

---

[26] पारा न.23,सूरह:अस-सफ़्फ़ात

आयत न. 35

Scanned with CamScanner

एक कलाकार पत्थरों से मूर्तियाँ बनाता था। एक दिन उसके बेटे ने उससे सवाल किया कि पिता जी आप पत्थरों से ये हाथी,घोड़ा,और अनेक मूर्तियाँ कैसे बना लेते हैं। पिता ने जबाब दिया कि मेंरे बेटे हाथी घोड़े इन पत्थरों में पहले से ही थे।मैंने तो सिर्फ पत्थरों पर पड़े हुये पर्दे हटाये है। इसी तरह अल्लाह को पहचानने की ताकत हर इंसान के अन्दर होती है लेकिन इंसान दुनियाँ के पर्दों की वजह से अल्लाह को पहचान नहीं पाता और दुनियाँ कमाने में लगा रहता है। दुनियाँ में हर चीज़ के बनने की कोई न कोई वजह है। बिना जरूरत कुछ नहीं बना। जैसे- घड़ा बनाने के लिए मिट्टी की जरूरत होती है। अल्लाह को किसने बनाया या वह खुद बना? इसका जबाब कुर्आन बहुत अच्छे तरीके से देता है।

قُلْ هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ ١ ٱللَّهُ ٱلصَّمَدُ ٢
لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ٣ وَلَمْ يَكُن لَّهُۥ كُفُوًا أَحَدٌۢ ٤[27]
(कुल हुवल्लाहु अहद अल्लाह हुस्समद लम यलिद वलमयूलद वलम यकुल लहू कुफ़वन अहद)

हिन्दी अनुवाद- "कहो कि वो माबूदे बरहक जिसकी मैं इबादत करता हूँ अल्लाह है। वह एक है। अल्लाह बेनियाज़ वो न किसी का बाप है और न किसी का बेटा। और कोई उसके बराबर नहीं"।

अल्लाह एक है,उसका न कोई बाप है,न उसका कोई बेटा है,अल्लाह ही सारी क़ायनात(दुनियाँ) का बादशाह है। अल्लाह को किसी ने नहीं बनाया वो खुद हर चीज़ पर कादिर है। अल्लाह को किसने बनाया? अल्लाह के बारे में इस तरह के सवाल करना गलत है। क्योंकि अल्लाह की परिभाषा ही यही है, कि जिसको किसी ने नहीं बनाया हो। वह अल्लाह है। यदि कुम्भकार घड़ा या अन्य वस्तुए बनाता है और कुभ्कार को पैदा करने वाला कोई दूसरा है। तो कुम्भकार अल्लाह (ईश्वर) कैसे हो गया? अल्लाह वही है जिसको किसी ने नहीं बनाया हो। इस तरह कुर्आन में अल्लाह के बारे में बताया गया है। यहाँ एक झलक बताने की कोशिश की गयी है।

[27] पारा 30, सूरह - इख़लास

Scanned with CamScanner

अल्लाह को अच्छी तरह जानने के लिए कुर्आन को सूक्ष्म दृष्टि से पड़ना जरूरी है। इंसान कोई जानवर नहीं है जिसको ताकत से चलाया जा सके। इंसान सोच-विचार का समूह है। वह जैसा सोचता है वैसा ही करता है और चलता भी है। उसकी सोच जिधर चलेगी वो उधर ही चलेगा इस लिए अल्लाह अपने नबी(दूत) को सोच लेकर भेजता है।

रूह

विद्वानों के मतों में विवाद होना स्वाभाविक है। जो लगातार चलता रहता है। सारी दुनिया के विद्वान एक विशेष मत को लेकर एक स्थान पर आकर सहमत हो जाते हैं। जिसका चिन्तन भारतीय दर्शन में सूक्ष्म दृष्टि से किया गया है। जिसको की रूह(आत्मा) नाम से सम्बोधित किया जाता है। रूह के भाषा की दृष्टि से अनेक नाम हैं।

अरबी - रूह

अँग्रेजी - सौल(Soul)

हिन्दी - आत्मा

दुनिया में मौजूद सभी जिन्दा इंसान रूह कि वजह से ही चल-फिर सकते हैं। बदन (शरीर) से रूह निकल जाने के बाद बदन काम करना बन्द कर देता है तो वह इंसान मुर्दा कहलाता है। रूह जानदार होने की निशानी है। जो जिन्दा है उसमें रूह है। वही खाना-पीना एवं काम काज करता है। सभी मख़लूक़ (प्राणियों) की रूहों में इंसानी रूह सबसे अफ़जल(सर्वोपरि) है। रूह पूरे शरीर को सक्रिय रखती है। रूह एवं शरीर से मिलकर ही इंसान पूरा होता है। दुनियाँ बनने से पहले अल्लाह ने सारी रूहों को पैदा करके (जो भी कयामत(प्रलय) तक आने वाली है) सब को आलमे-ए-अरवाह(रूहों की दुनियाँ) में इकठ्ठा किया। उस जगह आदम से लेकर दुनियाँ में पैदा होने वाले आख़िरी इंसान की रूह को भी जमा किया गया था। अल्लाह ने उनसे सवाल किया तुम्हें किसने पैदा किया? सब ने कहा ए-अल्लाह तूने हम सब को पैदा किया। फिर अल्लाह ने सवाल किया मुझे भूल तो नहीं जाओगे? सब ने अल्लाह से

Scanned with CamScanner

वादा किया नहीं भूलेंगे। उसके बाद दुनियाँ को बनाया। विज्ञान का मानना है कि दुनियाँ बिग-बैंग धमाके से बनी जब कि धमाके से तो तबाही और बरबादी आती है। विज्ञान, भौतिक तत्त्वों के माध्यम से दुनियाँ को सिद्ध करती है। वह कभी आलम ए-अरवाह तक नहीं पहुँच सकती है। अर्थात आध्यात्मिक जीवन से विज्ञान का कोई सम्बन्ध नहीं है। फिर अल्लाह ने रूहों को आजमाइश के लिए जिस्म (शरीर) में डाला। इस तरह दुनियाँ में इंसान का पहली बार जन्म हुआ। अल्लाह ने रूह को मिट्टी के शरीर में डाला ताकि लोगो को आज़मा सके कि जो वादा रूहों ने आलम ए अरवाह में किया था वही करेंगे की नहीं। इंसान दुनियाँ में पैदा होने के बाद खाता-पीता है घूमता है और फिर एक दिन मर जाता है। मरने के बाद शरीर मिट्टी में मिल जाता है। चूँकि शरीर मिट्टी से बना है। और रूह ऊपर अल्लाह के पास चली जाती है। एक ये मौत हो गयी जो दुनियाँ में आने के बाद होगी। इस मौत के बाद अल्लाह फिर दोबारा जिन्दा करेगा। इस बार हिसाब लेने के लिए ज़िंदा किया जाएगा। जो काम दुनियाँ में किए उन सब का हिसाब कर्मो के आधार पर किया जाएगा। अच्छे कर्म करने वाली रूहें कामयाब होंगी और बुरे कर्म करने वाली रूहों को सजा दी जाएगी। इस तरह रूह को दो बार पैदा-मारा जाएगा। रूह अल्लाह का अम्र(आदेश)है।

تَعْرُجُ ٱلْمَلَـٰٓئِكَةُ وَٱلرُّوحُ إِلَيْهِ فِى يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُۥ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ[28]

(तअरुज़ू अल मलाएकतु वर रूहों इलई हे फि योमिन काना मिक़दारुहु ख़मसीना अल्फा सनातिन)

हिन्दी अनुवाद – जिसकी तरफ रूह और दूसरे फ़रिश्ते चड़ते है उस रोज़ नाज़िल होगा जिसका तूल(सीमा)पचास हज़ार बरस होगा)

रूह को अल्लाह ने दुनियाँ में आज़ाद भेजा ताकि वो सही और गलत में फर्क मालूम कर सके। रूह की ज़रूरत(खाना) अल्लाह की इबादत करना है। जब इंसान इबादत करता है तो रूह को सुकून पहुँचता है। इबादत अल्लाह को एक मानकर करें। ठीक वैसे ही जैसे कि शरीर को भोजन से सुकून और शक्ति मिलती है। इसी तरह रूह का भोजन आसमानों में है। रूह के साथ मिलकर इंसान अच्छे काम करे ताकि उसकी

[28] पारा न.29,सूरह अल- माहरिज़,आयत न.04

Scanned with CamScanner

रूह को सजा न मिले। अच्छी बाते और कर्मों को बताने के लिए अल्लाह ने अपने नबीयों को भेजा ताकि रूहें सजा से बच सके। रूह की ताकत का कोई अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता है। जहाँ तक इंसान की सोच जा सकती है वहाँ तक इंसान की रूह भी जा सकती है। इंसान इन दोनों को काबू में नहीं कर सकता है। रूह अल्लाह की तरफ से इंसानी जिस्म को दिया गया एक तोहफा है। अल्लाह ये देखना चाहता है कि जिस काम को करने से रूह को मना किया गया है वह करती है या नहीं। बहुत सारा इल्म(ज्ञान) ऐसा है कि जिसको इंसानी दिमाग नहीं समझ सकता। जिसमें से रूह भी एक है। पुराने जमाने से ही लोगों को रूह के बारे में जानने की इच्छा रही है। अल्लाह ने कहा ये लोग आप (नबी मुहम्मद) से रूह के बारे पूँछते है। इनसे कह दों, रूह क्या है? ये तो हम तुम्हें नहीं बतायेंगे। क्योंकि तुम्हारे दिमाग में रूह को समझने की सलाहियत(क्षमता) ही नहीं है। अगर फिर भी पूँछे तो कह दो। रूह अल्लाह की तरफ से भेजा गया एक हुक्म(आदेश) है। तुम रूह के बारे में नहीं समझ सकते।

وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلرُّوحِ ۖ قُلِ ٱلرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّى وَمَآ أُوتِيتُم مِّنَ ٱلْعِلْمِ إِلَّا قَلِيل[29]

(वयस अलू नका अनिररुहु कुलिररूहु मिन अमरी रब्बी वमा ऊतीतुम मिनलइल्मी इल्ला क़लीला)

हिन्दी अनुवाद-और तुमसे रूह के बारे में सवाल करते है कि वो मेरे परवरदिगार(अल्लाह)का हुक्म है और तुम लोगों को बहुत कम इल्म दिया गया है।

अल्लाह ने कहा तुमने सवाल किया हमने जवाब दिया। जबाब भी ऐसा दिया जो तुम्हारी समझ में नहीं आया। कुछ लोगों को अल्लाह का जवाब गलत लगा अल्लाह का जवाब गलत नहीं है। बल्कि तुम्हारा दिमाग रूह को समझने कि ताकत नहीं रखता। अल्लाह ने तुम्हें जो इल्म दिया है। वो बहुत थोड़ा है। दुनियाँ और आख़िरत का असल इल्म अल्लाह ने इंसान को दिया ही नहीं। इस में रूह भी शामिल है। उदाहरण के लिए पुराने जमाने में पहिये का इल्म एक बहुत बड़ा अविष्कार था। जिसकी मदद् से समान इधर- उधर किया जाता था। अब अगर पहिये के बारे में

[29] पारा न.17,सूरह:अल-इसरा,आयत न.85

Scanned with CamScanner

सोचा जाए कि उस वक्त का इंसान पहिये की खोज से खुश था और अब तो चाँद पर पहुँच कर भी खुश नहीं है। वक्त के हिसाब से इल्म भी बड़ता जाता है। लेकिन ये नहीं कहा जा सकता कि इल्म पूरा हासिल हुआ या नहीं । इस लिए अल्लाह ने कहा कि इंसान को बहुत थोड़ा इल्म देकर भेजा गया है।

क़ायनात (संसार)

विज्ञान दुनियाँ का वजूद एक धमाके से मानता है। जिसे बिग-बैंग का सिद्धांत कहते हैं। इसके अनुसार करोड़ों साल पहले एक बहुत बड़ा धमाका हुआ। इस धमाके से दुनियाँ बनीं। अब यहाँ अनेक प्रश्न निकल कर सामने आते हैं। धमाके से चीजें खूबसूरत अंदाज में अपने-आप नहीं लगती? धमाका तो सब कुछ बर्बाद कर देता है। अनेक विद्वानों ने इस सिद्धांत को गलत साबित किया है। उनका मानना है कि ये धमाका खुद से नहीं हुआ किसी ने किया है। जो कि हर चीज का तरीका बनकर सामने आया। इस बात पर बहुत कम लोग सहमत है। इस्लाम के अनुसार दुनियाँ धीरे-धीरे बनी है। एक साथ वजूद में नहीं आयी। अल्लाह ने पहले धमाके से दो चीजें वजूद में लायी। पहली कशिश(gravity) और दूसरी रफ़्तार (speed)। दोनों को एक बराबर किया। इनमें कोई भी ज़्यादा या कम नहीं है। यदि रफ़्तार ज़्यादा हो जाती तो क़ायनात बिखर जाती और अगर कशिश ज़्यादा हो जाती तो क़ायनात सिकुड़ कर ज़ीरो हो जाती। अब प्रश्न यह उठता है कि इतना सन्तुलन खुद से तो नहीं हो सकता? कौंन है जिसने किया? विज्ञान इस प्रश्न पर आकर रुक जाता है। विज्ञान अल्लाह को नहीं मानता। कुर्आन कहता है कि एक लफ़्जे “कुन” से यह क़ायनात वजूद में आयी।

فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُۥ كُن فَيَكُونُ[30]

(फाइन्नमा यकुलु लहू कुन फ़यकुन)

[30] पारा न.03,सूरह:अल-इमरान,आयत न. 47

Scanned with CamScanner

हिन्दी अनुवाद- जब वो कोई काम करना चाहता है तो इरशाद फरमाता है हो जा तो वो हो जाता है।

अल्लाह ने लफ़्ज़े "कुन" से छोटे-छोटे नूर (कण) बनाए। इस नूर से एक बड़ी रोशनी वजूद में आयी। इस नूर से दो चीजें पैदा हुई। पहली 'अरवाह ए इंसानी(आत्मायें)' और दूसरी हैवाने(जानवर,पशु-पक्षी आदि) ए अरवाह और फिर बाद में सभी इंसानी अरवाहों से गवाही ली।

أَنفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْۖ قَالُواْ بَلَىٰۛ شَهِدْنَآۛ[31]

(अनफूसेहिम अलसतू बे रब्बीकुम क़ालू बला शहिदना)

हिन्दी अनुवाद- यानि उनसे पूछाँ गया क्या मैं तुम्हारा परवरदिगार नहीं हूँ? वो कहने लगे क्यों नहीं हम गवाह है कि तू हमारा परवरदिगार है।

दूसरी तरफ अम्रे "कुन" से बड़े-बड़े धमाके हुये जिससे सूरज चाँद और बाकी दूसरी सभी चीज वजूद में आयी। दुनियाँ बनाने से पहले अल्लाह ने रूहों को पैदा किया। बाद में दुनियाँ को वजूद में लाया गया। दुनियाँ बनने के बाद लाखों साल बारिश होती रही। उस बारिश की वजह से समन्दर वजूद में आए। जिस जगह मिट्टी ज़्यादा और पानी कम था वहाँ कीचड़ बन गयी, उस कीचड़ से जानवर,पक्षी एवं अन्य सभी वजूद में आए। इसमें ज़मीन और पानी वाले दोनों ही शामिल है। दुनियाँ में सब कुछ बनाने के बाद फिर इंसान को पैदा किया। यहाँ से ज़िंदगी का आगाज़ हुआ। इस तरह तीन स्तर से दुनियाँ बनी। इस पूरी दुनियाँ को अल्लाह ने छः दिन में बना कर तैयार कर दिया था।

وَهُوَ ٱلَّذِى خَلَقَ ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ فِى سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُۥ[32]

(व हुवल्लज़ी खलक़स्समावाते वल अर्दा फी सित्ताते अय्याम वकाना अरशुहु)

---

[31] पारा न.08,सूरह अल-अराफ़,आयत-172

[32] पारा न.12 सूरह- हूद,आयत न.07

Scanned with CamScanner

हिन्दी अनुवाद- और अल्लाह ही तो है जिसने आसमान और ज़मीन को छः दिन में बनाया और उस वक़्त उसका अर्श पानी पर था।

पहला- नूर, मलाइका, अरवाह (ये आलमें ए अम्र)

दूसरा- ज़मीन,चाँद,सूरज,समन्दर,पेड़,पशु-पक्षी व अन्य सभी

तीसरा- इंसान(नर एवं मादा)

पहला स्तर आध्यात्मिक जीवन से सम्बन्धित है। दूसरा एवं तीसरा भौतिक तथा व्यावहारिक जीवन से सम्बन्धित है। प्रथम स्तर में समय सीमा नहीं होती है। रूह को ज़मीन से आसमान पर जाने में समय नहीं लगता। इस तरह क़ायनात वजूद में आयी।

इंसान

इंसान सोचने और समझने की वजह से सर्वोपरि है। इंसान दो चीजों से मिलकर बना है। प्राकृतिक तत्त्व(हवा,पानी,आग,मिट्टी आदि) एवं आध्यात्मिक तत्त्व। जड़ तत्त्व मिट्टी से शरीक को बना और रूह से चेतना। चेतना को हर वस्तु या अन्य सभी में उसके हिसाब से पहले ही डाल दिया गया था। जैसे-पेड़ का एक पत्ता जब तक पेड़ से जुड़ा रहता है तब तक उसमें भी जान अर्थात चेतना रहती है।

هُوَ ٱلَّذِى خَلَقَكُم مِّن طِينٍ[33]

(हु वल्लजी खलक़ाकुम मिन तीन)

हिन्दी अनुवाद- वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया।)

[33] पारा न.07 सूरह अल- अनआमआयत न.02

Scanned with CamScanner

पुरुष का वीर्य भी चेतना के रूप में होता है। जो स्त्री के गर्भ में जीवित रहता है। कुर्आन के अनुसार 120 दिन गर्भ में रहने के बाद उसमें रूह डाली जाती है। इस तरह अल्लाह ने इंसानी शरीर को तीन स्तर में पूरा किया।

पहला- गर्भ
दूसरा- नुत्फ़ा(वीर्य)
तीसरा- रूह

मख़लूक़ एक बहुवचन शब्द है। इसके अन्दर हर तरह के जानवर पशु-पक्षी और इंसान सभी आते हैं। इंसान सोचने समझने की वजह से, सही गलत या दोनों एक साथ करने की वजह से, सभी मख़लूक़ में अफ़जल(सर्वोपरि) है। इस लिए इसको अधिकार है कि बाकी सारी मख़लूक़ पर राज करे या उसको इस्तेमाल करे। मख़लूक़ का शरीर मिट्टी से बना है इसी कारण उसका खाना भी मिट्टी के जरिये दिया है। और अन्त में शरीर भी मिट्टी में ही मिल जाता है।

शरीर + रूह = इंसान

Scanned with CamScanner

प्रथम अध्याय

तत्त्व-मीमांसा का समान्य परिचय

संसार के स्वरूप को समझने के लिए दार्शनिक दृष्टि का होना अनिवार्य है। क्योंकि दार्शनिक दृष्टि से कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं है। सम्पूर्ण संसार ही दर्शन का विषय है। संसार का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना किसी एक विशेष व्यक्ति के लिए सम्भव नहीं है। इस लिए प्रत्येक विषय को भिन्न- भिन्न वर्गो में विभाजित किया गया है। और उनका अध्ययन भी अलग-अलग शाखाओं के माध्यम से किया जाता है। जैसे – जड़ तत्त्वों का भौतिक विज्ञान, जीव जन्तुओं का जीव विज्ञान एवं रसायनों का रसायन विज्ञान आदि में अध्ययन किया जाता हैं। जड़ द्रव्यों के आधार पर भौतिक विज्ञान संसार को सत्य मानता है। भौतिक जगत से परे तत्त्वों का अध्ययन दर्शन शास्त्रों में किया जाता है। विज्ञान दृश्यमान जगत का अनुभव करके परिणाम तक पहुँचता है परन्तु अदृश्यमान जगत के विषय में मौन रहता है। अदृश्यमान जगत में आत्मा एवं ईश्वर का वास रहता है। ईश्वर एवं आत्मा दोनों ही दर्शन का विषय है। मानव संसार से विचलित होकर सत्य ज्ञान को जानने के लिए उत्सुक होता तो अपनी बुद्धि से अनेक प्रश्न करता है।

यथार्थ ज्ञान को जानने का साधन है ?

दृश्यमान जगत ही सत्य है ?

इसके बाद भी कोई जीवन है ?[34]

मानव अपने जीवन को समझने के लिए दर्शन की सहायता लेता है। समान्यतः प्रत्येक मानव के अन्दर दार्शनिक चिंतन पहले से ही विद्यमान होता है। जब वह दार्शनिक चिंतन की दृष्टि संसार को देखता है तो संसार क्षणिक एवं नश्वर दिखाई देने लगता है। भारतीय दर्शन का उद्देश्य दुःख से मुक्ति एवं मोक्ष प्राप्त करना है। भारतीय दर्शन परम्परानुसार अनेक विद्याएँ मोक्ष प्राप्ति का साधक है। किसी एक मात्र का अनुसरण करके वह मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। जब मानव का संपर्क

[34] तत्त्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा - पृष्ट संख्या: 04

Scanned with CamScanner

सर्वप्रथम बाह्य जगत से होता है। तब वह विश्व को समझने की चेष्टा करके स्वयं से प्रश्न करता है।

विश्व क्या है ?

विश्व की उत्पत्ति कैसे हुई ?

प्रथम जीव संसार के संपर्क में कब आया ?

जब मानव की आत्मचेतना जाग्रत हो जाती है तो वह समाज से दूर हो जाता है। वह सांसारिक भोगों को व्यर्थ समझता है।

वह स्वयं क्या है ?

शरीर नश्वर तथा आत्मा अमर क्यों है ?

मानव अपनी इच्छा शक्ति का मालिक है ?

बुद्धि किस प्रकार शरीर पर नियंत्रण रखती है ?

वास्तव में ज्ञान की कोई सीमा है ?

मूल तत्त्व क्या है ?

इस प्रकार के प्रश्नों का ज्ञान मानव तत्त्व मीमांसा के माध्यम से प्राप्त करने का प्रयत्न करता है।

तत्त्व मीमांसा

मूल तत्त्व एवं वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति के लिए तत्त्व का अन्वेषण करना आवश्यक है। जिसके अन्तर्गत वास्तविक एवं मूल तत्त्वों का अध्ययन किया जाता है। वह तत्त्व की मीमांसा कहलाती है। पाश्चात्य दार्शनिक अरस्तू की दर्शन पर आधारित रचनाओं को विज्ञान की रचनाओं के बाद प्रकाशित किया गया। तब से अंग्रेजी में 'metaphysics' शब्द बना। यह दो शब्दों से मिलकर बना है।

Meta - बाद

Physics - भौतिक विज्ञान[35]

[35] तत्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा - पृष्ट संख्या: 10

Scanned with CamScanner

अतः Metaphysics शब्द का अर्थ- भौतिक विज्ञान के बाद

अरस्तू ने "प्राथमिक सिद्धांतों की व्याख्या करते हुये इसे ही प्रथम दर्शन कहा है"। कुछ समय पश्चात 'Metaphysics' नाम रुढ़ हो गया। वर्तमान में तत्त्व मीमांसा को ही 'Metaphysics' कहा जाता है। इस विषय पर विद्वानों के आपस में मतभेद पाये जाते हैं। तत्त्व मीमांसा अदृश्य जगत के तत्त्वों का अन्वेषण करता है। तत्त्व का शाब्दिक अर्थ- 'वास्तविकता' है। और मीमांसा का अर्थ- 'चिंतन मनन एवं विचार' करना है। अतः वास्तविक ज्ञान को प्राप्त करना ही तत्त्व मीमांसा है। इसमें मूल तत्त्वों का अन्वेषण किया जाता है।

मूल तत्त्व का कारण क्या है?

वह स्वयं सभी का कारण है?

जिसका अन्य कोई कारण नहीं है?

वह परम तत्त्व कैसा है?

मूल तत्त्व संसार के कण-कण में विद्यमान है?

वह भी संसार के पदार्थों के समान है या उनसे भिन्न है?

यदि भिन्न है तो उसका स्वरूप क्या है?

वह एक है या अनेक है?[36]

इन सभी अदृश्यात्मक विषयों का अध्ययन तत्त्व मीमांसा के द्वारा किया जाता है। क्या वह मूल तत्त्व दृश्य जगत के परे है। दृश्यात्मक जगत के कारण मानव भ्रमित हो जाता है। वह संसार को ही वास्तविक समझता है। संसार को भ्रम समझने के बाद वह मूल तत्त्व की खोज में निकल पड़ता है। इस संसार से परे मूल तत्त्व क्या है? अतः सभी तत्त्वों का ज्ञान तत्त्व मीमांसा के अंतर्गत प्राप्त किया जाता है। यह भी दर्शन का एक क्षेत्र है। प्राचीन समय में तत्त्व मीमांसा में अनेक क्षेत्रों को समाहित किया जाता था। वर्तमान में दार्शनिकों ने दर्शन एवं तत्त्व मीमांसा दोनों को एक अर्थ

[36] तत्त्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा - पृष्ट संख्या: 10

Scanned with CamScanner

में प्रयोग किया है। दर्शन के द्वारा भी वास्तविक ज्ञान प्राप्त किया जाता है। अर्थात दर्शन को ही तत्त्व मीमांसा कहते है।

मीमांसा की अन्य शाखाएँ

विश्व मीमांसा

सांसारिक ज्ञान का अन्वेषण करना 'विश्व मीमांसा' कहलाता है।

जगत क्या है ?

जगत की उत्पत्ति कैसे हुई ?

यह जड़ अथवा चेतन है ?

जगत नित्य या अनित्य है ?

स्वतंत्र है या निर्भर ?[37]

अन्य अनेक प्रश्नों का अध्ययन विश्व मीमांसा की अंतर्गत किया जाता है।

यह अंग्रेजी के 'cosmos' शब्द से मिलकर बना है। इसका शाब्दिक अर्थ- 'विश्व' है। यह शब्द दिखने में जितना छोटा है। इसकी व्यापकता उतनी ही अधिक है। यह अपने अन्दर जीव-जन्तु, पशु-पक्षी, काल एवं अन्य असंख्य वस्तुएँ समाहित किए हुये है।

ज्ञान मीमांसा

किसी भी विषय में जानने की 'इच्छा शक्ति' को 'ज्ञान' कहते है। वस्तु का ज्ञान उसके रूप, रंग, आकार,एवं अन्य विषय में प्राप्त किया जाता है। यह अंग्रेजी के दो शब्दों से मिलकर बना है

Epistem - ज्ञान

Logia - मीमांसा

दोनों का शाब्दिक अर्थ – ज्ञान मीमांसा है।

[37] तत्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा - पृष्ट संख्या: 09

Scanned with CamScanner

ज्ञान का स्वरूप क्या है ?

ज्ञान सीमित है या असीमित ?

ज्ञान का उद्देश्य क्या है ?

ज्ञान परिवर्तन का माध्यम है ?

प्रथम एवं अंतिम ज्ञान क्या है ?

इस प्रकार अनेक प्रश्नों का अध्ययन ज्ञान मीमांसा के अंतर्गत किया जाता है। ज्ञान एक ऐसा माध्यम है। जिसके द्वारा प्रत्येक स्थिति, वस्तु, समाज, व्यवहाँर एवं अन्य सभी क्रिया-कलापों को सुन्दर तरीके से सुचारु रुप से चलाया जा सकता है। ज्ञान के आधार पर ही प्राणियों का स्तर निश्चित किया जाता है। कि वह किस योग्य है। और उनसे क्या काम लिया जा सकता है। वह कितना उपयोगी सिद्ध होगा।

अतः संसार एवं अन्य सभी के लिए ज्ञान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ज्ञान के कारण ही प्रत्येक वस्तु अपने नियमित समय पर कार्य कर रही है।

ईश्वर मीमांसा

किसी भी वस्तु को देख कर उसके मालिक का अनुमान लगाना स्वभाविक है। परन्तु बहुत सी ऐसी रचनाएँ है कि उसके रचयिता का पता करना तो दूर अनुमान भी नहीं लगा सकते। यह अँग्रेजी के दो शब्दों से मिलकर बना है।

Theos - ईश्वर

Logia - मीमांसा

'Theology' का शाब्दिक अर्थ- ईश्वर मीमांसा है।[38]

जगत की उत्पत्ति का कारण ईश्वर है ?

जगत को सुचारु रूप से कौंन चलाता है ?

जगत ईश्वर की रचना है तो ईश्वर किसकी रचना है ?

---

[38] तत्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा - पृष्ट संख्या: 11

Scanned with CamScanner

मानव एवं जगत का सम्बन्ध क्या है ?

इस प्रकार के अनेक प्रश्नों का अध्ययन ईश्वर मीमांसा के अंतर्गत किया जाता है।

तत्त्व मीमांसा संबन्धित प्रमुख मत

जगत की वास्तविकता को जानने के लिए पुराने समय से ही विद्वान प्रयत्न करते आ रहे हैं। यह कोई नया चिंतन का विषय नहीं है। परन्तु इस विषय पर विद्वान बहुत कम ही विद्वान एक मत होते हुये दिखाई देते हैं। अधिकतर सभी ने अपने अलग-अलग मत प्रस्तुत किये हैं।

यह विशाल संसार कैसे बना ?

क्या और भी ऐसे संसार हैं ?

संसार किस मूल तत्त्व से बना है ?

मूल तत्त्व क्या है ? अन्य अनेक प्रश्नों पर विद्वानों से अपने मत प्रस्तुत किये हैं। जिनमें कुछ पाश्चात्य विद्वान भी प्रमुख हैं। प्लेटो, अरस्तू, मार्क्स आदि। वर्तमान में तत्त्व मीमांसा सम्बन्धित चार मत प्रसिद्ध है।

(क) भौतिकवाद अथवा जड़वाद

जगत की उत्पत्ति का मूल आधार भौतिक तत्व अथवा जड़ दृव्य है। जगत की प्रत्येक वस्तु जड़ दृव्य से उत्पन्न हुई है। जगत उत्पत्ति के जड़, चेतना, जीव मुख्य तीन दृव्य कारण है। समान्य रूप से तीनों में भेद दिखाई देता है। परन्तु तीनों की उत्पत्ति भौतिक तत्त्व से हुई है।

जब एक से अधिक भौतिक तत्त्व मिलते तो चेतना उत्पन्न हो जाती है। यदि ये अलग अलग हो जाए तो चेतना समाप्त हो जाती है। जीव और चेतना जड़ दृव्य का दूसरा रूप है। सम्पूर्ण जगत जड़ दृव्य से बना है। इसे अनात्मवादी भी कहते है। सरल शब्दों में जगत ही सुख भोगने का साधन है। आध्यात्मिक जीवन है या नहीं इस विषय से कोई सम्बन्ध नहीं है। जगत में रहो और उपभोग करो। भारतीय दर्शन में चार्वाक

Scanned with CamScanner

दर्शन भौतिक वादी दर्शन का समर्थन करता है। यह भी जगत को सुख का साधन मानता है।[39]

(ख) अध्यात्मवाद

जगत 'जीवन' निर्वाह का साधन है। एक निश्चित समय के बाद प्रत्येक मानव को जाना पड़ता है। जगत को छोड़कर वह आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश करता है। इसके अंतर्गत जगत की उत्पत्ति जड़ एवं चेतन दोनों तत्त्वों से मिल कर हुई है। जड़ और चेतन का मिश्रण जीवन कहलाता है। जगत की उत्पत्ति चेतन तत्त्व (ईश्वर) की रचना है। जगत जड़ दिखाई देता है। लेकिन वास्तव में यह चेतन अथवा अभौतिक है। जगत भ्रम है। वास्तविक ज्ञान तो चेतन तत्त्व (ईश्वर) है। जीव जगत में पैदा होकर जगत की वस्तुओं का उपभोग करता है। उसके बाद आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश करता है। आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश करने के लिए जगत में आना आवश्यक है। आध्यात्मिक जीवन जगत के कर्मों के आधार पर निर्भर रहता है। आध्यात्मिक जगत केवल चेतना मात्र है। और जगत जड़मय है। भारतीय दर्शन आध्यात्मिक जीवन में विश्वास रखता है। जहाँ कर्मो के आधार पर फल मिलता है। वैदिक काल से ही आध्यात्मिक चिंतन प्रारम्भ हो चुका था। परन्तु समय-समय पर इस विचार का प्रसार होता रहा। यह विचार शंकराचार्य के समय में आकर पूर्ण विकसित हुआ।[40]

(ग) द्वैतवाद

जगत में दो प्रकार की वस्तुएँ है। एक जड़ रूप है और दूसरी चेतन रूप है। जड़ एवं चेतन को द्वैत कहते हैं। सामान्य रूप से जड़- कुर्सी घर, पहाड़ मिट्टी से बने उपकरण, आदि। मन, बुद्धि, एवं अन्य मानसिक अवस्थाएँ चेतनमय है। प्रत्येक वस्तु में जड़ एवं चेतन दोनों का मिश्रण

[39] तत्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा - पृष्ट संख्या: 29

[40] तत्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा - पृष्ट संख्या: 50,51

Scanned with CamScanner

अवश्य पाया जाता है। यह द्वैतवाद का सिद्धान्त कहलाता है। ऐसा नहीं है कि जड़ का अपरिवर्तित रूप चेतन है। चेतना का विकसित रूप जड़ है। दोनों की सत्ता अलग- अलग विद्यमान है। जगत की उत्पत्ति द्वैत के इन मूल तत्त्वों से हुई है। विस्तार जड़ की विशेषता है। चेतना संकुचित रूप ग्रहण करती है। भारतीय दर्शन में सांख्य दर्शन भी दो तत्त्वों को मानता है। सांख्य दर्शन में पुरुष एवं प्रकृति द्वैत तत्त्व कहलाते हैं।

(घ) तटस्थवाद

प्रत्येक वाद अपने-अपने मत का समर्थन करता है। तटस्थवाद सभी मतों का खण्डन करते हुये अपने मत का मंडन करता है। तटस्थ वाद के अनुसार मूल तत्त्व न जड़ है और न चेतन बल्कि दोनों का मिश्रण है। द्वैत में जड़ एवं चेतन को अलग-अलग वर्णित किया गया है। एक ऐसी सत्ता जो जड़ और चेतन का मिश्रण है। वह मूल तत्त्व है। यह ही तटस्थवाद का सिद्धान्त कहलाता है। जड़ एवं चेतन में कोई भौतिक एवं अभौतिक भेद नहीं है। अतः मूल तत्त्व एक है। इसी से जगत की उत्पत्ति हुई है। भारतीय दर्शन एवं तटस्थवाद में बहुत अधिक समानता दिखाई देती है। आस्तिक परम्परा के वेदान्त दर्शन में भी मूल तत्त्व को एक माना गया है।

Scanned with CamScanner

द्वितीय अध्याय
वेदान्तसार एवं क़ुर्आन में तत्त्व-मीमांसा

वेदान्त दर्शन पर सदानन्द योगींद्र द्वारा लिखित वेदान्तसार एक प्रकरण ग्रन्थ है। जो कि भारतीय सनातन अथवा उपनिषदों का निष्कर्ष प्रस्तुत करता है। वेदान्त दर्शन में जीवन के साथ-साथ किस प्रकार मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। इसका सरलतम विवरण बताता है। वेदान्त का ज्ञान भारतीय सनातन का अंतिम ज्ञान है। यह ज्ञान प्रत्येक सनातनी के लिए आवश्यक है। वेदान्त का ज्ञान प्राप्त करने के लिए मानव को कुछ नियमों का पालन करना अनिवार्य है। यदि वह नियमों का पालन करता है। तो वह वेदान्त का अध्ययन करने का अधिकारी होता है। वेदान्त अध्ययन से वेदान्ती संसार के तत्त्वों का अध्ययन करता है। जब वे सांसारिक ज्ञान को प्राप्त कर लेता है। तो वह संसार को मिथ्या समझता है। वह ज्ञान के माध्यम से ब्रह्म का साक्षात्कार करता है। वेदान्त सामान्य दृष्टिकोण से अधिक महत्वपूर्ण नहीं है,परन्तु तात्त्विक दृष्टि से प्रधान ग्रन्थ है। तत्त्वों का अन्वेषण, ईश्वर क्या है ? उसका स्वरूप क्या है ? जीव मुक्ति का साधन क्या है ? माया क्या है ? संसार में माया किस प्रकार भ्रमित करती है ? इससे बचने के उपाएँ क्या हैं ? संसार किस प्रकार मुक्ति का साधन है ? इत्यादि सभी का ज्ञान वेदान्त प्रस्तुत करता है। संसार में ऐसा कोई मानव नहीं है जो माया रूपी जाल से बच जाए, माया ब्रह्म की अदृश्यमयी शक्तिशाली एवं भ्रमित करने वाली शक्ति है। जब तक इसके स्वरूप को न समझ लिया जाए तब तक मोक्ष मार्ग का पता नहीं लगाया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

कुर्आन अल्लाह का क़लाम है। क़लाम का मतलब- अल्लाह के द्वारा बताया गया मार्ग है। कुर्आन के अनुसार- अल्लाह ने दुनिया पर सबसे पहले मर्दों में 'आदम' को और औरतों में 'हव्वा' को पैदा किया। उसके बाद इंसानी सिलसिला शुरू हुआ। अल्लाह ने इंसान को दुनियाँ में आजमाइश के लिए भेजा है। ताकि उनको आज़माया जा सके। दुनियाँ में जीवन को कैसे व्यतीत किया जाए ? सारे रास्ते हर समस्या को कुर्आन में बताया है। कुर्आन अल्लाह की किताब है। जो ईश्वरीय ग्रन्थ भी कहलाता है। कुर्आन अन्य तीन तौरात, जूबूर, इंजील किताबों के विषय में बताता है। जिससे उन किताबों की प्रामाणिकता सिद्ध होती है। इसका मतलब ये बिलकुल नहीं है कि इनके अलावा अन्य दूसरी किताबें आसमानी नहीं है। बहुत सारी आसमानी किताबें है लेकिन उनके विषय में कुर्आन में साफ तौर पर नाम नहीं बताया गया है। समयानुसार इंसान को गलत रास्ते से बचाने के लिए अल्लाह ने अपने नबी(दूत) को भेजा है। ताकि इंसान गलत रास्ते को छोड़कर सही रास्ते पर आ जाए। अब यह सही रास्ता कौंन सा है? जिस काम को करने से अल्लाह ने मना किया है वह गलत रास्ता है और जिस काम को करने के लिए कहा है वह सही रास्ता है। यह सारी बातें अल्लाह ने आखिरी नबी मुहम्मद साहब के द्वारा इंसान तक पहुंचाई हैं। कुर्आन एक पूर्ण कानून है जो कि गलत को रोकने और सही को करने के लिए कहता है। दुनियाँ एक मार्ग है जो कि कर्मों का समूह है। इंसान जैसा काम करेगा वैसा उसको फल मिलेगा। लेकिन यह नियम पहली शर्त के बाद लागू होता है। पहली शर्त यह है कि अल्लाह को 'एक' मानकर कर्म करना। फिर इंसान जैसा कर्म करेगा वैसा ही फल पाएगा। कुर्आन दो तरह के जीवन के बारे में बताता है। एक वह जीवन जो दुनिया में कर्मो को करते हुये जीते है। और दूसरा वह जीवन जो मृत्यु के बाद शुरू का होता है। जिसे अन्य धर्मों में मोक्ष,निर्वाण,केवल्य, आदि नाम दिया गये हैं। मृत्यु के बाद का जीवन कर्मों के हिसाब-किताब के बाद मिलता है। अच्छे कर्म करने वाले को स्वर्ग और बुरे कर्म करने वाले को पहले बुरे कर्मों की सजा मिलेगी उसके बाद स्वर्ग में भेजा जायेगा। लेकिन शर्त यह है कि वह 'एक अल्लाह' को मानने वाला हो। जिन सवालों के जबाब दुनियाँ में जीवित रहते नहीं मिले वह मौत के बाद मिलेंगे। उस समय हमारे पास कोई विकल्प नहीं होगा।

Scanned with CamScanner

(क)वेदान्तसार में प्रतिपादित तत्त्व-मीमांसा का स्वरूप

मंगलाचरण – अखण्डं सच्चिदानंदम् अवांगमनसगोचरम् ।
आत्मानम् अखिलधारम् आश्रयेअभीष्टसिद्धये । ।

ईश्वर

**"इयं समष्टिरूत्क्रष्टोउपाधितया विशुद्धसत्त्वप्रधाना ।
एतदुपहितं चैतन्यं सर्वज्ञत्वसर्वेश्वरत्वसर्व- नियन्तृत्वादिगुणकमव्यक्तमन्तर्यामी जगत्कारणमीश्वर इति च व्यपदिश्यते सकलाज्ञानावभासकत्वात् 'यः सर्वज्ञः सर्ववित्' इति श्रुतेः"।** [41]

अज्ञानस्य रूप उत्कृष्ट: उपाधि: = विशुद्धसत्त्वप्रधान

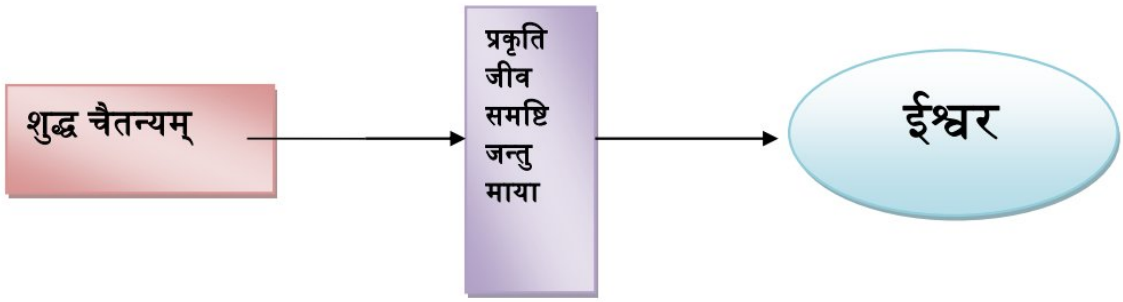

हिन्दी अनुवाद

यह समष्टि (व्यष्टि की अपेक्षा) उन्नत उपाधि वाली होने के कारण रागादि दोष से शून्य शुद्ध सत्त्व गुण प्रधान है। इस (उत्कृष्ट) उपाधि से युक्त चैतन्य को सर्वज्ञाता,सबका ईश्वर तथा सर्वनियन्ता आदि गुणों वाला अव्यक्त,अंतर्यामी,संसार का कारणरूप तथा ईश्वर आदि नामों से जाना जाता है।

---

[41] वेदान्तसार - ३७.३८

Scanned with CamScanner

"जो सर्वज्ञाता,सर्ववित है"। इत्यादि श्रुत्यानुसार यह सम्पूर्ण ज्ञान का प्रकाशिता है।

"ईश्वरस्येयं समष्टिरखिलकारणत्वात् कारणशरीरमानन्दप्रचुरत्वात् कोशवदाच्छादकत्वाच्चानन्दमयकोश: सर्वोपरमत्वात् सुषुप्तिरत एव स्थूलसूक्ष्मप्रपञ्चलयस्थानमिति चोच्यते"। । [42]

हिन्दी अनुवाद

ईश्वर की यह समष्टि सबका मूलभूत कारण होने के कारण, कारणशरीर आनन्द का प्राचुर्य होने के कारण, समष्टि भूत अज्ञानता को कोश के तुल्य आवश्यक होने के कारण, आनन्दमय कोश तथा सूक्ष्म व स्थूल जगत प्रपंच के लय स्थान होने के कारण 'सुषुप्ति' कहलाती है।

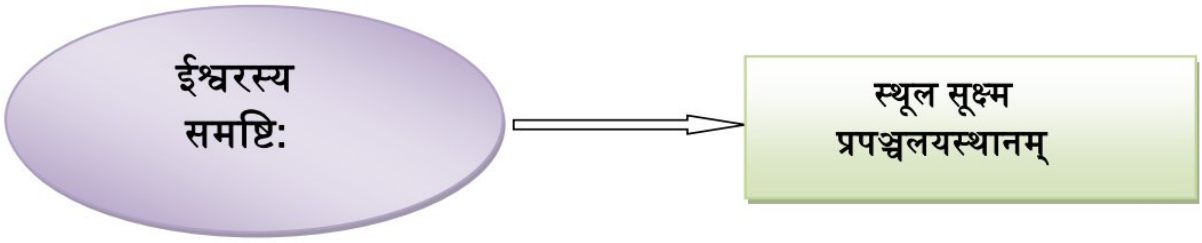

[42] वेदान्तसार - ३९

Scanned with CamScanner

आत्मा

"अत्राप्यखिलसूक्ष्मशरीरमेंकबुद्धिविषयतया वनवज्जलाशयवद्वा समष्टिनेकबुद्धिविषयतयाव्रक्षवज्जलवद्वा व्यष्टिरपि भवति। एतत्समष्टयुपहितं चैतन्यं सूत्रात्मा, हिरण्यगर्भ, प्राणश्चेत्यते सर्वत्रानुस्युतत्वाज्ज्ञानेच्छाक्रियाशक्तिमदुपहितत्वाच्च" [43]।।

हिन्दी अनुवाद

यहाँ पर भी सकल चराचर के सूक्ष्म शरीर, एकत्व के ज्ञान का विषय होने के कारण वन अथवा जलाशय के समान समष्टि (समुदाय रूप) अनेकत्व के ज्ञान का विषय होने के कारण वृक्ष अथवा जल के समान व्यष्टि भी होते हैं।

इस समष्टि (समुदाय) उपाधि से युक्त चैतन्य को सूत्रात्मा, हिरण्यगर्भ तथा प्राण कहते है क्योंकि यह सर्वत्र व्याप्त तथा तीनों कोषों से युक्त होने के कारण ज्ञान तथा क्रिया से सम्पन्न है।

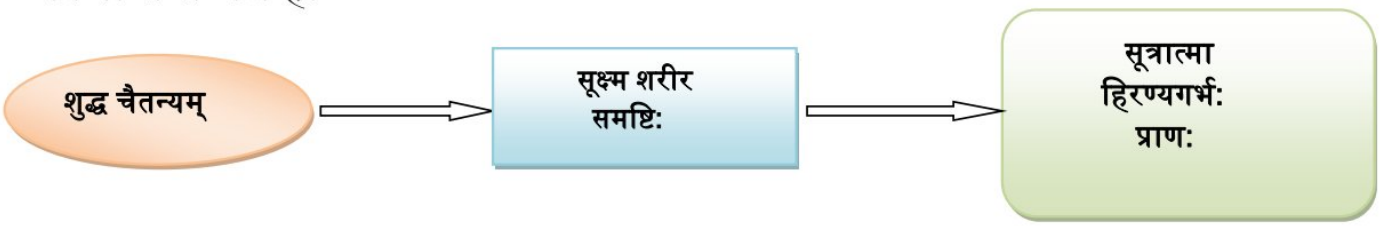

"(अध्यारोप:) किञ्च प्रत्यगस्थूलोअचक्षुरप्राणोमअना अकर्त्ता चैतन्यं चिन्मात्रं सदित्यादिप्रबलश्रुतिविरोधास्य पुत्रादिशून्यपर्यन्तस्य जडस्य चैतन्यभास्यत्वेन घटादिवदनित्यत्वादहं ब्रह्मोति विद्वदनुभवप्राबल्याच्च तत्तछुतियुक्तनुभवाभासानां बाधितत्वादपि पुत्रादिशून्यपर्यन्तमखिलमनात्मैव। अतस्तत्तद्भासक नित्यशुद्धबुद्धमुक्तसस्यत्यत्वभावम प्रत्यक् चैतन्यमेंवात्मवस्तु इति वेदान्तविद्वदनुभव:"[44]

---

[43] वेदान्तसार - ९०,९१

[44] वेदान्तसार - १३४,१३५

Scanned with CamScanner

हिन्दी अनुवाद

आन्तरिक आत्मा अस्थूल,अचक्षुर,अप्राण,अमना,अकर्ता,चैतन्य प्रकाश स्वरूप नित्य है। इत्यादि प्रबल श्रुतियों के विरोधी होने के कारण पुत्रादि से शून्य पर्यन्त सबके जड़ तथा चैतन्य आभासमात्र होने से घटादि के सदृश्य अनित्य होने के कारण 'मैं ब्रह्म हूँ' विद्वानों के अनुभव प्राबल्य से तथा उन-उन श्रुति वचनों,युक्तियों व अनुभव आभासों से बाधित होने के कारण पुत्रादि से शून्य पर्यन्त सब आत्मा नहीं हैं, अपितु प्रत्येक चैतन्य आत्मा है। इसलिए वस्तुओं का प्रकाशक नित्य,शुद्ध,बुद्ध,मुक्त,सत्य-स्वभाव,आंतरिक चैतन्य आत्मा है जो वस्तु (यथार्थ) है, ऐसी वेदान्त विद्वानों की अनुभूति है।

माया

वेदान्त में माया के अनेक पर्यायवाची पद हैं। जिसमें अज्ञान,अविद्या,अव्यक्त, प्रकृति माया आदि। ये सभी माया के दूसरे रूप हैं। स्थूल दृष्टि से सभी का अर्थ समान है,परन्तु सूक्ष्म दृष्टि से अनुसरण करने पर भेद दिखाई देते है। वेदान्त के प्रकरण ग्रन्थों में इन पदों का निरूपण किया गया है। प्रमुख पदों का सामान्य निरूपण इसप्रकार है।

- **अज्ञानम्** 'ज्ञानस्य विरोधित्वात अज्ञानम्' ।
  ज्ञान विरोधी होने के कारण अज्ञान कहलाता है।
- **माया** विशुद्ध सत्त्व – प्रधानमाया ।
- **अविद्या** मलिन सत्त्व प्रधान।

Scanned with CamScanner

- **अव्यक्तम्** माया जगत्सृष्टि: पूर्व: व्यक्तरुपेण न प्रसिद्धा अत: अव्यक्तम् ।

  हिन्दी अनुवाद माया जगत उत्पत्ति से पहले नाम एवं रूप में व्यक्त नहीं होती, इसी कारण से यह अव्यक्त है।

- **प्रकृति:** चित्प्रतिबिम्बसहिता माया समस्तस्य संसारस्य मूलकारण भूता।

  हिन्दी अनुवाद जगत उत्पत्ति से पूर्व माया संसार का मूल कारण है। ब्रह्म से मिलकर माया का रूप ईश्वर हो जाता हैं।

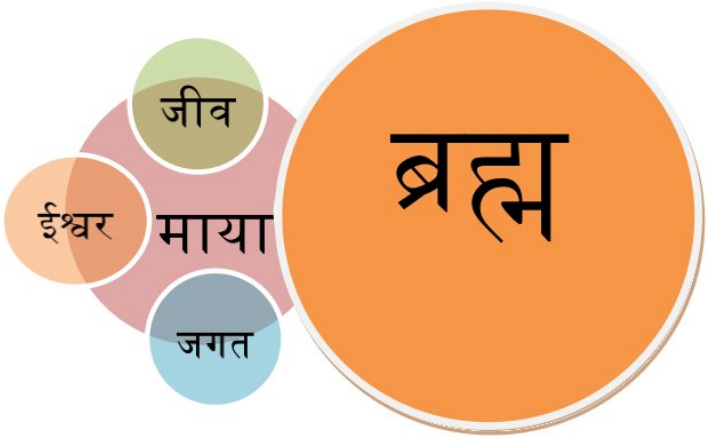

सृष्टि उत्पत्ति

तम: प्रधानविक्षेपशक्तिमदज्ञानोपहितचैतन्यादकाश: आकाशद्वायुर्वारग्निरग्नेरापोअद्भ्य: पृथ्वी चोत्पद्यते 'तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाश: संभूत' इत्यादि श्रुते:। । [45]

हिन्दी अनुवाद तमोगुण प्रधान विक्षेप शक्तियुक्त अज्ञानोपाधि से उपहित चैतन्य से आकाश,आकाश से वायु,वायु से अग्नि,अग्नि से जल,जल से पृथ्वी उत्पन्न हुई । 'उस आत्मा से आकाश उत्पन्न हुआ' यह श्रुति कथन प्रमाण है।

[45] वेदान्तसार- ५७

Scanned with CamScanner

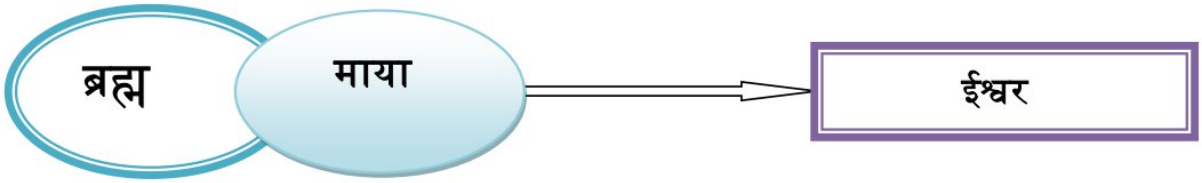

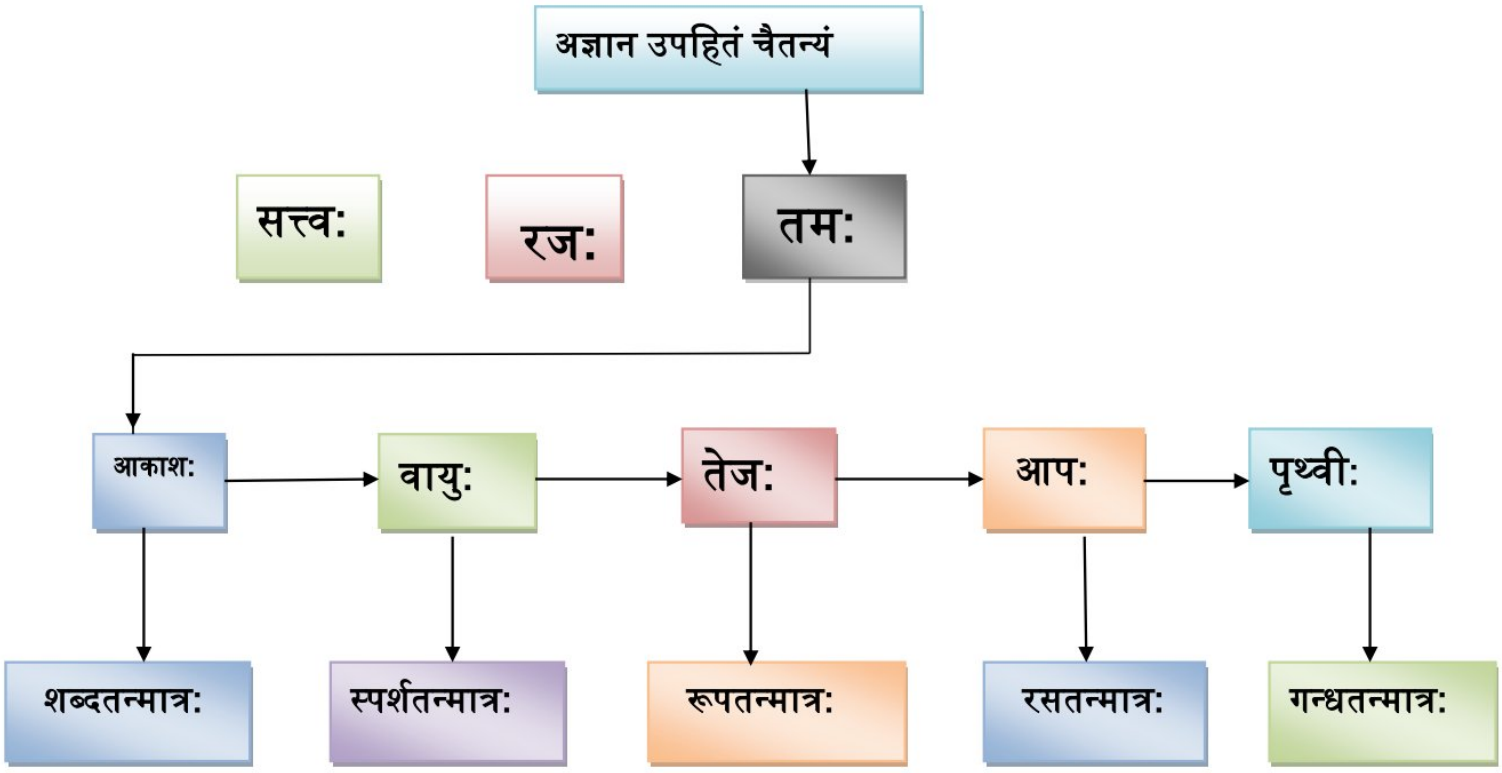

अपंचीकृतभूतेभ्य: सूक्ष्म स्थूल भूतानामं च उत्पत्ति
तेषु जाड्याधिक्यदर्शनात्तम: प्राधान्यं,तत्कारणस्य। तदानीम सत्त्वरजस्तमां
-सिकारणगुणप्रकरमेंण तेष्वाकाशादिषूत्पद्यन्ते। एतान्येव सूक्ष्मभूतानि चोत्पद्यन्ते।[46]

[46] वेदान्तसार- ५८

Scanned with CamScanner

हिन्दी अनुवाद

उन आकाशादिकों में जड़ता की अधिकता दृष्टिगत होने के कारण उनके कारणभूत अज्ञान का तमों गुणप्रधान होना सिद्ध होता है। तब आकाशादि को तथा उनके कारण के गुणों के क्रम से सत्त्व रज तमों गुण उत्पन्न होते हैं।

सूक्ष्मशरीरम्

सूक्ष्मशरीराणि सप्तदशावयवानि लिंगशारीराणि। अवयवास्तु ज्ञानेदृयम्पंचकम् बुद्धिमनसीकर्मेन्द्रियपंचकम् वायुपंचकम् चेति । [47]

हिन्दी अनुवाद सत्रह अवयवों से युक्त लिंग शरीरों को सूक्ष्मशरीर कहते हैं। पाँच कर्मेन्द्रिया,पाँच ज्ञानेद्रिया,पाँच वायु बुद्धि और मन।

[47] वेदान्तसार- ६१

Scanned with CamScanner

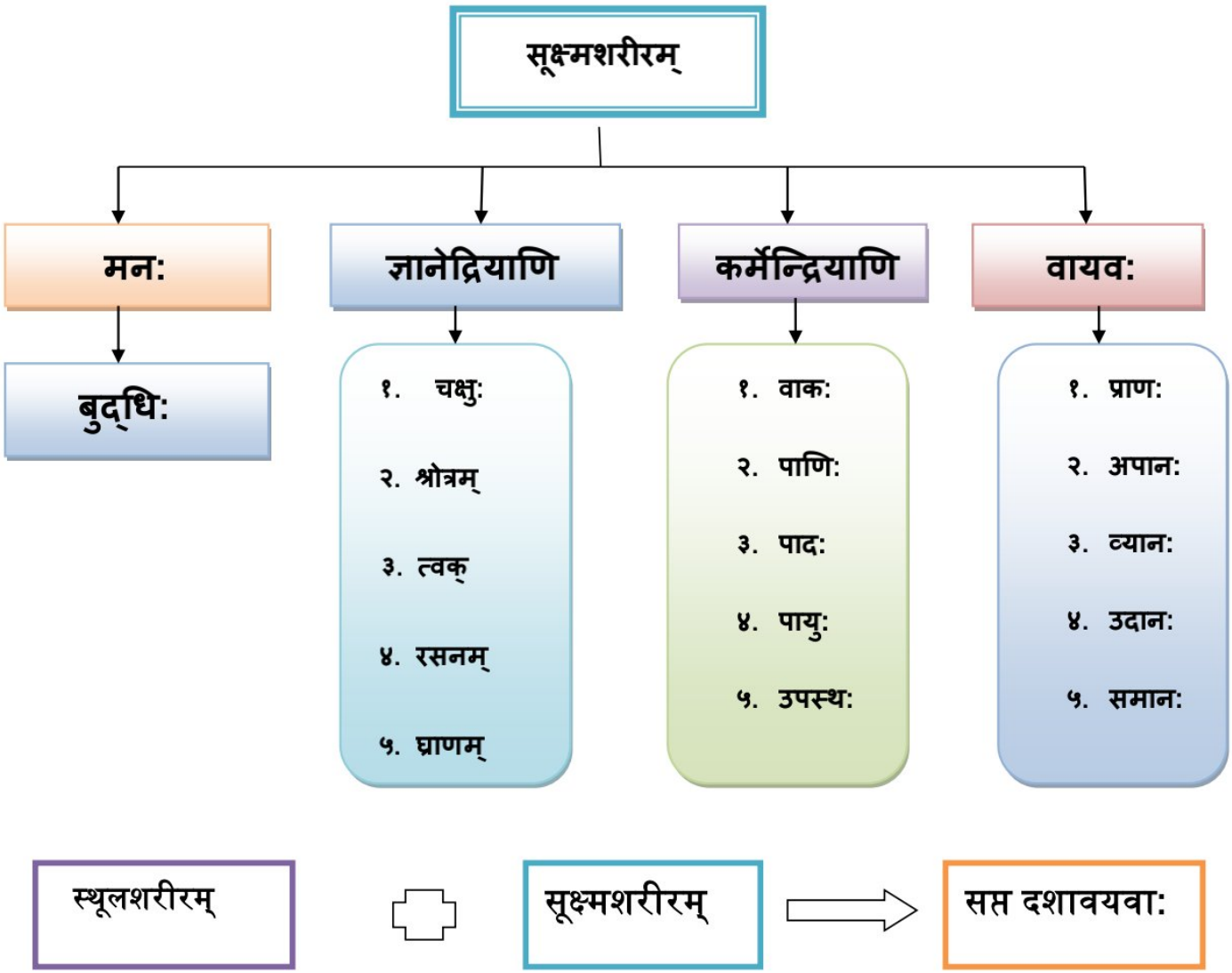

ज्ञानेन्द्रियाणि

ज्ञानेन्द्रियाणि श्रोत्रत्वक्- चक्षुरसनाघ्राणख्यानि। एतान्याकाशादीनां सात्त्विकांशेभ्यों व्यस्तेभ्य: प्रथक् प्रथक् क्रमेंणोंत्पद्यन्ते ।[48]

[48] वेदान्तसार -६३,६४

Scanned with CamScanner

हिन्दी अनुवाद ज्ञानेन्द्रियों के नाम है- श्रवण,त्वचा,नेत्र,रसना,और नासिका। ये आकाशादि तत्त्वों के व्यस्त (बिखरे हुए) सात्त्विक अंशो से अलग-अलग आकाशादि के क्रम से उत्पन्न होती हैं।

अपंचीकृतानि भूतानि

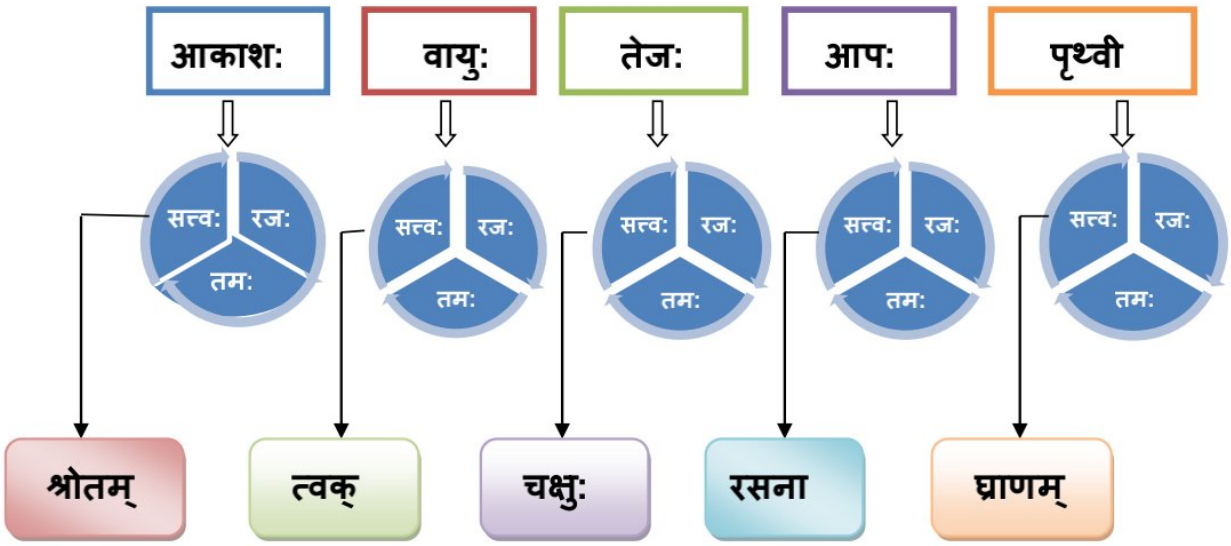

कर्मेन्द्रियाणि

कर्मेन्द्रियाणि वाक्याणिपादपायुपस्थयाख्यानि। एतानि पुनराकाशदीनांरजोंशेभ्य: प्रथक् प्रथक् क्रमेंणोत्पद्यते। [49]

हिन्दी अनुवाद

कर्मेन्द्रियाँ है- वाणी,हस्त,पाद,पायु और उपस्थ। ये आकाशादि सूक्ष्मभूतों के राजस अंशों के बिखरे हुए रूप से अलग-अलग क्रमानुसार उत्पन्न होती है।

अपंचीकृतानि भूतानि

[49] वेदान्तसार- ७५,७६

Scanned with CamScanner

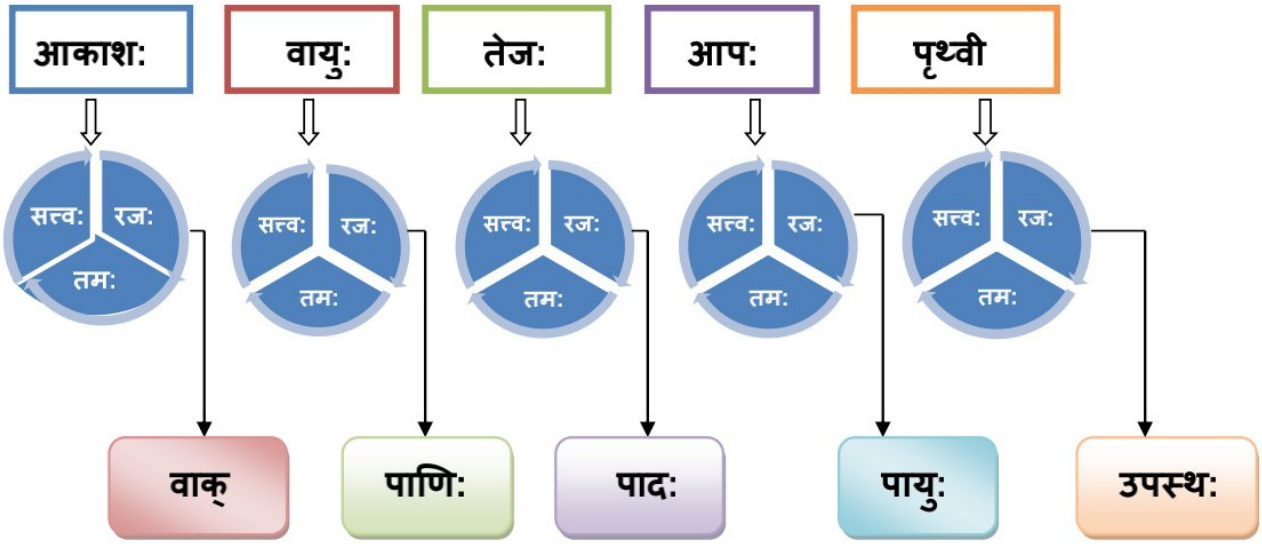

अन्तः करण (बुद्धि: मनश्च)

बुद्धिर्नाम निश्चयात्मिकान्त: करणवृत्ति:। मनोनामसंकल्पविकल्पात्मिका अन्त:करणवृत्ति: अनयोरेव चित्तांहकारयोरन्तर्भाव:।[50]

हिन्दी अनुवाद –

निश्चयरूपा अन्त:करण बृत्ति का नाम बुद्धि है। संकल्पविकल्प रूपा अन्त:करण बृत्ति का नाम मन है। इन दोनों में चित्त और अहंकार का अंतर्भाव हो जाता है।

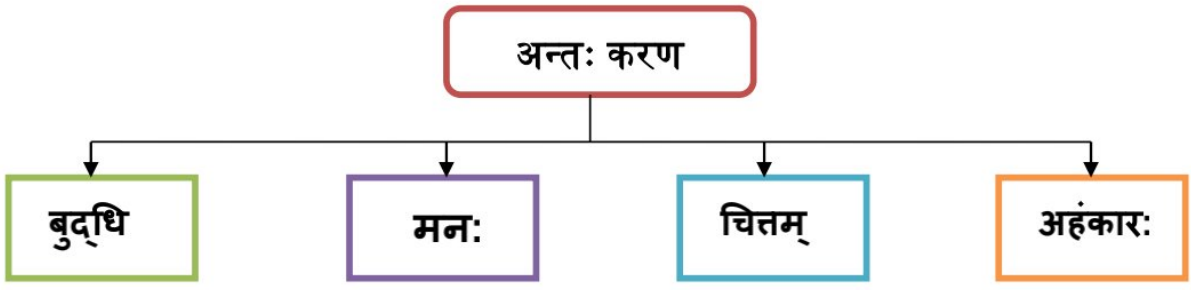

[50] वेदान्तसार- ६५,६६,६७

Scanned with CamScanner

कोश

इयं बुद्धिर्ज्ञानेंद्रियों: साहितविज्ञानमयकोशोभवति। अयं कृर्तृत्वभोक्तृत्वाभिमानत्वेनइहलोकपरलोकगामी व्यवहाँरिकोंजीवइत्युच्यते। मनस्तु ज्ञानेद्रियै: सहितंसत् मनोमयकोशो भवति। [51]

हिन्दी अनुवाद

यह बुद्धि ज्ञानेन्द्रियाँ से साथ मिलकर विज्ञानमय कोश होती है। यह विज्ञानमय कोश ही कर्तापन,भोक्तापन,सुखी होना, दुखी:होना,आदि का अभिमानक होने से इहलोक परलोक में भ्रमण करने वाला व्यावहारिक-रूप में 'जीव' कहलाता है। और मन भी ज्ञानेन्द्रियाँ के साथ मिलकर मनोमय कोश कहलाता है।

पञ्चकोशा:

१.अन्नमय:

२.प्राणमय:

३.मनोमय:

४.विज्ञानमय:

५.आनन्दमय:

[51] वेदान्तसार- ७२,७३,७४,

Scanned with CamScanner

पञ्च वायव:

वायव: प्राणापानव्यानोपदानसमाना:। प्राणोनामप्राग्गमनवान्नासाग्रा स्थानवर्ती। अपानोंनामावाग्गमनवान् पाटवादिस्थानवर्ती। व्यानोंनामविष्वग्गमनवान् अखिलशरीरवर्ती। उदानोंनामकण्ठस्थानीयऊर्ध्वगमनवान् उत्कृमणवायु:। सामानोनामशरीरमध्यगताशितपीतान्नादि-समीकरणकर:। [52]

हिन्दी अनुवाद

वायु है- प्राण,अपान,व्यान,उदान और समान। इसमें प्राण नामक वायु आगे या सामने की ओर गमन करती है। और नासिका के अग्र भाग में स्थित रहती है। अपान नामक वायु नीचे की ओर गमन करने वाली है और पायु आदि स्थानों में स्थित है। व्यान नामक वायु सर्वत्र गमन करने वाली है और सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त है। उदान वायु का स्थान कंठ है, यह ऊर्ध्वगमन करने वाली उत्क्रमण वायु है। समान नामक वायु शरीर के अन्दर गए, हुए खाये-पीए अन्नादि का समीकरण करने वाली है। समीकरण परिपाकरण अर्थात खाये-पीए अन्नादि का रस,रक्त,वीर्य,मल, आदि कर देना होता है।

[52] वेदान्तसार- ७७,७८,७९,८०,८१,८२

Scanned with CamScanner

एतत्प्राणादिपञ्चकम् आकाशादिगतरजोंशेभ्यों मिलितेभ्य उत्पद्यते।

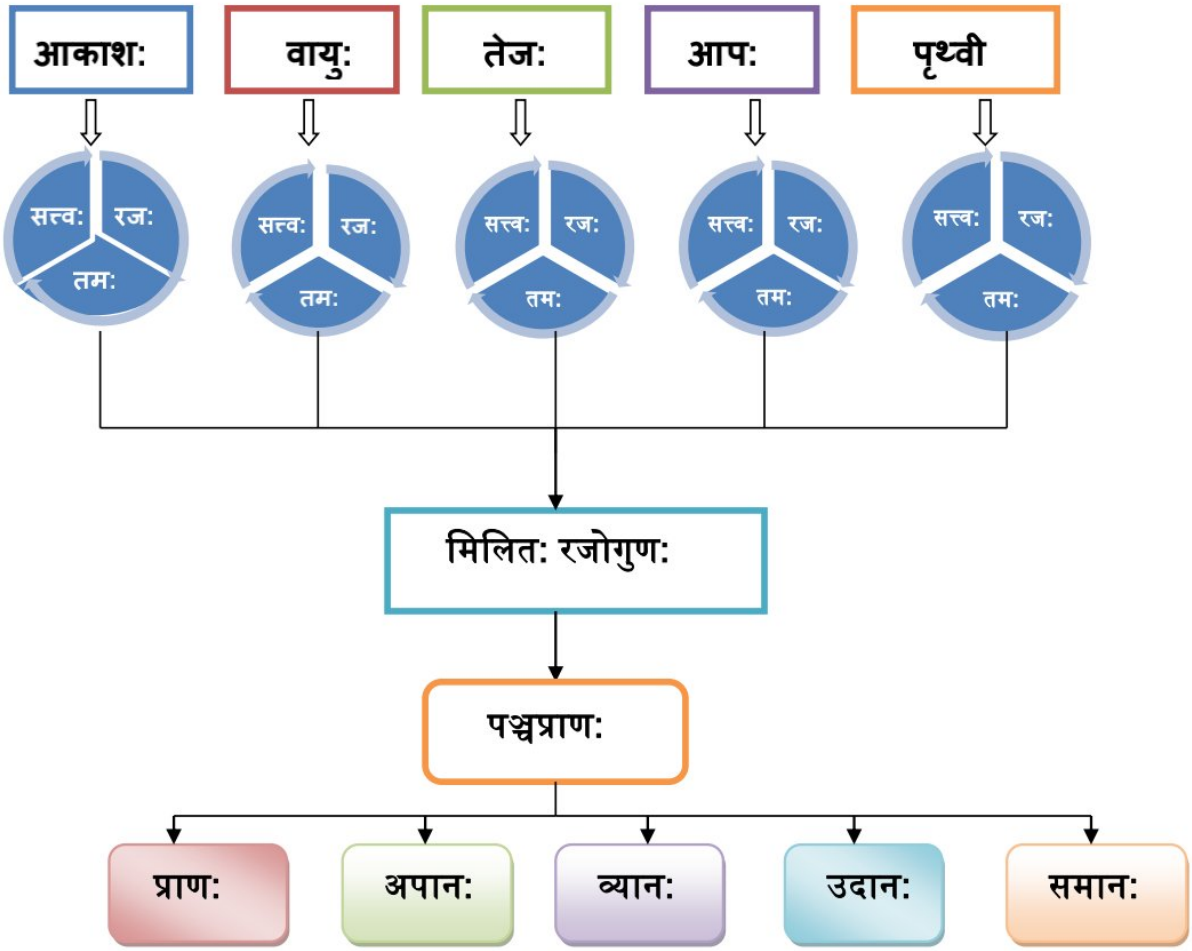

सूक्ष्मशरिरेकोशत्रयम्

मनोमयइच्छा शक्तिमान् करणरूप:। प्राणमय: क्रियाशक्तिमान्कार्यारूप: योग्यत्वा देवमेंतेषांविभाग इति वर्णयन्ति। एतत्कोशत्रयं मिलितं सत् सूक्ष्मशरीरम् इत्युचयते। [53]

[53] वेदान्तसार- ८९

Scanned with CamScanner

हिन्दी अनुवाद

मनोमयकोश इच्छाशक्ति से युक्त होने के कारण करणरूप है। प्राणमयकोश क्रिया शक्ति से युक्त होने के कारण कार्य रूप है। कृत्वादि में योग्यता होने के कारण ही इनका विभाग हुआ है,ऐसा वेदान्त आचार्य वर्णन करते है। यह तीनों कोशो का समुदाय मिलकर 'सूक्ष्म शरीर' कहलाता है।

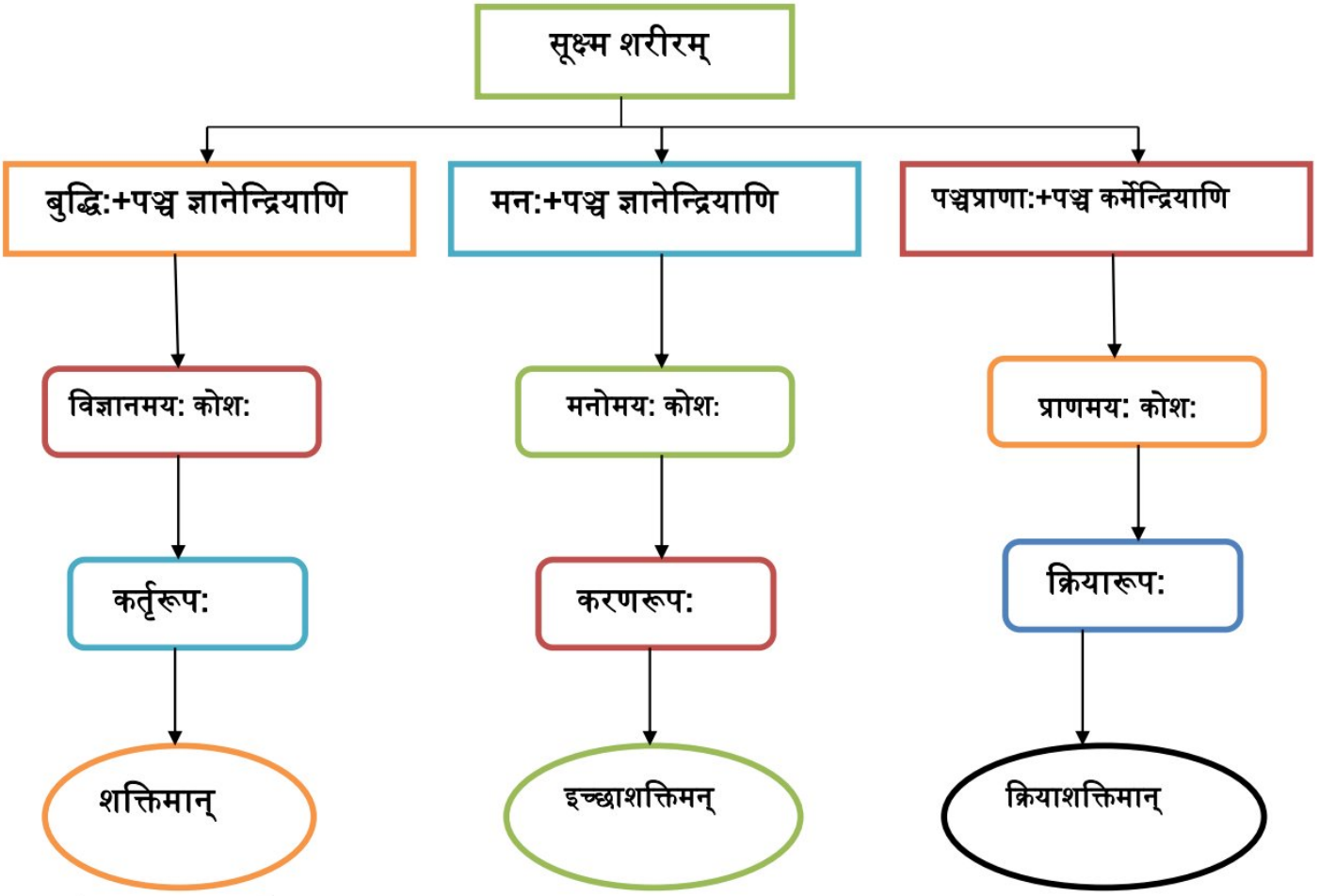

पंचीकरण – प्रक्रिया

स्थूलभूतानि तु पंचीकृतानि। पंचीकृतमत्वाकाशादि पञ्चस्वेकैकं द्विधासमं विभज्यतेषु दशसु भागेषु प्राथमिकान् पञ्चभागान् प्रत्येकम् समं

Scanned with CamScanner

विभज्य तेषां चतुर्णा भागानां स्वस्वद्वितीयार्धभागपरित्यागेन भागान्तरेषुयोजनम्।[54]

हिन्दी अनुवाद स्थूलभूत तो पंचीकृत होते हैं और पंचीकरण आकाशादि पाँचों भूतों में से प्रत्येक को दो भागों में समान विभक्त कर उन दश भागों में पहले पाँच भागों में से प्रत्येक भाग को चार भागों में समान विभक्त कर उन चारों भागों का अपने-अपने दूसरे अर्द्ध भाग का परित्याग करते हुए अन्य अर्धभागों के साथ मिला देना।

अज्ञानोपहितं चैतन्यं

अपंचीकरण तत्त्व

पंचीकृत अवयव

पृथ्वी = १/२ **पृथ्वी** + १/८ जल: + १/८ तेज: + १/८ वायु: + १/८ आकाश:

जल: = १/२ **जल:** + १/८ पृथ्वी + १/८ तेज: +१/८ वायु: + १/८ आकाश:

तेज: = १/२ **तेज:** + १/८ पृथ्वी + १/८ जल: + १/८ वायु: + १/८ आकाश:

वायु: = १/२ **वायु:** + १/८ पृथ्वी + १/८ तेज: + १/८ जल: + १/८ आकाश:

आकाश: = १/२ **आकाश:** + १/८ पृथ्वी + १/८ जल: + १/८ तेज: + १/८ वायु:

[54] वेदान्तसार- ९८,९९

Scanned with CamScanner

चतुर्विधशारीराणि

चतुर्विधशारीराणि तु जरायुजाअंडजोउद्भिज्जस्वेदजाख्यानि। जरायुजानिजरायुभ्यो जातानिमनुष्यपश्वादीनी। अंडजानिअंडेभ्योजातानि पक्षिपन्नगादीनी। उद्भिज्जानि भूमिमुद्भिज जातानि लता वृक्षादीनी। स्वेदजानि स्वेदेभ्यो जातानि यूकमशकादीनी। [55]

हिन्दी अनुवाद – चार प्रकार के स्थूल शरीर हैं- जरायुज,अण्डज,उद्भिज तथा स्वेदज। जरायुज से उत्पन्न मनुष्य,पशु आदि हैं। अण्डज अण्डों से उत्पन्न पक्षी,सर्प आदि हैं। उद्भिज पृथ्वी को फोड़कर उत्पन्न लता,वृक्ष आदि हैं। स्वेदज स्वेद (पसीने) से उत्पन्न यूका (जुआँ),मशक(मच्छर) हैं।

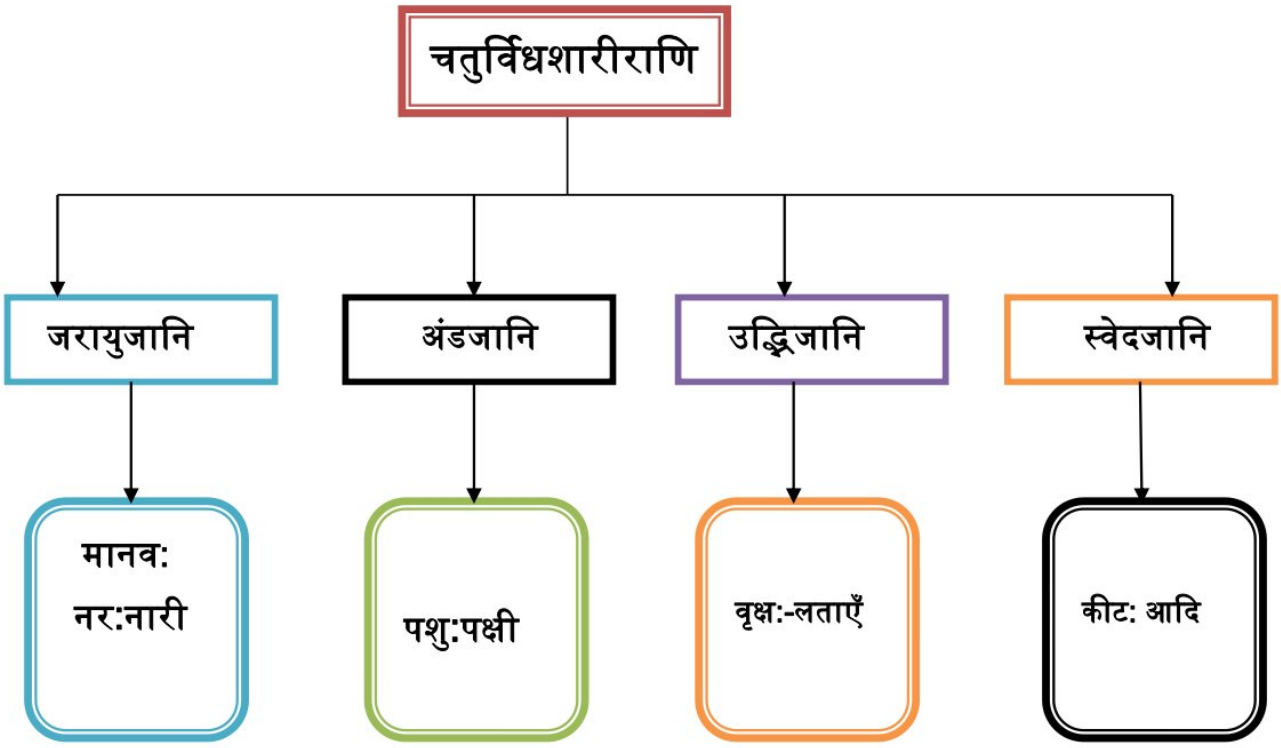

[55] वेदान्तसार- १०५,१०६,१०७,१०८,१०९

Scanned with CamScanner

स्थूलशरीरसमष्टि: -व्यष्टि:

अस्यैषा समष्टि: स्थूलशरीरमन्नविकारत्वादन्नमयाकोश: स्थूलभोगायतनत्वात् च स्थूलशरीरंजागृदिति च व्यपदिश्यते। [56]

हिन्दी अनुवाद – इस वैश्वानर नामक चैतन्य की समष्टि स्थूल शरीर अन्न का विकार होने के कारण अन्नमय कोश, स्थूल भोगों का आश्रयस्थल होने के कारण स्थूल शरीर तथा जाग्रत नाम व्यवहृत होता है।

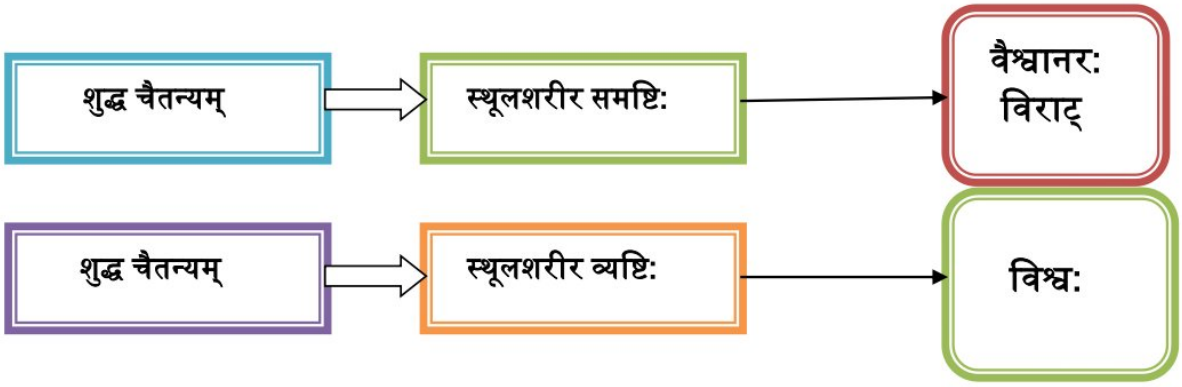

चैतन्यस्य एकत्वम्

एतेषां स्थूलसूक्ष्मकारणप्रपञ्चानामपि समष्टिरेकोमहानप्रपंचोंभवति,यथा अवांतरवनांसमष्टिरेकंमहद्वनंभवति यथा वाअन्तरजलाशयानां समष्टि: एको महान् जलाशय:। एतदुपहितं वैश्वानरादीश्वरपर्यन्तं चैतन्यमपि अवांतरवनावच्छिन्नाकाशवद् अवांतरजलाशयगत-प्रतिबिम्बाकाशवच्चैकमेंव। [57]

हिन्दी अनुवाद इन स्थूल,सूक्ष्म और कारण प्रपंचों की भी समष्टि एक महान प्रपंच होती है। जैसे भिन्न जाति वाले वृक्षों के वनों की समष्टि एक महान वन होती है।

---

[56] वेदान्तसार- ११२

[57] वेदान्तसार - ११८

Scanned with CamScanner

अथवा जैसे भिन्न-भिन्न स्वाद वाले जलों के जलाशयों की समष्टि एक महान् जलाशय होती है।

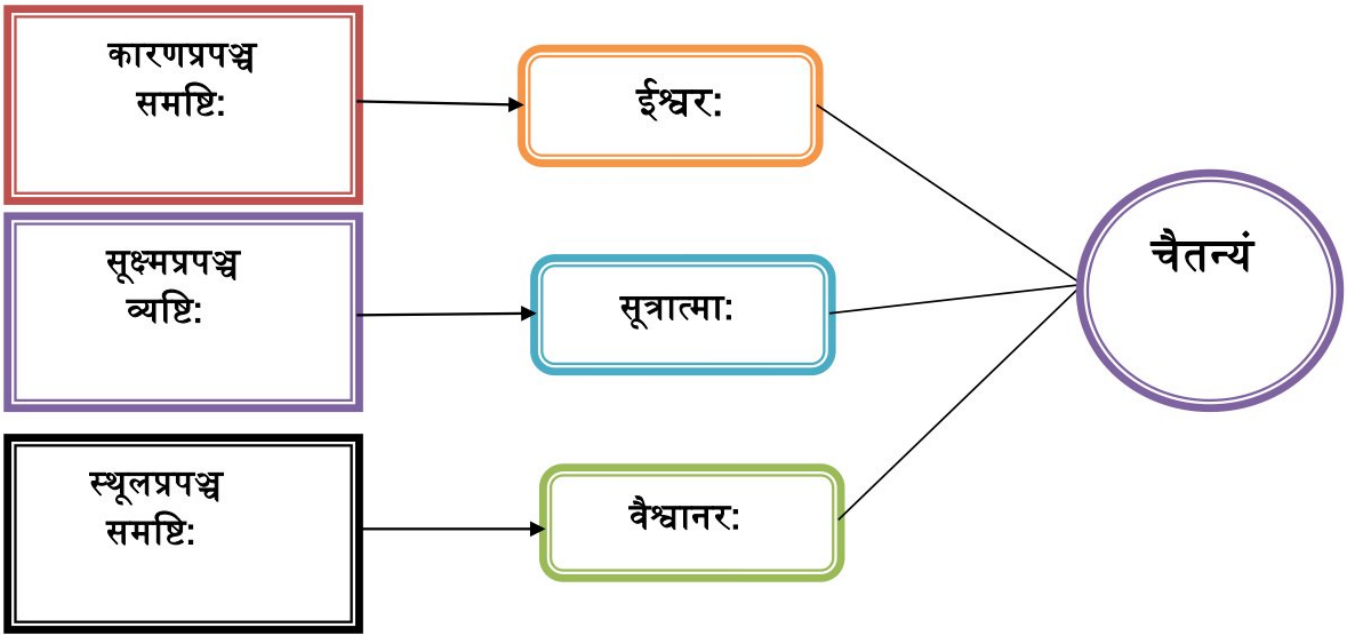

सृष्टि विलयस्य - (अपवाद प्रक्रिया)

तथाहि एतद् भोगायतनं चतुर्विधसकलस्थूलशरीरजातं एतद् भोग्य रूपात्रपानादिकम् एतद् आयातनभूतंभूरादिचतुर्दशभुवनान्येतदायतनभूतं ब्रह्माण्डं चैतत्सर्वमेंतेषां कारणरूपं पंचीकृतभूतमात्रमं भवति। एतानि शब्दादिविषयसाहितानिपंचीकृतानिभूतानिसूक्ष्मशरीरजातंचैतत्सर्वमेंतेषांकारणरूप अपंचीकृतभूतमात्रं भवति।[58]

हिन्दी अनुवाद इस प्रकार ये भोग का आश्रयस्थल चतुर्विध सकल शरीरों का समुदाय,यह भोग करने योग्य अन्न-पान आदि,इन सबके आश्रयभूत भू आदि चौदह भुवन तथा उनका आधार भूत ब्रह्मांड- ये सब इनके कारण पंचीकृत भूतमात्र हो जाते हैं।

[58] वेदान्तसार- १३९,१४०

Scanned with CamScanner

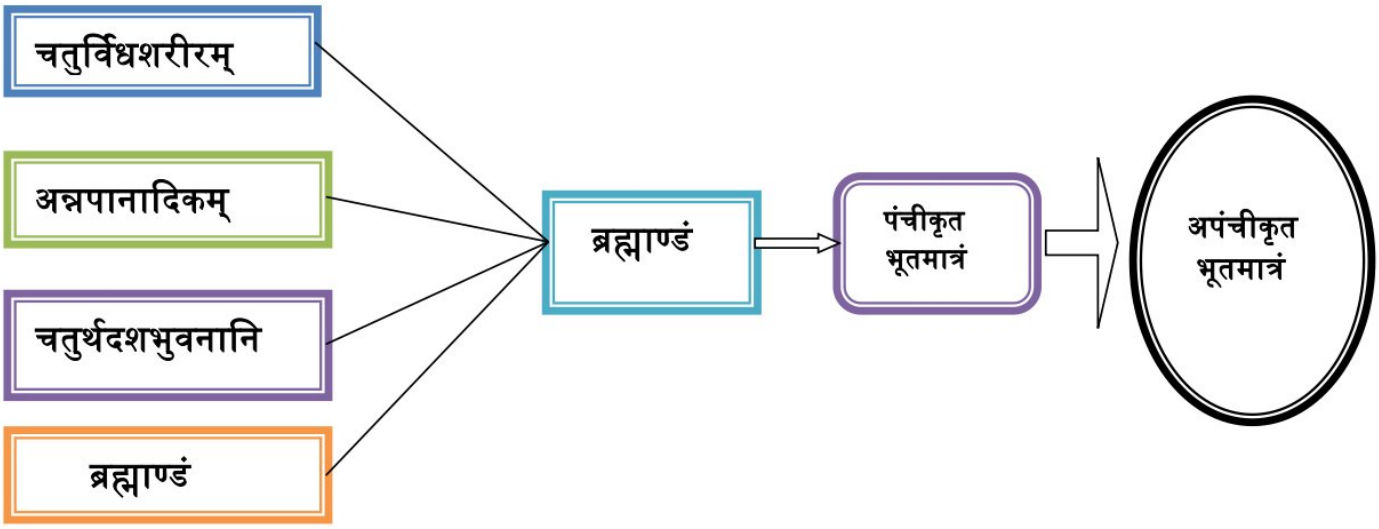

एतानि सत्त्वादिगुणसाहितान्य अपंचीकृतान्युत्पत्तिव्युत्क्रमेंण एतत्कारणभूतअज्ञानोपहितं चैतन्यमात्रं भवति। एतदज्ञानम् ज्ञानोपहितं चैतन्यं चेश्वरादिकम् एतदाधारभूतानुपहितचैतन्यरूपंतुरीयंब्रह्ममात्रं भवति।[59]

हिन्दी अनुवाद

यह सत्त्व आदि गुणों से युक्त अपंचीकृत भूत अपनी उत्पत्ति के उल्टे क्रम से अपने कारण भूत अज्ञानोपहित चैतन्यमात्र हो जाते हैं। यह अज्ञान और अज्ञान से उपहित ईश्वरादि चैतन्य अपना आधारभूत निरुपाधि चैतन्य रूप तुरीय ब्रह्ममात्र हो जाता है।

[59] वेदान्तसार- १४१,१४२

Scanned with CamScanner

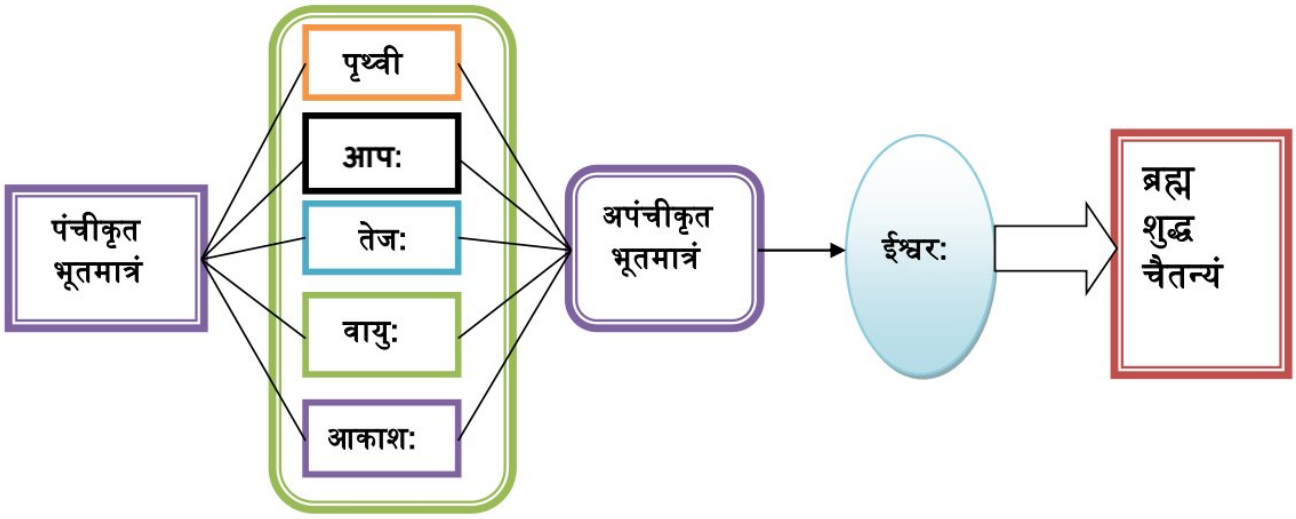

जीवनमुक्ति(मोक्ष)

अथ जीवनमुक्तिलक्षणमुच्यते।
जीवनमुक्तोंनामस्वरूपाखण्डब्राह्मज्ञानेनतदज्ञानबाधनद्वारास्वरूपाखण्डब्राह्मणि साक्षात्कृते अज्ञानतत्कार्यसंचितकर्मसंशयविपर्ययादीनामपि बाधितत्वातदखिलबन्धरहितोब्रह्मनिष्ठ:।
भिद्यते ह्रदयग्रंथिशिच्द्यंते सर्वसंशया:।
क्षीन्यते चास्य कर्माणि तस्मिन्द्रष्टे परावरे । । इत्यादिश्रूते [60]

हिन्दी अनुवाद

अब जीवन मुक्ति का लक्षण बताते हैं। उस ब्रह्म ज्ञान के द्वारा उसमें स्थित अज्ञान को दूर करके, अपने ही स्वरूप अखण्ड ब्रह्म का साक्षात्कार होने पर, अज्ञान के कारण और अज्ञान की दशा में किए गये एकत्रित कर्म,संदेह,विपर्यय,आदि

[60] वेदान्तसार- २१५,२१६,२१७

Scanned with CamScanner

को समाप्त करके तथा सभी बन्धनों से रहित होकर ब्रह्मनिष्ठ रहने वाला पुरुष जीवन मुक्त कहलाता है।

श्रुति इस विषय में कहती है कि जब साधक परावर अर्थात सर्वत्र व्याप्त ब्रह्म को देख लेता है,उसका साक्षात्कार कर लेता है,तब वह जीवनमुक्त दशा को प्राप्त हो जाता है। उस सर्वव्यापक ब्रह्म का साक्षात्कार कर लेने पर जीवन मुक्त साधक के मन की गाँठ खुल जाती है। सभी संशय छिन्न-छिन्न हो जाते हैं तथा उसके सभी कर्म संचित, भुक्त एवं क्रियमाण समाप्त हो जाते हैं।

Scanned with CamScanner

(ख)कुर्आन में प्रतिपादित तत्त्व-मीमांसा का स्वरूप

अल्लाह

(बिस्मिल्लाह हिर्ररहमान अर्रहीम)

हिन्दी अनुवाद- शुरू अल्लाह का नाम लेकर जो बड़ा मेंहरबान और रहम करने वाला है।

وَلِلَّهِ ٱلْمَشْرِقُ وَٱلْمَغْرِبُ ۚ فَأَيْنَمَا تُوَلُّواْ فَثَمَّ وَجْهُ ٱللَّهِ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ وَقَالُواْ ٱتَّخَذَ ٱللَّهُ وَلَدًا ۗ سُبْحَٰنَهُۥ ۖ بَل لَّهُۥ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ كُلٌّ لَّهُۥ قَٰنِتُونَ بَدِيعُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ وَإِذَا قَضَىٰٓ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُۥ كُن فَيَكُونُ [61]

(वलिल्लाहिल मशरिकू वलमगरीबु फअइनमा तुवल्लू फसम्मा वजहुल्लाहि इन्नल्लाहा वासेउन अलीम। वकालुत्तखाज़ल्लाहा वलादन सुबहानहु बल लहू माफिस्समावाते वल अरदे कुल्लू लहू कानेतून। बदीउस्समावाते वल अर्द वइज़ा कज़ा अमरन फाइन्नमा यकुलु लहु कुन फ़्याकुन।)

हिन्दी अनुवाद

मशरिक़ और मगरिब सब अल्लाह ही का है,तो जिधर भी तुम रुख करो उधर ही अल्लाह की ज़ात है। बेशक अल्लाह साहिवे वसत है,बाख़बर(ज्ञानी) है, और ये लोग इस बात के क़ायल है कि अल्लाह औलाद रखता है। नहीं वो पाक है, बल्कि जो कुछ असमानों और ज़मीन में है सब उसी का है,और सब उसके फरमावरदार हैं। वही असमानों और ज़मीन को पैदा करने वाला है,और जब कोई काम करना चाहता है तो उसको इरशाद फरमाता देता है 'कि हो जा तो वो हो जाता है'।

---

[61] पारा.०१ सूरह- अल बकरा आयत.115,116,117

Scanned with CamScanner

صِبْغَةَ ٱللَّهِ ۖ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ ٱللَّهِ صِبْغَةً ۖ وَنَحْنُ لَهُۥ عَٰبِدُونَ[62]

(सिबगतल्लाही वमन अहसनु मिनल्लाही सिबगतन व नहनु लहू आबेदून।)

हिन्दी अनुवाद

कह दो कि हमने अल्लाह का रंग इख़्तियार कर लिया है,और अल्लाह से बेहतर रंग किसका हो सकता है। और हम उसी की इबादत करने वाले है।

ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلْحَىُّ ٱلْقَيُّومُ ۚ لَا تَأْخُذُهُۥ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ ۚ لَّهُۥ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِى ٱلْأَرْضِ ۗ مَن ذَا ٱلَّذِى يَشْفَعُ عِندَهُۥٓ إِلَّا بِإِذْنِهِۦ ۚ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۖ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَىْءٍ مِّنْ عِلْمِهِۦٓ إِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ ۖ وَلَا يَـُٔودُهُۥ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ ٱلْعَلِىُّ ٱلْعَظِيمُ[63]

(अल्लाहु लाइलाहा इल्ला हुवा अल हय्यियुल कय्युम लताखुजू सिनातुन वला नौम लहु माफ़ीस्समावाते वमा फिल अर्द मन जल्लजी यशफऊ इंदहु इल्ला बे इज़निह यालमु मा बइना अईदिहिम वमा खलफ़ाहुम वला युहीतूना बेशयीइन मिन इल्मीही इल्ला बिमा शाअ वसेअ कुरसे यूहुस्समावाते वलअर्द वला यऊदुहू हिफ़्ज़ोहुमा वहुवल अलीयुल अज़ीम।)

हिन्दी अनुवाद

अल्लाह वो माबूदे बरहक है, उसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, वह ज़िंदा है, सब को थामने वाला उसे न नींद आती है और न ऊँग आती है, जो कुछ असमानों और ज़मीन में है, सब उसी का है, कौंन है कि? उसकी इजा़जत के बगैर उससे किसी की सिफ़ारिश कर सके, जो कुछ लोगों के रुबरू हो रहा है,और जो कुछ उसके पीछे हो चुका है, उसे सब मालूम है,और लोग उसकी मालूमात में से किसी चीज़ पर दस्तरस हासिल नहीं कर सकते हाँ जिस कदर वो चाहता है उस

[62] पारा.01 सूरह- अल बकरा आयत.138

[63] पारा.03 सूरह- अल बकरा आयत.255

Scanned with CamScanner

कदर मालूम करा देता है,उसकी बादशाही और इल्म आसमान और ज़मीन सब पर हावी है,और उसे उनकी हिफाज़त कुछ भी दुसवार नहीं वो बड़ा आली रुतवा है जलीलुल कद्र है।

تُولِجُ ٱلَّيْلَ فِى ٱلنَّهَارِ وَتُولِجُ ٱلنَّهَارَ فِى ٱلَّيْلِ ۖ وَتُخْرِجُ ٱلْحَىَّ مِنَ ٱلْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ ٱلْمَيِّتَ مِنَ ٱلْحَىِّ ۖ وَتَرْزُقُ مَن تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ[64]

(तूले जूल्लइला फिन्नाहारे वतूलेजुन्नाहारा फ़िल्लइले वतुखरे जुल हय्या मिनल मय्यिते वतुखरेजुल मय्यिता मिनल हय्ये वतरजुकू मन तशाउ बेगइरे हिसाब।)

हिन्दी अनुवाद

(ऐ-अल्लाह) तू रात को दिन में दाखिल करता और तू ही दिन को रात में दाखिल करता है, तू ही बेजान से जानदार पैदा करता है,और तू ही जानदार से बेजान पैदा करता है,और तू ही जिसको चाहता है बे हिसाब रिज्क़ देता है।

إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِۦ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَآءُ ۚ وَمَن يُشْرِكْ بِٱللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَٰلًۢا بَعِيدًا[65]

(इनल्लाह ल यगफिरू अन युशरका बिही व यगफिरु मा दूना जालिका लिमईं यशाऊ व मन युशरिक बिल्लाही फकद जल्ला जलालन बईदा।)

हिन्दी अनुवाद

अल्लाह इस गुनाह को नहीं बख्शेगा(माफ) कि किसी को उसका शरीक बनाया जाए और उसके सिवा दूसरे गुनाह जिसको चाहेगा माफ कर देगा और जिस ने अल्लाह के साथ शरीक (साझा) बनाया तो बेशक वो रास्ते से दूर जा पड़ा ।

---

[64] पारा न.03 सूरह अल- इमरान आयत.27

[65] पारा 05 सूरह अल निशा आयत -116

Scanned with CamScanner

ذَٰلِكُمُ ٱللَّهُ رَبُّكُمْ ۖ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ خَٰلِقُ كُلِّ شَىْءٍ فَٱعْبُدُوهُ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ وَكِيلٌ[66]

(ज़ालेकुम्मुल्लाह रब्बोकुम ला इलाहा इल्लाहुवा खालेकु कुल्ला शयीइन फअबुदुहु व हुवा अला कुल्ले शयीइन वकील)

हिन्दी अनुवाद

यही (औसाफ रखने वाला) अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार है उसके सिवा कोई माबूद नहीं वही, हर चीज़ का पैदा करने वाला है तो उसी की इबादत करो और वो हर चीज़ का निगेराह(देखने वाला) है।

وَلِلَّهِ غَيْبُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۚ وَمَآ أَمْرُ ٱلسَّاعَةِ إِلَّا كَلَمْحِ ٱلْبَصَرِ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ[67]

(व लिल्लाहे गईबुस्समावाते वल अर्द वमा अमरुस्सअते इल्ला कलम्हिल बसरे औ हुवा अकरबू इन्नल्लाहा अला कुल्ले श्यीइन क़दीर।)

हिन्दी अनुवाद

और असमानों और ज़मीन का भेद अल्लाह ही के पास है और अल्लाह के नज़दीक कयामत का आना यू है जैसे आँख का झपकना बल्कि उससे से भी जल्दतर,कुछ शक नहीं अल्लाह हर चीज़ पर कादिर(शक्तिशाली) है।

---

[66] पारा 07 सूरह- अनआम, आयत 102

[67] पारा 14 सूरह - नहल, आयत 77

Scanned with CamScanner

لَوْ كَانَ فِيهِمَآ ءَالِهَةٌ إِلَّا ٱللَّهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحَـٰنَ ٱللَّهِ رَبِّ ٱلْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ[68]

(लौ काना फ़िहिमा आलेहतुन इल्ला लफ़सदता फ़सुबहानल्लाहि रब्बिल अरशे अम्मा यसेफ़ून।)

हिन्दी अनुवाद

अगर आसमान और ज़मीन में अल्लाह के सिवा और माबूद(साझेदार) होते तो ज़मीन और आसमान दरहम-दरहम(उलट-पुलट) हो जाते, जो बाते ये लोग बनाते है तो अल्लाह जो मालिके अर्श है उन बातों से पाक है।

ٱللَّهُ يَبْدَؤُا۟ ٱلْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُۥ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ
وَيَوْمَ تَقُومُ ٱلسَّاعَةُ يُبْلِسُ ٱلْمُجْرِمُونَ[69]

(अल्लाहु यबदउल खल्का सुम्मा यूईदुहु सुम्मा इलईहे तुरजऊन व यौमा तकुमुस्सआतु युबले सुल मुजरिमून।)

हिन्दी अनुवाद

अल्लाह ही खलकत(इंसान अन्य सभी) को पहली बार पैदा करता है फिर वही उसको दोबारा पैदा करेगा फिर तुम उसी की तरफ लौट कर जाओगे,और जिस दिन कयामत बरपा (आएगी) होगी गुनहगार न उम्मीद हो जाएगें।

---

[68] पारा 17 सूरह- अमम्बिया आयत- 22

[69] पारा 21 सूरह - रोम आयत-11,12

Scanned with CamScanner

ٱللَّهُ ٱلَّذِى خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۖ هَلْ مِن شُرَكَآئِكُم مَّن يَفْعَلُ مِن ذَٰلِكُم مِّن شَىْءٍ ۚ سُبْحَـٰنَهُۥ وَتَعَـٰلَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ[70]

(अल्लाहुल्लजी ख़लक कुम सुम्मा रजकाकुम सुम्मा युमितोंकुम सुम्मा युहयीकुम हल मिन शुरा क़ाएकुम मन यफअलु मिन ज़ालेकुम मिन शयीइन सुबहानहु व तअला अम्मा युशरेकून।)

हिन्दी अनुवाद

अल्लाह ही तो है जिसने तुमको पैदा किया फिर उसने तुमको रिज्क़(खाना) दिया,फिर तुम्हें मौत देगा,फिर जिन्दा करेगा,भला तुम्हारे बनाए हुये शरीकों में भी कोई ऐसा है जो उन कामों में से कुछ कर सके,वो पाक है,और उसकी शान इनके शरीकों से बुलन्द है।

هُوَ ٱللَّهُ ٱلَّذِى لَآ إِلَـٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ عَـٰلِمُ ٱلْغَيْبِ وَٱلشَّهَـٰدَةِ ۖ هُوَ ٱلرَّحْمَـٰنُ ٱلرَّحِيمُ[71]

(हुवल्ला हुल्लजी ला इलाहा इल्ला हुवा आलेमुल ग़इबे वश्शाहादते हुवर्र रहमानुर्र रहीम ।)

हिन्दी अनुवाद

वही अल्लाह है,जिस के सिवा कोई माबूद नहीं,पोशीदा(छुपा) और ज़ाहिर(दिखा) का जानने वाला,बड़ा मेंहरबान(दयालु)है,निहायत रहम(क्षमावान) वाला है।

---

[70] पारा 21 सूरह- रोम,आयत 40

[71] पारा 28 सूरह- हश्र,आयत 22

Scanned with CamScanner

रूह

وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلرُّوحِ ۖ قُلِ ٱلرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّى وَمَآ أُوتِيتُم مِّنَ ٱلْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا
وَلَئِن شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِٱلَّذِىٓ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهِۦ عَلَيْنَا وَكِيلًا
إِلَّا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ۚ إِنَّ فَضْلَهُۥ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيرًا[72]

(वयस अलू नका अनिररुहु कुलिररूहु मिन अमरी रब्बी वमा ऊतीतुम इल्ला क़लीला। वलाइन शीअना लनज़हबन्ना बिल्लज़ि औहयिना इलयिका सुम्मा लाताजेदू लका बिही अलाइना वकीला। इल्ला रहमतन मिन रब्बिका इन्ना फद़लहू काना अलाइका कबीरा।)

हिन्दी अनुवाद

और तुमसे रूह के बारे में सवाल करते हैं,कह दो कि वो मेंरे परवरदिगार(अल्लाह)का एक हुक्म है,और तुम लोगों को बहुत ही कम इल्म दिया गया है। और अगर हम चाहें तो जो किताब हम तुम्हारी तरफ भेजते हैं,उसे दिलों से मेंहब कर दे,फिर तुम इसके लिए हमारे मुक़ाबले में किसी को मददगार न पाओगे। मगर उसका कायम रहना तुम्हारे परवरदिगार की रहमत है,कुछ शक नहीं की तुम पर उसका बड़ा फज़ल(रहम)है।

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَـٰٓئِكَةِ إِنِّى خَـٰلِقٌۢ بَشَرًا مِّن طِينٍ
فَإِذَا سَوَّيْتُهُۥ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِى فَقَعُوا۟ لَهُۥ سَـٰجِدِينَ
فَسَجَدَ ٱلْمَلَـٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ
إِلَّآ إِبْلِيسَ ٱسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ ٱلْكَـٰفِرِينَ[73]

---

[72] पारा 15,सूरह अल-इसरा आयत-85,86,87

[73] पारा 23 सूरह-साद आयत- 71,72,73,74

Scanned with CamScanner

(इज़ क़ाला रब्बुका लिलमलाइकति इन्नी खालेकुन बशरन मिन तीन। फइज़ा सवैतुहु वनाफ़ख़तुहु फ़िही मिन रुही फक़ऊ लहू साजेदीन। फसाजदल मलाइ-कतुहु कुल्लोंहुम अजमईन। इल्ला इबलिश इसतक बरा वकाना मिनल काफ़ेरीन।)

हिन्दी अनुवाद

जब तुम्हारे परवरदिगार ने फरिश्तों से कहा कि मैं मिट्टी से इंसान बनाने वाला हूँ,जब मैं उसको दुरुस्त(पूरा) कर लूँ,और उसमें अपनी रूह फूँक दूँ, तो उसके आगे सजदे में गिर पड़ना, तमाम फरिश्तों ने सजदा किया,मगर इबलीश के वो अकड़ बैठा और काफिरों में हो गया।

مِّنَ ٱللَّهِ ذِى ٱلْمَعَارِجِ

تَعْرُجُ ٱلْمَلَـٰٓئِكَةُ وَٱلرُّوحُ إِلَيْهِ فِى يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُۥ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ[74]

(मिनल्लाही ज़िल मअरिज़। तअरुजुल मलाकतु वर्रुहो इलयिहे फि योंमिन काना मिक़दारुहु खमसीना अल्फा सनातिन।)

हिन्दी अनुवाद

(अजाब) जो बुलन्दियों वाले अल्लाह की तरफ से नाज़िल होगा,जिस की तरफ रूह (अल-कुद्दूस) और दूसरे फ़रिश्ते चड़ते है,उस रोज़ नाज़िल(आना) होगा जिसका तूल(समय) पचास बर्ष होगा।

[74] पारा 29 सूरह अल- महरिज़,आयत- 4,5

Scanned with CamScanner

क़ायनात

إِنَّ رَبَّكُمُ ٱللَّهُ ٱلَّذِى خَلَقَ ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ فِى سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ ٱسْتَوَىٰ عَلَى ٱلْعَرْشِ ۖ يُدَبِّرُ ٱلْأَمْرَ ۖ مَا مِن شَفِيعٍ إِلَّا مِنۢ بَعْدِ إِذْنِهِۦ ۚ ذَٰلِكُمُ ٱللَّهُ رَبُّكُمْ فَٱعْبُدُوهُ ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ[75]

(इन्ना रब्बाकुमुल्ला हुल्लजि ख़लक़स्समावाते वलअर्ज़ फ़ि सित्तते अय्याम सुम्मस तवा अल्लअर्श युदब्बेरूल अम्रर मा मिन सफ़ीइन इल्ला मिम बअदे इज़निही ज़ालेकुमल्लाहु रब्बोकुम फ़अबुदुह अफ़ला तजक्करुन।)

हिन्दी अनुवाद

तुम्हारा परवरदिगार अल्लाह ही है जिसने आसमान और ज़मीन दोनों को छ: दिन में बनाया फिर अर्श पर जलवा अफ़रोज(रहना) हुआ, वही हर एक काम का इंतजाम करता है,कोई उसके पास उसकी इजाज़त हासिल किए बगैर किसी की सिफ़ारिश नहीं कर सकता,यही अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार है तो इसी की इबादत करो, भला तुम गौर क्यों नहीं करते।

أَوَلَمْ يَرَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا۟ أَنَّ ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنَـٰهُمَا ۖ وَجَعَلْنَا مِنَ ٱلْمَآءِ كُلَّ شَىْءٍ حَىٍّ ۖ أَفَلَا يُؤْمِنُونَ

وَجَعَلْنَا فِى ٱلْأَرْضِ رَوَٰسِىَ أَن تَمِيدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ

وَجَعَلْنَا ٱلسَّمَآءَ سَقْفًا مَّحْفُوظًا ۖ وَهُمْ عَنْ ءَايَـٰتِهَا مُعْرِضُونَ

وَهُوَ ٱلَّذِى خَلَقَ ٱلَّيْلَ وَٱلنَّهَارَ وَٱلشَّمْسَ وَٱلْقَمَرَ ۖ كُلٌّ فِى فَلَكٍ يَسْبَحُونَ[76]

---

[75] पारा 11 सूरह- युनूस आयत- 03

[76] पारा 17 सूरह - अंबिया आयत- 30,31,32,33

Scanned with CamScanner

(अवलम यरल्लज़ीना कफ़ारु अन्नस्समावाते वलअर्दा कानता रतकन फ्फा-तकनाहुमा वजअलना मिनल माए कुल्ला शयीइन हय्यिन अफ़ाला युअमिनून। वज अलना फिल अर्दे रवासिया अन तमिदा बेहिम वज अलना फीहा फ़िज़ाजन सुबुलन लअल्लाहुम याहतदून। व जअलनस्समाआ सक़फन महफूजा व हुम अन आयातेहा मुअरेदून। व हुवल्लजी खलाकल लयिला वन्नाहारा वश्शमशा वल क़मर, कुल्लुन फ़ि फलाकिन यसबहून।)

हिन्दी अनुवाद

क्या अल्लाह को एक न मानने वालों ने नहीं देखा कि आसमान और ज़मीन दोनों मिले हुये थे तो हम ने उनको अलग-अलग कर दिया,और तमाम(सभी) जानदार चीजें हमने पानी से बनायी फिर ये लोग ईमान क्यो नहीं लाते? और हमने ज़मीन में पहाड़ बनाए ताकि वो लोगो को लेकर डोलने ना लगे,और उसमें कुशादा(विशाल) रास्ते बनाए लोग उन पर चलें,और आसमान को महफ़ूज छत बनाया, इस पर भी वो हमारी निशानियों से मुह फैर रहे हैं,और वही तो है जिसने रात और दिन और सूरज और चाँद को बनाया ये सब अपने अपने मदार(परिक्रमा)में तैर रहे हैं।

خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ۖ وَأَلْقَىٰ فِى ٱلْأَرْضِ رَوَٰسِىَ أَن تَمِيدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيهَا مِن كُلِّ دَآبَّةٍ ۚ وَأَنزَلْنَا مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءً فَأَنۢبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ[77]

(खल कस्समावाते बिगैरे अमादिन तराओनहा व अल्का फ़िल अर्दे रवासिया अनतमिदा बेकुम व बस्सा फीहा मिन कुल्ली दाब्बातिन व अंजलना मिनस्समाए माअन फअम बतना फीहा मिन कुल्ली ज़ौजिन करीम।)

हिन्दी अनुवाद

उसी ने असमानों को सुतुनों(खम्बों) के बगैर खड़ा किया जैसा कि तुम देखते हो और ज़मीन में पहाड़ बना कर दिये ताकि वो तुमको लेकर दोड़ने न

[77] पारा-21, सूरह-लुक़मान, आयत-10

Scanned with CamScanner

लगे और उसमें हर तरह के जानवर फैला दिये और हम ही ने आसमान से पानी नाजिल(उतारा) किया फिर उसमें हर किस्म की नफीश(विकसित) चीजें उगायीं।

ٱلَّذِى خَلَقَ سَبْعَ سَمَـٰوَٰتٍ طِبَاقًا ۖ مَّا تَرَىٰ فِى خَلْقِ ٱلرَّحْمَـٰنِ مِن تَفَـٰوُتٍ ۖ فَٱرْجِعِ ٱلْبَصَرَ هَلْ تَرَىٰ مِن فُطُورٍ
ثُمَّ ٱرْجِعِ ٱلْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنقَلِبْ إِلَيْكَ ٱلْبَصَرُ خَاسِئًا وَهُوَ حَسِيرٌ
وَلَقَدْ زَيَّنَّا ٱلسَّمَآءَ ٱلدُّنْيَا بِمَصَـٰبِيحَ وَجَعَلْنَـٰهَا رُجُومًا لِّلشَّيَـٰطِينِ ۖ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ ٱلسَّعِيرِ[78]

(अल्लजी खलका सबअ समा वातिन तिबाका मा तरा फि खल किर्र रहमान मिन तफ़ावुत फ़रजेइल बसर हल तरा मिन फुतून। सुम्मरजेइल बसरा कर्रा तइने यनकलिब ईलइयिकल बसर खासेअउ वहुवा हासिरून। वला क़द जय्यियन्नस्समा अददुनिया बेसमा बिहा वजाअलनाहा रुजूमल लिश्शयातीने वअतदना लहुम अज़ाबस सईर।)

हिन्दी अनुवाद

उसी ने साथ आसमान ऊपर तले बनाएँ, ऐ देखने वाले क्या तू रहमान की तख्लीक(रचना) में कुछ नुक़्स(कमी) देखता है? ज़रा आँख उठा कर देख भला तुझको आसमान में कोई शिगाफ़(सुराक) नज़र आता है? फिर बार-बार नज़र कर तो नज़र हर बार तेरे पास नाकाम और थक कर लौट आएगी। और हमने करीब के असमानों को तारों के चिरागों से ज़ीनत(सजाया) दी,और इनको शैतान के मारने का आला(हथियार) बनाया और उनके लिए दहकती आग का अज़ाब तैयार कर रखा है।

أَلَمْ نَجْعَلِ ٱلْأَرْضَ مِهَـٰدًا ,وَٱلْجِبَالَ أَوْتَادًا ,وَخَلَقْنَـٰكُمْ أَزْوَٰجًا ,وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا
وَجَعَلْنَا ٱلَّيْلَ لِبَاسًا ,وَجَعَلْنَا ٱلنَّهَارَ مَعَاشًا ,وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا
وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَهَّاجًا
وَأَنزَلْنَا مِنَ ٱلْمُعْصِرَٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ,لِّنُخْرِجَ بِهِۦ حَبًّا وَنَبَاتًا
وَجَنَّـٰتٍ أَلْفَافًا[79]

---

[78] पारा 29, सूरह- मूल्क़ आयात-3,4,5

[79] पारा 30 सूरह-नबा, आयत-6,7,8,9,10,11,12,13,14,15,16

Scanned with CamScanner

(अलम नजअल अर्दा मिहादा। वल जिबालों औतादा। व खलक़्नाकुम अजवाजा। वजा अलना नौमा कुम सुबाता। वज़ा अलनल लयिला लिबासा। वज़ा अल न्नहारा माअशा। व बईना फ़ौकाकुम सबअन शिदादा। वज अलना सिराजौ वह्हाजा। व अन जलना मिनल मुअसिराते माअन सज्जाजा। लेनुखरेज़ा विही हब्बाउ वनाबाता। व जन्नातिन अलफाफा।)

हिन्दी अनुवाद

क्या हमने ज़मीन को बिछोना नहीं बनाया? और पहाड़ों को उसकी मेंखे(कीलें) नहीं ठहराया? और हमने तुमको जोड़ा-जोड़ा पैदा किया,और नींद को तुम्हारे लिए मुजबे(जरूरी चीज) आराम बनाया,और रात को पर्दा मुकरर किया, और दिन को मआश(जीविका)का वक़्त करार दिया,और तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत आसमान बनाए,और आफ़ताब(सूरज) का रोशन चिराग़ बनाया,और निचुड़ते बादलों से मूसलाधार मेंव(वर्षा) बरसाया,ताकि हम उससे अनाज और नबादात पैदा करें,और घनें-घनें बाग।

وَهُوَ ٱلَّذِى أَنزَلَ مِنَ ٱلسَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِۦ نَبَاتَ كُلِّ شَىْءٍ فَأَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا وَمِنَ ٱلنَّخْلِ مِن طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَجَنَّـٰتٍ مِّنْ أَعْنَابٍ وَٱلزَّيْتُونَ وَٱلرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَغَيْرَ مُتَشَـٰبِهٍ ۗ ٱنظُرُوٓا۟ إِلَىٰ ثَمَرِهِۦٓ إِذَآ أَثْمَرَ وَيَنْعِهِۦٓ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكُمْ لَـَٔايَـٰتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ[80]

(व हुवल्लजी अनजला मिनस्समाए माअन फअखरजना बिही नबाता कुल्ली शयीइन फअखरजना मिनहु खदेरन नुखरेजु मिनहु हब्बन मुताराकेबऔं व मिनल नखले मिन तलएहा किनवानुन दानियातुन व जन्नातिन मिन अनाबिन वज्जयेतूना व रुम्माना मुशताबेहन व गैरा मुताशाबेहिन उनजुरु इला समारीही इज़ा असमरा व यनइही इन्ना फी ज़ालेकुम ल आयातिन लेकौमिन युअमिनून।)

[80] पारा 07, सूरह- अनआम आयत- 99

Scanned with CamScanner

हिन्दी अनुवाद

और वही तो है जो आसमान से मेंव बरसाता है,फिर हम ही जो मेंव बरसाते है,उससे हर तरह के नबादात उगाते हैं,फिर उसमें से सब्ज़-सब्ज़ पौधे निकालते है,और उन पौधो से एक दूसरे के साथ जुड़े हुये दाने निकालते हैं, और खजूर के गावे में से लटकते हुये गुच्छे और अंगूरों के बाग और जेतून और अनार जो इस दूसरे से मिलते जुलते भी है और नहीं भी मिलते है,ये चीजें जब फलती है तो इनके फलों पर और जब पकती है तो इनके पकने पर नज़र करो, इनमें उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं अल्लाह की कुदरत की बहुत सी निशानियाँ है।

وَهُوَ ٱلَّذِى يُرْسِلُ ٱلرِّيَـٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ يَدَىْ رَحْمَتِهِۦ ۖ حَتَّىٰٓ إِذَآ أَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنَـٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَنزَلْنَا بِهِ ٱلْمَآءَ فَأَخْرَجْنَا بِهِۦ مِن كُلِّ ٱلثَّمَرَٰتِ ۚ كَذَٰلِكَ نُخْرِجُ ٱلْمَوْتَىٰ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ[81]

(व हुवल्लजी युरसिलुर-रियाहा बुशरन बैना यादई रहमतीही हत्ता इज़ा अक्ललत सहाबन सिकालन सुकनाहु ले बलादिम मय्यितिन फअनजलना बेहिल माअ फ अखरजना बिही मिन कुल्ली समाराते कजालिका नुखरेजुल मौऊता लअल्लाकुम तजक्कारुन।)

हिंदी अनुवाद

और वही तो है जो अपनी रहमत यानि बारिश से पहले हवाओं को खुशखबरी बनाकर भेजता है, यहाँ तक कि वो भारी-भारी बादलों को उठा लाती हैं,तो हम उसको एक मरी हुई बस्ती की तरफ हाँक देते हैं,फिर बादल से बारिश बरसाते है,फिर बारिश से हर तरह के फल पैदा करते है,इसी तरह हम मुर्दों को ज़मीन से ज़िंदा करके बाहर निकालेंगे,ये आयतें इस लिए बयान की जाती हैं,ताकि तुम नसीहत हासिल करो।

[81] पारा 08, सूरह- आराफ़, आयत- 57

Scanned with CamScanner

ٱللَّهُ ٱلَّذِى رَفَعَ ٱلسَّمَـٰوَٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ۖ ثُمَّ ٱسْتَوَىٰ عَلَى ٱلْعَرْشِ ۖ وَسَخَّرَ ٱلشَّمْسَ وَٱلْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَجْرِى لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ يُدَبِّرُ ٱلْأَمْرَ يُفَصِّلُ ٱلْـَٔايَـٰتِ لَعَلَّكُم بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوقِنُونَ

وَهُوَ ٱلَّذِى مَدَّ ٱلْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَٰسِىَ وَأَنْهَـٰرًا ۖ وَمِن كُلِّ ٱلثَّمَرَٰتِ جَعَلَ فِيهَا زَوْجَيْنِ ٱثْنَيْنِ ۖ يُغْشِى ٱلَّيْلَ ٱلنَّهَارَ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَـَٔايَـٰتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ

وَفِى ٱلْأَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجَـٰوِرَٰتٌ وَجَنَّـٰتٌ مِّنْ أَعْنَـٰبٍ وَزَرْعٌ وَنَخِيلٌ صِنْوَانٌ وَغَيْرُ صِنْوَانٍ يُسْقَىٰ بِمَآءٍ وَٰحِدٍ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلَىٰ بَعْضٍ فِى ٱلْأُكُلِ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَـَٔايَـٰتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ[82]

(अल्लाहुल्लजी रफाअस्समावाते बेगैरे अमादिन तरौनहा सुम्मस तवा अल्ल अर्शे व सख्खारश्शमसा वल क़मर कुल्लुन यजरी लेअजालिन मुसम्मा युदब्बेरुल अमरू युफस्सेलुल आयाते लअल्लाकुम बेलेकाये रब्बेकुम तूकेनून। व हुवल्लजी मद्दल अर्दा व जअल फीहा रवासिया व अनहारन व मिन कुल्लिस्समाराते जअल फीहा जाऊजेनिस नयिन युगसिल्लयिलन्नहार इन्ना फी ज़ालेका लआयातिल लेकौमिन यताफक्करून। व फिल अर्दे क़िताउन मुतजावेरातुन व जन्नातुन मिन अनाबिन व जरउन व नखिलुन सिनवानुन व गैरुन सिनवानिन युसका बे-माइन व हेदिन व नुफद्देलु बअदाहा अला बअदिन फिल उकूल इन्ना फ़ि ज़ालिका लाआयातिल लेकौमिन याकेलून।)

हिन्दी अनुवाद

अल्लाह वही तो है,जिसने सुतुनों के बगैर आसमान, जैसा कि तुम देखते हो इतने ऊँचे बनाये, फिर अर्श पर जलवा अफ़रोज हुआ,और सूरज और चाँद को काम में लगा दिया,हर एक-एक मियादे मुय्यन(समय सीमा) तक गर्दिश कर रहा है,वही दुनियाँ के कामों का इंतेजाम करता है,इस तरह वो अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करता है,कि तुम अपने परवरदिगार के रु-बरु हो जाने का यकीन करो। और वही है जिसने ज़मीन को फैलाया और पहाड़ और दरिया पैदा किए, और हर

[82] पारा 13, सूरह- राअद, आयत-2,3,4

Scanned with CamScanner

तरह के मेंवे की दो-दो किस्मे बनाई,वही रात को दिन का लिबास पहनाता है,गौर करने वालों के लिए इसमें बहुत सी निशानियाँ हैं। और ज़मीन में कई तरह के किताआत है,एक दूसरे से मिले हुये और अंगूर के बाग़ और खेती और खजूर के दरख़्त, बाज़ की बहुत सी शाखें है,और बाज की इतनी नहीं होती ब वजूद ये कि पानी सबको एक ही मिलता है और हम बाज़ मेंवों को बाज़ पर लज्जत में फ़ज़ीलत देते हैं,और इसमें समझने वालों के लिए बहुत सी निशानियाँ है।

इंसान

وَٱللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّن مَّآءٍۖ فَمِنْهُم مَّن يَمْشِى عَلَىٰ بَطْنِهِۦ وَمِنْهُم مَّن يَمْشِى عَلَىٰ رِجْلَيْنِ وَمِنْهُم مَّن يَمْشِى عَلَىٰٓ أَرْبَعٍۚ يَخْلُقُ ٱللَّهُ مَا يَشَآءُۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ[83]

(वल्लाहु ख़लक़ कुल्ला दब्बातिन मिन माइन फमिन हुम मन यमशी अला बतनी व मिनहुम मन यमशी अला रिजलइने व मिन हुम मन यमशी अला अरबाइन यखलुकुल्लाहु मा यशा इन्नाल्लाहा अला कुल्ले शयीइन कदीर।)

हिन्दी अनुवाद

और अल्लाह ही ने हर चलने फिरने वाले जानदार को पानी से पैदा किया,तो उनमें से बाज़ ऐसे है,कि पेट के बल चलते हैं,और बाज ऐसे हैं,कि दो पाँव पर चलते हैं,और बाज़ ऐसे जो चार पाँव पर चलते है,अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर कादिर(मालिक) है।

[83] पारा-18, सूरह- अल नूर, आयत- 45

Scanned with CamScanner

فَٱسْتَفْتِهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَم مَّنْ خَلَقْنَآ ۚ إِنَّا خَلَقْنَٰهُم مِّن طِينٍۭ لَّازِبٍ[84]

(फ़स-तफ़तेहिम अहुम असद्दू खलकन अम मन खलकना इन्ना खलकनाहुम मिन तीनिन लाजिब।)

हिन्दी अनुवाद

तो इनसे पूँछों इनका बनाना मुश्किल है,या जितनी खल्क़त हमने बनाई है उसका? इनको हमने चिपकने वाले गारे से बनाया।

هُوَ ٱلَّذِى خَلَقَكُم مِّن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوٓاْ أَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُونُواْ شُيُوخًا ۚ وَمِنكُم مَّن يُتَوَفَّىٰ مِن قَبْلُ ۖ وَلِتَبْلُغُوٓاْ أَجَلًا مُّسَمًّى وَلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ
هُوَ ٱلَّذِى يُحْىِۦ وَيُمِيتُ ۖ فَإِذَا قَضَىٰٓ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُۥ كُن فَيَكُونُ[85]

(हुवल्लजी खलकाकुम मिन तुराबिन सुम्मा मिन नुतफ़तिन सुम्मा मिन अलाकतिन सुम्मा युखरेजूकुम तिफ़लन सुम्मा लेतबलुगु असुद्दाकुम सुम्मा ले तकूनू शुयुखन व मिनकुम मन युतावफ़्फ़ा मिन कबलु व लेतबतगु अजालन मुसम्मा व लअल्लाकुम तअक़ेलून। हुवल्लजी युहयी व युमीत फइज़ा क़ज़ा अमरन फइन्नमा यकूलु लहु कुन फ़्याकून।)

हिन्दी अनुवाद

वही तो है जिसने तुमको पहले मिट्टी से पैदा किया,फिर नुत्फ़ा बनाकर,फिर लोथड़ा बनाकर,फिर तुमको बच्चा बनाकर निकालता है,फिर तुम अपनी जवानी को पहुँते हो,फिर बुढ़े हो जाते हो,और कोई तुम में से पहले ही मर जाता है,आख़िर तुम मौत के वक्त तक पहुँच जाते हो और ताकि तुम समझों। वही तो

---

[84] पारा-23, सूरह- अल सफ़्फ़ात, आयत- 11

[85] पारा- 24, सूरह : अल- मुअमीनून, आयत-67,68

Scanned with CamScanner

है, जो ज़िंदगी और मौत देता है,फिर जब वो कोई काम करना यानि किसी को पैदा करना चाहता है,तो उससे कह देता है कि 'हो जा' तो वो हो जाता है।

خُلِقَ مِن مَّآءٍ دَافِقٍ
يَخْرُجُ مِنۢ بَيْنِ ٱلصُّلْبِ وَٱلتَّرَآئِبِ[86]
(खुलेक़ा मिम्माइन दाफ़िक़। यखरुजू मिम बैनिस्सुल्वे वत्तराइब।)

हिन्दी अनुवाद

वो उछलते हुये पानी से पैदा हुआ है,जो पीठ और सीने के बीच में से निकलता है।

إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ عِندَ ٱللَّهِ كَمَثَلِ ءَادَمَ ۖ خَلَقَهُۥ مِن تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُۥ كُن فَيَكُونُ[87]
(इन्ना मसला ईसा इंदल्लाहे कमासले आदम खलकाहु मिन तुराबिन सुम्मा काला लहु कुन फ़्याकून)

हिन्दी अनुवाद

ईसा का हाल अल्लाह के नज़दीक आदम का सा है,कि उसने पहले उनको मिट्टी से उनको बनाया फिर फरमाया कि बा शहूर इंसान हो जा,तो ऐसे ही हो गया।

هُوَ ٱلَّذِى خَلَقَكُم مِّن طِينٍ ثُمَّ قَضَىٰٓ أَجَلًا ۖ وَأَجَلٌ مُّسَمًّى عِندَهُۥ ۖ ثُمَّ أَنتُمْ تَمْتَرُونَ[88]
(हुवल्लजी ख़लाका कुम मिन तीनिन सुम्मा कज़ा अजालन व अजालुन मुसम्मन इनदहु सुम्मा अंतुम तमतरून)

---

[86] पारा-30, सूरह- तारिक, आयत-6,7

[87] पारा-03, सूरह : आले-इमरान, आयत-59

[88] पारा 07, सूरहः अन्आम आयत-02

Scanned with CamScanner

हिन्दी अनुवाद

वही तो है,जिसने तुमको मिट्टी से पैदा किया, फिर मरने का एक वक़्त मुकर्रर(निश्चित) कर दिया,और एक मुद्दत उसके यहाँ और मुकर्रर है, फिर भी तुम ऐ काफ़िरो शक करते हो।

قُل لَّآ أَمْلِكُ لِنَفْسِى ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَآءَ ٱللَّهُ ۗ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۚ إِذَا جَآءَ أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَـْٔخِرُونَ سَاعَةً ۖ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ[89]

(क़ुल ला अमलेकू ले नफ़्सि ज़र्रन वला नफ़अन इल्ला माशा अल्लाह लेकुल्ली उम्मतिन अजालुन इज़ा जाआ अजालोहुम फला यसताखेरुन सअतन वला यसतक़देमून।)

हिन्दी अनुवाद

कह दो कि मैं तो अपने नुक़सान और फायदे का भी कुछ इख्त्यार(अधिकार) नहीं रखता,मगर जो अल्लाह चाहे,हर एक उम्मत के लिए मौत का एक वक़्त मुक़र्रर है,जब वो वक़्त आ जाता है तो एक घड़ी भी देर नहीं कर सकते,और न जल्दी कर सकते हैं।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا ٱلْإِنسَـٰنَ مِن صَلْصَـٰلٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ
وَٱلْجَآنَّ خَلَقْنَـٰهُ مِن قَبْلُ مِن نَّارِ ٱلسَّمُومِ
وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَـٰٓئِكَةِ إِنِّى خَـٰلِقٌۢ بَشَرًا مِّن صَلْصَـٰلٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ
فَإِذَا سَوَّيْتُهُۥ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِى فَقَعُوا۟ لَهُۥ سَـٰجِدِينَ[90]

---

[89] पारा-11, सूरह- यूनुश, आयत -49

[90] पारा-14,सूरह-हिज्र, आयत-26,27,28,29

Scanned with CamScanner

(वलाक़द खलकनल इंसाना मिन सल-सालिन मिन हमाइन मसनून। वल जान्ना ख़लक़नाहु मिन क़बलु मिन नारिस समूम। व इज़ काला रब्बुका लिल मलायेकते इन्नी खालेकुन बशारन मिन सल-सालिन मिन हमाइन मसनून। फ इज़ा सव्वैतुहु वना फ़खतु फीही मिनरुही फकाऊ लहू साजेदीन।)

हिन्दी अनुवाद

और हमने इंसान को सड़े हुये खन-खनाते गारे से पैदा किया है,और जिन्नों को उससे भी पहले बे-धुए की आग से पैदा किया था,और वो वक़्त काबिले ज़िक्र है जब तुम्हारे परवरदिगार ने फरिश्तों से फरमाया था कि मैं खन-खनाते सड़े हुये गारे से बशर(इंसान) बनाने वाला हूँ,बस जब में उसको दुरुस्त कर लूँ और उसमें अपनी तरफ से रूह फूँक दूँ,तो उसके आगे सजदे में गिर पड़ना।

وَلَقَدْ أَرَيْنَٰهُ ءَايَٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَأَبَىٰ[91]

(वलाक़द अराइनाहु आयातिना कुल्लाहा फ कज्जबा व अबा)

हिन्दी अनुवाद

इसी ज़मीन से हमने तुमको पैदा किया और इसी में हम तुम्हें लौटायेंगे,और इसी से हम तुम्हें दूसरी दफ़ा निकलेंगे।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا ٱلْإِنسَٰنَ مِن سُلَٰلَةٍ مِّن طِينٍ
ثُمَّ جَعَلْنَٰهُ نُطْفَةً فِى قَرَارٍ مَّكِينٍ
ثُمَّ خَلَقْنَا ٱلنُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا ٱلْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا ٱلْمُضْغَةَ عِظَٰمًا فَكَسَوْنَا
ٱلْعِظَٰمَ لَحْمًا ثُمَّ أَنشَأْنَٰهُ خَلْقًا ءَاخَرَ ۚ فَتَبَارَكَ ٱللَّهُ أَحْسَنُ ٱلْخَٰلِقِينَ
ثُمَّ إِنَّكُم بَعْدَ ذَٰلِكَ لَمَيِّتُونَ
ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ تُبْعَثُونَ[92]

---

[91] पारा-16,सूरह - ताहा, आयत-55

[92] पारा-18, सूरह - मुअमिनून, आयत-12,13,14,14,15,16

Scanned with CamScanner

(वला क़द ख़लक़नल इंसाना मिन सुला लतिन मिन तीन। सुम्मा जअलना हु नुत्फ़तन फ़ी करारिम मकीन। सुम्मा ख़लक़न्न-नुतफ़्ता अलाकतन फख़लक़नल अलाकता मुज़्गतन फ खलकनल मुज़्गता इज़ामन फकासौनल इज़ामा लहमन सुम्मा अंशानाहु खलकन आखर फ़्ताबाराकल्लाहु अहसनुल खालेकींन। सुम्मा इन्नाकुम बअदा ज़ालेका ल मय्यितून। सुम्मा इन्नाकुम यौमल क़ियामते तुबअसून।)

हिन्दी अनुवाद

और हमने इंसान को मिट्टी के खुलासे से पैदा किया है,फिर उसको एक मज़बूत और महफूज़ जगह में नुत्फ़ा(वीर्य) बनाकर रखा,फिर हमने लुत्फ़े का लोथड़ा बनाया,फिर लोथड़े की बोटी बनाई,फिर बोटी की हड्डियाँ बनाई,फिर हड्डियों पर गोश्त पोस्त चड़ाया,फिर उसको नयी सूरत में बना दिया,सो बड़ा बरकत वाला है,अल्लाह जो सबसे अच्छा बनाने वाला है,फिर उसके बाद तुम मर जाते हो,फिर कयामत के दिन उठा खड़े किये जाओगे।

Scanned with CamScanner

तृतीय अध्याय
वेदान्तसार एवं क़ुर्आन में प्रतिपादित तत्त्व-मीमांसा का तुलनात्मक अध्ययन

सामान्यतः सनातन धर्म के अनुयायियों में यह मत प्रचलित है कि-संसार में प्रत्येक वस्तु ईश्वरमय है। अर्थात नदी, जल, सूर्य, पत्थर, इत्यादि। दूसरी तरफ इस्लाम धर्म के मानने वाले मुसलमानों का ये यकीन है कि-नदी अल्लाह 'की' है, सूर्य अल्लाह का है, पत्थर अल्लाह का है। दोनों में सिर्फ "का,की" अन्तर दिखाई देता है। मतभेद होना जरूरी है। क्योंकि बिना मतभेद के मानव पूर्ण नहीं हो सकता। मतभेद अधिकार है। यह धार्मिक दृष्टि से भी स्वीकार किया जाता है। परन्तु मन भेद नहीं होना चाहिए। मनभेद होने के बाद समस्या उत्पन्न होने लगती है। उदाहरण के लिए किसी एक छोटे परिवार में रहन-सहन एवं खान-पान को लेकर मतभेद होते है। परन्तु मन भेद नहीं होता। यदि मनभेद हो जाता है तो परिवार बर्बाद हो जाता है। इसी आधार पर हमारा प्यारा देश एक परिवार है,और इस परिवार में अनेक भाई बन्धु हैं। और इनके ईश्वर एवं धर्मों को लेकर अलग-अलग मत है। परन्तु जहाँ समानता दिखाई देती है। वहाँ एक है। किसी भी धर्म को जानने के लिए उसके अनुयायी को नहीं देखना चाहिए। बल्कि उसके धर्म ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिए। अधिकतर लोग अपने धर्म के विषय में अलग-अलग अवधारणा बना कर जीवन व्यतीत कर रहे होते हैं। वर्तमान में धर्म एक विशेष वर्ग के अनुसार चलाया जाता है। वह सभी यह नहीं चाहते की धर्म को सामान्य जन तक पहुँचाया जाए। और सामान्य जन अपने रोज़-मर्रा की जरूरतों को पूरा करने में लगा हुआ है। इसमें लगे रहने से न तो जरूरतें पूरी हो पाती हैं। और न धर्म का ज्ञान प्राप्त कर पाता है। दोनों अवस्था में फँसा रहता है। इन सभी समस्याओं को ध्यान में रखते हुये,दोनों धर्मों की तत्त्वमीमांसा पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है। ताकि भविष्य में आपस में प्रेम की सद्भावना जागृत हो सके। और एक दूसरे के साथ मेल-मिलाप से रहा जाए। कुछ महत्वपूर्ण विषयों की समानताओं का अध्ययन इस प्रकार है।

Scanned with CamScanner

ईश्वर

न तस्य कश्चित्पतिरस्ति लोके न चेशिता नैव च तस्य लिङ्गम् ।
स कारणं करणाधिपाधिपों न चास्य कश्चिज्जनिता न चाधिप: ॥ [93]

हिन्दी अनुवाद

इस लोक (परलोक)में उसका कोई मालिक स्वामी नहीं है। न कोई उसका शासक या उसका चिन्ह ही है। वह सबका कारण है और ज्ञानेन्द्रियाधिष्ठाता जीव का स्वामी है। अर्थात मानव को पैदा करने वाला है। उसका न कोई उत्पत्ति कर्ता है और न स्वामी है।

नैनमूध्व्र न तिर्यञ्चं न मध्ये परिजग्रभत् ।
न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यश: ॥[94]

हिन्दी अनुवाद

उसे ऊपर से इधर-उधर से अथवा मध्य में से कोई भी नहीं पकड़ सकता। जिसका नाम महद्यश है। ऐसे उस ब्रह्म की कोई उपमा(मूर्ति) नहीं है।

अर्थात- निष्कर्ष यह है कि ब्रह्म को न किसी ने पैदा किया है और न उसका कोई बाप है और न बेटा है। और अगर तुम उसको पकड़ना चाहो तो तुमसे बहुत दूर है। पास इतना कि जैसे तुम्हारी साँसें। अत्यन्त दूर होते हुये भी पास है। उस ब्रह्म का न कोई रूप है और न ही कोई मूर्ति है। उसकी तुलना किसी अन्य से नहीं की जा सकती । वह एक मात्र अद्वितीय है।

---

[93] स्वेतास्वेतर उपनिषद् - 06/09

[94] स्वेतास्वेतर उपनिषद् - 04/19

Scanned with CamScanner

अन्धं तम: प्रविशन्ति येअसम्भूतिमुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्या रता: ॥[95]

हिन्दी अनुवाद

जो असम्भूति (प्राकृतिक वस्तुएँ नदी, पहाड़, सूर्य, पत्थर इत्यादि) की उपासना करते हैं वे घोर अन्धकार में प्रवेश करते हैं। और जो सम्भूति (कार्य के बनाई गयी वस्तुए) रत रहते हैं। वे मानों उनसे भी अधिक अंधकार में प्रवेश करते हैं।

अनिरूप्यस्वरूपं यन्मनोवाचामगोचरम्।
एकमेवाद्वयं ब्रह्म नेह ना नास्ति किंञ्चन॥ [96]

हिन्दी अनुवाद

जिसके स्वरूप को किसी ने निश्चित नहीं किया और जो मन वचन का अगोचर है। वही एक अद्वितीय ब्रह्म नित्य है, और सब प्रपंच मिथ्या है।

[95] ईशावाष्योंपनिषद् - 12
[96] विवेकचूड़ामणि - 470

Scanned with CamScanner

अल्लाह

قُلْ هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ ١ ٱللَّهُ ٱلصَّمَدُ
لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ يَكُن لَّهُۥ كُفُوًا أَحَدٌۢ [97]

(कुल हुवल्लाहु अहद अल्लाह हुस्समद लम यलिद वलमयूलद वलम यकुल लहू कुफ़वन अहद)

हिन्दी अनुवाद- "कहो कि वो माबूदे बरहक जिसकी में इबादत करता हूँ अल्लाह है। वह एक है। अल्लाह बेनियाज़ वो न किसी का बाप है और न किसी का बेटा। और कोई उसके बराबर नहीं"।

قُلِ ٱدْعُواْ ٱللَّهَ أَوِ ٱدْعُواْ ٱلرَّحْمَـٰنَ ۖ أَيًّا مَّا تَدْعُواْ فَلَهُ ٱلْأَسْمَآءُ ٱلْحُسْنَىٰ ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَٱبْتَغِ بَيْنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا[98]

(कुलिदउल्लाहा अविद उर्रहमान अइयम मा तदऊ फलहुल असमाउल हुस्ना वला तज़हर बे सलातेका वला तुखाफित बिहा वबतगी बइना ज़ा-लिका सबीला।)

हिन्दी अनुवाद

कह दो कि तुम माबूदे बरहक को अल्लाह के नाम से पुकारो या रहमान के नाम से जिस नाम से पुकारो उसके सब नाम अच्छे हैं। नमाज़ न बुलन्द आवाज़ से पड़ो और न आहिस्ता बल्कि इसके बीच का तरीका निकालो।

---

[97] पारा 30, सूरह - इखलाश

[98] पारा 15, सूरह - इसरा, आयात- 110

Scanned with CamScanner

وَلِلَّهِ ٱلۡأَسۡمَآءُ ٱلۡحُسۡنَىٰ فَٱدۡعُوهُ بِهَاۖ وَذَرُواْ ٱلَّذِينَ يُلۡحِدُونَ فِيٓ أَسۡمَٰٓئِهِۦۚ سَيُجۡزَوۡنَ مَا كَانُواْ يَعۡمَلُونَ[99]

(व लिल्लाहिल असमा उल हुस्ना फद ऊहु बिहा वज़ा रुल्लजीना युल हेदूना फि अस्मा इही सयुजज़ौना मा कानू यअमलून।)

हिन्दी अनुवाद

और अल्लाह के सब नाम अच्छे ही अच्छे हैं तो उसको उन्हीं नामों से पुकारा करो,और जो लोग उसके नामों में कज़ी(मज़ाक उड़ाना) इख्तयार करते हैं उनको छोड़ दो। वो जो कुछ कर रहे हैं। अनकरीब(जल्दी) उसकी सज़ा पायेंगे।

ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَۖ لَهُ ٱلۡأَسۡمَآءُ ٱلۡحُسۡنَىٰ[100]

(अल्लाहु लाइलाहा इल्ला हुवा लहुल अस्मा उल हुस्ना)

हिन्दी अनुवाद

अल्लाह वो मअबूदे बरहक है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं है। उस के सब नाम अच्छे हैं।

---

[99] पारा-09,सूरह- अराफ़, आयत-180

[100] पारा-16, सूरह - ताहा, आयत-08

Scanned with CamScanner

देवता

अग्निमींळे पुरोहितं, यगस्य देवमृत्विजम् ।

होतरम् रत्नधातमम् । ।[101]

हिन्दी अनुवाद

यज्ञ के पुरोहित, दीपमान,देवों को बुलाने वाले ऋत्विक और रत्न धारी अग्नि की मैं स्तुति करता हूँ।

मा नो बधाय हात्नवे जिहीळानस्य रीरध: ।

मा हृणानस्या मन्यवे । ।[102]

हिन्दी अनुवाद

वरुण ! अनादर कर और घातक बनकर तुम हमारा वध नहीं करना। क्रुद्ध होकर हमारे ऊपर क्रोध नहीं करना ।

य: प्रथ्वीं व्यथमानामंदहद् य: पर्वतान्प्रकुपिताँ अरमणात् ।

यो अन्तरिक्षं विममें वरीयो योद्यामस्तम्भनास जनास इन्द्र: ॥[103]

हिन्दी अनुवाद

जिसने काँपती हुई पृथ्वी को स्थिर किया। जिसने उड़ते हुये पहाड़ो को स्थिर किया। जिसने सम्पूर्ण अन्तरिक्ष को नापा और द्यौ को जिसने स्थिर किया, हे लोगों वही इन्द्र है।

---

[101] ऋग्वेद- अग्नि सूक्त- 1/1

[102] ऋग्वेद - वरुण सूक्त -1.25/2

[103] ऋग्वेद - इन्द्र सूक्त - 2.12/2

Scanned with CamScanner

फ़रिश्ते

وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَٰفِظِينَ
كِرَامًا كَٰتِبِينَ[104]

(व इन्ना अलेइकुम लहाफेज़ीन,किरामन कातेबीन।)

हिन्दी अनुवाद

हालाँ कि तुम पर निगेहबान(देख-रेख) मुकर्रर हैं। यानि किरामन,कातेबीन।

مَن كَانَ عَدُوًّا لِّلَّهِ وَمَلَٰٓئِكَتِهِۦ وَرُسُلِهِۦ وَجِبْرِيلَ وَمِيكَىٰلَ فَإِنَّ ٱللَّهَ عَدُوٌّ لِّلْكَٰفِرِينَ[105]
(मन काना अदुवल लिल्लाही व रुसुलेही व ज़िब्रिला व मिक़ाला फ इन्नल लाहा अदुवल लिल काफ़ेरीन ।)

हिन्दी अनुवाद

जो शख्स अल्लाह और उसके फरिश्तों का और पैगंबरों का और जिब्राईल,मीकाईल का दुश्मन हो, तो ऐसे काफ़िरों का अल्लाह दुश्मन है।

---

[104] पारा-30, सूरह- अल इफ़्तार, आयत- 10,11

[105] पारा-02 सुतह- बाकाराह, आयत - 98

Scanned with CamScanner

आत्मा

इयमात्मापरानन्दः परप्रेमास्पदं यतः ।

मा न भूवं हि भूयासमिति प्रेमात्मनीक्ष्यते । ।[106]

हिन्दी अनुवाद

यह ज्ञान आत्मा है और यह परमानन्द स्वरूप भी है। क्योकि यह परम प्रेम का आस्पद(जगह) है।" मैं न रहूँ ऐसा कभी न हो किन्तु मैं सदा बना रहूँ" ऐसा प्रेम आत्मा से सभी करते है।

रूह

وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلرُّوحِ ۖ قُلِ ٱلرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّى وَمَآ أُوتِيتُم مِّنَ ٱلْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا[107]

(वयस अलू नका अनिररुहु कुलिररूहु मिन अमरी रब्बी वमा ऊतीतुम इल्ला क़लीला)

हिन्दी अनुवाद

और(लोग) तुमसे रूह के बारे में सवाल करते हैं,कह दो कि वो मेरे परवरदिगार(अल्लाह)का एक हुक्म है,और तुम लोगों को बहुत ही कम इल्म दिया गया है।

---

[106] पञ्चदशी: - 08

[107] पारा 15,सूरह अल-इसरा आयत-85

Scanned with CamScanner

माया

अव्यक्तनाम्री परमेंश शक्तिरनाद्यविद्या त्रिगुणात्मिका परा ।
कार्यानुमेंया सुधियेव माया यया जगत्सर्वमिदं प्रसूयते । ।[108]

हिन्दी अनुवाद

ईश्वर की जो शक्ति है उसी को माया कहते है,जिसका नाम अनादि,अविद्या,त्रिगुणात्मक,अव्यक्त ये सभी हैं। इस माया का अनुमान कार्य से होता है,जिससे सम्पूर्ण दृश्य जगत उत्पन्न हुआ है।

शैतान

وَلَقَدْ خَلَقْنَـٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنَـٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلَـٰٓئِكَةِ ٱسْجُدُوا۟ لِـَٔادَمَ فَسَجَدُوٓا۟ إِلَّآ إِبْلِيسَ لَمْ يَكُن مِّنَ ٱلسَّـٰجِدِينَ
قَالَ مَا مَنَعَكَ أَلَّا تَسْجُدَ إِذْ أَمَرْتُكَ ۖ قَالَ أَنَا۠ خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِى مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُۥ مِن طِينٍ[109]

(वलाक़द ख़लक़नाकुम सुम्मा सव्वरनाकुम सुम्मा कुलना लिलमलाये कतुसजुदु ले अदमा फ़साजदु इल्ला इब्लीश लमयकुन मिनस्साजेदीन। क़ाला मा मनाअका अल्ला तसजुदा इझ अमरतुका क़ाला अना खईरूम मिनहु ख़लक़तनी मिन्नारिउ व ख़लक़तहु मिन तीन।)

हिन्दी अनुवाद

और हमने तुमको शुरू में मिट्टी से पैदा किया फिर तुम्हारी शक्ल व सूरत बनाई फिर फरिश्तों को हुक्म दिया कि आदम के आगे सज़दा करो तो सबने सज़दा किया लेकीन इबलीश(शैतान) कि वो सज़दा करने वालों में शामिल न हुआ। अल्लाह ने फरमाया जब मैंने तुझको भी सजदा करने का हुक्म दिया था तो किस

---

[108] विवेकचूड़ामणि:- 110

[109] पारा-07, सूरह- अराफ़,आयत-11,12

Scanned with CamScanner

चीज ने तुझे सज़दा करने से रोक रखा था। उसने कहा मैं इससे अफ़जल(अच्छा) हूँ। मुझे तूने आग से पैदा किया है और इसे मिट्टी से बनाया है।

जीवन चक्र

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि ग्रह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही । ।[110]

हिन्दी अनुवाद

जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्याग कर दूसरे नये वस्त्रों का ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्याग कर दूसरे नये शरीरों को प्राप्त होता है।

पैदाइश

ذَٰلِكَ بِأَنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلْحَقُّ وَأَنَّهُۥ يُحْىِ ٱلْمَوْتَىٰ وَأَنَّهُۥ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ
وَأَنَّ ٱلسَّاعَةَ ءَاتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيهَا وَأَنَّ ٱللَّهَ يَبْعَثُ مَن فِى ٱلْقُبُورِ [111]

(ज़ालिका बे अन्नल्लाहा हुवल हक्कू व अन्नाहु यूयिल मौउता व अन्नाहु अला कुल्ले शयिइन क़दीर। व अन्नसआता आतेयतुल लारई बफ़ीहा व अन्नल्लाहा युबअसु मन फ़िल क़ुबूर।)

हिन्दी अनुवाद

इन कुद़रतों से ज़ाहिर है कि अल्लाह ही क़ादिरे मुतलक़ है,जो बरहक है,और ये कि मुर्दों को ज़िंदा कर देता है, और ये कि वो हर चीज़ पर कुद़रत

---

[110] भगवद् गीता - सांख्य योग - 21

[111] पारा- 17 सुरह- हज़, आयत -6,7(1,2,3,4,5)

Scanned with CamScanner

रखता है। और ये कि क़यामत आने वाली है, इसमें कुछ शक नहीं,और ये कि अल्लाह सब लोगों को जो कब्रों में है,जिला उठाएगा।

जीवन मुक्ति

ब्रह्मानन्दरसास्वादासक्ततया यते: ।
अन्तर्बहिरविज्ञानं जीवनमुक्ति लक्षणम् । ।[112]

हिन्दी अनुवाद

ब्रह्मानन्द रस का आस्वादन में आसक्तचित होने से बाह्य और आन्तरिक वस्तु का ज्ञान न होना, केवल ब्रह्मानन्द रस ही का आस्वादन में लीन रहना यह जीवन मुक्त पुरुष का लक्षण है।

जन्नत

إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ لَهُمْ جَنَّٰتٌ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَٰرُ ۚ ذَٰلِكَ ٱلْفَوْزُ ٱلْكَبِيرُ[113]

(इन्नलज़ीना आमनु वअमेंलुस्सुलेहाते लहुम जन्नातिन तजरी मिन ताहतेहल अनहार, ज़ालेकल फ़ौज़ुनल कबीर।)

हिन्दी अनुवाद

जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे,उनके लिए बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरें बेह रही हैं,यही बड़ी कामयाबी है। अर्थात वह हमेंशा-हमेंशा जन्नत में रहेगें और सुविधाओं का लुत्फ़ उठाएगें।

---

[112] विवेकचूड़ामणि: - 436 (430,431,432,433)

[113] पारा- 30 सूरह- बुरुज़, आयत- 11

Scanned with CamScanner

चतुर्थ अध्याय
वेदान्तसार एवं क़ुर्आन में प्रतिपादित तत्त्व-मीमांसा के स्वरूप की आधुनिक परिप्रेक्ष में समीक्षा।

अभिवादन

सनातन धर्म के अनुयायियों में स्नेह बढाने एवं एक दूसरे से संपर्क में रहने के लिए आदरपूर्वक किये जाने वाले अभिवादन को 'नमस्कार' अथवा 'नमस्ते' एवं 'प्रणाम' कहते हैं। यह धर्मों के अनुसार अपना रूप और अर्थ परिवर्तन करता रहता है। वेदान्त के अनुसार अभिवादन की भावना ब्रह्म के आगे नमन करने की है। संसार की प्रत्येक वस्तु ब्रह्म से उत्पन्न हुई है। ठीक इस प्रकार मानव शरीर में ब्रह्म रूपी आत्मा परमात्मा का ही अंश है। जब सनातन धर्म के अनुयायी आपस में एक दूसरे से मिलते तो वह नमस्कार करते हैं। यह नमस्कार पुरुष के अन्दर विद्यमान आत्मा रूपी ब्रह्म को किया जाता है। न की उस सामान्य पुरुष को, वह पुरुष के अन्दर विद्यमान ब्रह्म के सामने अपना सर झुकाता है। यह सूक्ष्म दृष्टि वेदान्तवादी है। सामान्य पुरुष को इसका ज्ञान नहीं होता है। वेदान्त का अध्ययन करने के बाद एक सामान्य पुरुष भी सूक्ष्मदृष्टि के माध्यम से ब्रह्म का साक्षात्कार करता है। नमस्कार शब्द नम: धातु से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ – श्रद्धापूर्वक, एक आत्मा का दूसरी परमात्मा रूपी आत्मा को नमन। अभिवादन अन्य अनेक शब्दों में भी प्रयोग होता है।

अयं आत्मा ब्रह्म[114]

हिन्दी अनुवाद – यह आत्मा ब्रह्म है।

[114] माण्डूक्य उपनिषद् ½ अथर्ववेद

Scanned with CamScanner

सलाम

इस्लाम धर्म में भी जब एक मुसलमान दूसरे मुसलमान भाई से मिलता है, तो उसपर सलाम करना वाज़िब(जरूरी) है। कोई भी इंसान जो इस बात को स्वीकार करता है कि "अल्लाह एक है, हज़रत मुहम्मद, अल्लाह के आखिरी नबी है"। वह इस्लाम धर्म में प्रवेश हो जाता है। और अन्य नियमों का पालन करने के लिए अग्रसर रहता है। इस प्रवेश के आधार पर सारे मुसलमान आपस में एक दूसरे के भाई- भाई हैं। इसमें क्षेत्र, सीमा,जाति या अन्य किसी का कोई मूल्य नहीं होता है। जब भी एक मुसलमान दूसरे मुसलमान से मिलता है तो उस पर सलाम के नियम लागू होते हैं। वह उन नियमों का प्रयोग करता है, या नहीं ये उस पर निर्भर है। मिलने के बाद 'सलाम' करना पहला हक़ है। दूसरा मुसाफ़ा(हाथ मिलाना) करना। सलाम को सही हिसाब से आम तौर पर करना बताया गया है। लेकिन आज के वक़्त सलाम को ख़ास(कम) कर दिया है। अब सलाम उसको किया जाता है, जिससे काम या किसी चीज़ की ज़रूरत होती है। या अपने किसी जानने वाले को, ये भी कयामत की निशानियों में से एक निशानी है। "अल्लाह कुर्आन में कहता है कि जब कोई मुसलमान तुम्हें दुआ दे तो तुम भी उसको और बेहतर कलमें में दुआ दो"।[115]

इससे पता चलता है- सलाम एक दुआ है जो एक मुसलमान दूसरे मुसलमान के लिए करता है। इस्लाम में अल्लाह ही उच्च है। उसका कोई अन्य रूप या सहपाठी नहीं है। इसलिए एक मुसलमान दूसरे मुसलमान के लिए सिर्फ अल्लाह से दुआ कर सकता है लेकिन झुक नहीं सकता, झुका सिर्फ अल्लाह के सामने जाता है। और किसी के नहीं। आप अल्लाह को किसी अन्य के रूप में भी नहीं देख सकते है।

السَّلاَمُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ

(अस्सलामुअलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु)

हिन्दी अनुवाद - आप पर अल्लाह की रहमत और बरक़त हो।

---

[115] पारा-04, सूरह - निशा, आयत -86

Scanned with CamScanner

निष्कर्ष

वेदान्त के अनुसार पुरुष के अन्दर विदमान आत्मा को ब्रह्म अंश के रूप में देख कर उसके आगे झुक कर अभिवादन किया जाता है जबकि इस्लाम में सिर्फ अल्लाह के सामने झुका जाता है। और अभिवादन एवं सलाम के रूप में एक मुसलमान दूसरे मुसलमान के लिए अल्लाह से दुआ करता है। उसके आगे झुकता नहीं है।

देवता

सनातन धर्म में 'देवता' शब्द देने वाले के अर्थ में प्रयोग हुआ है। देने की विशेषता के कारण 'देव' कहलाते है। संसार में जीवन-यापन के लिए पुरुष, प्रकृति के अनेक संसाधनों को देवता के द्वारा प्राप्त करता है। पुरुष के द्वारा देवता को प्रसन्न करने के लिए उनकी पूजा अथवा गुणगान किया जाता है। ताकि वह प्रसन्न होकर अपनी कृपा करें। देवता की कृपा से पुरुष बलशाली एवं धनशाली तथा अन्य कामनाओं को पूर्ण करने वाला बन जाता है। देवताओं से पूजा करके माँग ने की अलग –अलग प्रक्रियायें है। आचार्य यास्क ने निरुक्त में देवताओं का विभाजन तीन प्रकार से किया है। और उनके कार्यों का भी उल्लेख किया है।

तिस्त्र: एव देवता-इति नैरुक्ता ।[116]

अन्तरिक्ष स्थान – इन्द्र(वर्षा करना जलाधिपति),रुद्र आदि।

द्यु स्थान – वरुण(नीति एवं वैद्य),सूर्य,आश्विन आदि।

पृथ्वी स्थान – अग्नि(हवि एवं आहुति),सोम आदि।

---

[116] यास्क निरुक्त- सप्तम अध्याय, द्वितीयपाद- 2

Scanned with CamScanner

फ़रिश्ते

अल्लाह ने फरिश्तों को अपने कामों को पूरा करने के लिए पैदा किया। दुनियाँ के हर अलग-अलग कामों को करने के लिए अलग-अलग फ़रिश्ते लगे हुये है। उनको जितना काम दिया जाता है वह उतना ही करते हैं। न तो ज्यादा और न कम। इस्लाम में फ़रिश्ते अल्लाह के कर्मचारी है। उनको कोई भी अलग से अधिकार प्राप्त नहीं है, कि वह किसी को अपनी मर्ज़ी से कुछ दे सकें। वह अल्लाह के हुक्म के ताबे(मानना) हैं।

एक फ़रिश्ता अदृश्यमयी ताक़तों का मालिक होता है। अल्लाह ने चार बड़े फरिश्तों को कामों में लगा रखा है। उनके नीचे ही सारे छोटे- छोटे फ़रिश्ते काम में लगे हैं। चार बड़े-बड़े फरिश्तें एवं उनके काम निम्न है-

जिब्राइल - अल्लाह के पैगाम को नबियों(दूत) तक पहुँचाना।

इशराफिल – क़यामत(प्रलय) के दिन शूर(नष्ट) फूँकना।

मीकाइल – बारिश और मख़लूक़ (मानव एवं अन्य सभी)तक रोज़ी रोटी पहुँचना।

इज़राइल - मख़लूक़ की रूह(आत्मा) बदन से निकाल कर ले जाना।[117]

निष्कर्ष

वेदान्त के अनुसार देवस्तुति करके अपने कार्यों को किया जा सकता है। प्रत्येक देवता अपने-अपने कार्यों का स्वामी है। देव पूजा उनके प्राकृतिक रूप में ही की जाती है। अधिकतर वैदिक देवता ऐसे हैं जिनकी प्रतिमाएँ नहीं हैं,अपने-अपने कार्य को करने के लिए देवता स्वतंत्र है। जबकि इस्लाम में फरिश्ते अल्लाह के कर्मचारी हैं। यह आश्रित हैं। इनको विशेष दर्जा प्राप्त नहीं है। कि इनके लिए अलग से कुछ नहीं किया जाता, यह सिर्फ अल्लाह के आदेश का पालन करते है।

---

[117] जामिया तिरमिजी,हदीश न.3268,
पारा 02 सूरह- बकरा आयत-98

Scanned with CamScanner

माया

वेदान्त के अनुसार माया का जाल अत्यन्त शक्तिशाली है। माया से भ्रमित मनुष्य सदैव संसार में लिप्त रहता है। माया ब्रह्म की शक्ति होते हुये भी मनुष्यों को ब्रह्म के पास आने से रोक देती है। यह क्षणिक होते हुये भावात्मक है। माया की तुलना अन्धकार से की गयी है। माया को अन्य दूसरे नामों से भी पुकारा जाता है। अविद्या, अज्ञान, भ्रांति,विवर्त आदि। ब्रह्म अपनी माया शक्ति से जगत के अनेक रूप दिखाता है। माया ब्रह्म की अभिन्न शक्ति है। अवस्तु में वस्तु को प्रतीत करना माया की विशेषता है। माया अपने जाल से जीवनचक्र में फ़साँ कर रखती है।[118]

शैतान

क़ुर्आन के अनुसार शैतान अपनी नाफरमानी(आज्ञाकारी) से पहले अल्लाह का आज्ञाकारी था। उसको अल्लाह ने आग से बनाया है। वह बहुत ज्ञानी एवं शक्तिशाली है। उसका ज्ञान अल्लाह को बहुत प्यारा था। अल्लाह की आज्ञा न मानने पर वह शैतान बन गया और अल्लाह ने भी उसको छूट दे दी, कि क़यामत तक तू चाहे तो मेरे बंदो को मेरी इबादत से भटका दे। शैतान अल्लाह के बताए हुये रास्ते पर चलने से इंसान को रोकता है। और दुनिया को ही हक़ीक़त बताता है। शैतान इंसान के साथ रहता है। वह दुनिया के गलत कामों को करने के लिए उगसाता है। शैतान की यह विशेषता है कि वह इंसान को दुनिया और आख़रत(आद्यत्मिक) दोनों जगहों पर कामयाब नहीं होने देता।[119]

निष्कर्ष

वेदान्त में माया और कुर्आन में शैतान दोनों के कार्यों में जगह-जगह समानतायें दिखाई देती है। अतः माया एवं शैतान दोनों जगत को सत्य बताते हैं।

---

[118] वेदान्तसार - 35

[119] सूरह अल-महरिज़ आयत - 4,5

Scanned with CamScanner

ब्रह्म

वेदान्त में ब्रह्म अत्यन्त विशाल एवं सर्वशक्तिमान है। ब्रह्म अपनी शक्ति से माया और ईश्वर को उत्पन्न करता है। माया से जगत की उत्पत्ति होती है,और ईश्वर जगत को संचालित करता है। ब्रह्म स्वतंत्र एवं त्रिकाल अबाधित है। यह मोह,माया,जगत अन्य सभी से लिप्त नहीं होता, ब्रह्म ही वास्तविक सत्य है। सम्पूर्ण संसार के जीव-जन्तु एवं मनुष्य ब्रह्म के ज्ञान एवं उसको प्राप्त करने के लिए उत्सुक रहते हैं। जो भी ब्रह्म के वास्तविक रूप का ज्ञान प्राप्त कर लेता है। वह सत् चित् आनन्द स्वरूप हो जाता है। संसार का आरम्भ और अन्त दोनों ही ब्रह्म है। मनुष्य को ब्रह्म से दूर करने का काम माया करती है। यह मनुष्य को जगत के कार्यों में फ़सा कर रखती है। ताकि मनुष्य ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप को न जान पाये। [120]

अल्लाह

कुर्आन के अनुसार अल्लाह एक मात्र सर्वशक्तिमान है। सब कुछ स्वयं अल्लाह ने बनाया है। और अन्य सभी उसके कर्मचारी हैं। अल्लाह अपने फरिश्तों के द्वारा प्रत्येक वस्तु पर नज़र रखता है। दूसरी तरह से इसे कहते है कि- अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला। अल्लाह मनुष्य के इतने करीब है जैसे- साँसों की दूरी, अल्लाह ने दुनियाँ को बनाया ताकि मनुष्यों को आज़मा(जाँच) सके। कौंन- कौंन मेंरी इबादत एवं बताए हुये रास्ते पर चलता है। और कौंन नहीं चलता। दुनियाँ में मनुष्य स्वतंत्र है। वह सही एवं गलत दोनों कर सकता है। अल्लाह के बताए गए रास्ते पर चलने का फल जन्नत है और बुरे का जहन्नम है।[121]

निष्कर्ष

वेदान्त में ब्रह्म शक्ति एवं आकार के अनुसार जगत संचालन में स्वयं सीधे सक्रिय नहीं रहता है। जबकि कुर्आन के अनुसार अल्लाह ही सब कुछ अपने नियंत्रण में रखता है। दोनों में अनेक स्थानों पर समानता दिखाई देती है।

---

[120] वेदान्तसार - 118

[121] पारा -17 सूरह- अम्बिया आयत - 22

Scanned with CamScanner

जीवन चक्र

वेदान्त के अनुसार मनुष्य का जीवन चक्र उसके ज्ञान एव कर्म पर आधारित है। मनुष्य जीवित रहते हुये, भी जीवन चक्र से मुक्ति पा सकता है। वह जगत के कर्मों में लिप्त रहते हुये जीवन चक्र में फ़सा रहता है। यह क्रिया निरन्तर चलती रहती है। आत्मा को कौंन-से शरीर में प्रवेश होना है, यह पिछले जन्म के कर्मों के आधार पर निर्धारित होता है। मनुष्य की आत्मा अमर होने के कारण, केवल अपने शरीर का त्याग करती है। स्वयं नष्ट नहीं होती है, आत्मा कर्म के अनुसार अनेक जन्मों में से किसी भी जन्म में मनुष्य योनि में प्रवेश हो जाती है मनुष्य योनि के द्वारा ही ब्रह्म का साक्षात्कार करके, आत्मा परमात्मा में विलीन हो जाती है। अतः वेदान्त जन्मों के विषय में कर्म के आधार पर जीवन चक्र को वर्णित करता है। लेकिन वेदों में सिर्फ पुनर्जन्म के विषय में वर्णन मिलता है। [122]

जीवन चक्र(दो जन्म)

कुर्आन के अनुसार अल्लाह ने अपने हुकुम(आदेश) से रूह को बनाया। और इंसान के शरीर को मिट्टी से एवं अन्य तत्वों से बनाकर सक्रिय किया। उसको प्रथम जन्म देकर दुनियाँ में भेजा। दुनियाँ में आना पहला जन्म है। दुनियाँ में रहकर इंसान जो भी कर्म करेगा। उन सभी कर्मों का फल एवं हिसाब किताब के लिए अल्लाह एक बार फिर से दोबारा जन्म देगा। इस्लाम में भी पुनर्जन्म के विषय में आया है। क़यामत के दिन दुनियाँ के पहले इंसान से लेकर अंतिम इंसान को भी अल्लाह एक जगह जमा करेगा। इस दिन सबका हिसाब होगा। इस्लाम में पुनर्जन्म में विश्वास करना अनिवार्य है। यदि कोई पुनर्जन्म में विश्वास नहीं रखता तो वह मुसलमान नहीं है। पुनर्जन्म के बाद मनुष्य अच्छे कर्मो के आधार पर जन्नत और बुरे कर्मों के आधार पर जहन्नम(नर्क) में रहेगा। [123]

निष्कर्ष वेदान्त के अनुसार कर्म के आधार पर अनेक जन्मों का वर्णन प्राप्त होता है,जबकि कुर्आन में दो जन्मों के विषय में बताया गया है। जोकि वैदिक पुनर्जन्म का

---

[122] भगवद् गीता - सांख्ययोग - 21

[123] पारा 21 सूरह - रॉम आयत - 11,12

Scanned with CamScanner

समर्थन करता है। अतः इस आधार पर यह बात सिद्ध होती है की मनुष्य के एक से अधिक जीवन हैं।

आत्मा एवं परमात्मा

वेदान्त के अनुसार आत्मा एवं परमात्मा का अटूट सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध को स्थापित करना वेदान्त दर्शन का उद्देश्य है। आत्मा शरीर से मिलने के बाद विचलित रहती है। वह सदैव सत्य अर्थात परमात्मा से मिलने का प्रयत्न करती है। परन्तु सामान्य जन मानस में सबसे बड़ी समस्या यह है कि वह धन और भोजन एवं शक्ति आधिपत्य के पीछे भागता रहता है। इस संघर्ष में उसकी आयु समाप्त हो जाती है। जब वह मृत्यु के अन्तिम द्वार पर आ जाता, तब वह परमात्मा को याद करता है,प्रत्येक वस्तु को प्राप्त करने के लिए बल और संघर्ष दोनों की आवश्यकता होती है। जब तक शरीर में शक्ति रहती है,तब तक वह अहंकारमय रहता है। माया परमात्मा से मिलने के सारे मार्गों को छुपा कर रखती है। जब यह 'जान' जाती है कि मनुष्य योनि का समय समाप्त होने वाला है। तब वह अपने आवरण को हटा लेती है। उस समय मनुष्य का संसार से स्वार्थ एवं मोह समाप्त हो जाता है। इस कारण से आत्मा जीवन चक्रों में घूमती रहती है और परमात्मा से नहीं मिल पाती। वेदान्तवादी को इन सभी विषयों का पहले से ही ज्ञान होता है वह समय रहते ब्रह्म उपासना में लीन रहता है।[124]

अल्लाह और रूह

कुर्आन के अनुसार अल्लाह ने रूह को अपने हुक्म(आदेश) से पैदा किया। रूह के ज्ञान के बारे में अधिक नहीं बताया। सिर्फ इतना कहा कि तुम इस के बारे में जानने की समझ नहीं रखते। यह तुम्हारे दिमाग की समझ से परे है, अल्लाह ने सारी रूहों से पहले गवाही लेकर फिर उनको दुनिया में इंसानी जिंस्म में डाल कर भेजा। ताकि उन रूहों ने जो वादा अल्लाह से किया है। वह उनको याद रहेगा या फिर भूल जाएगी। जो रूह अल्लाह को भूल कर, उसका शरीक(मित्र) बनाएगी।

[124] वेदान्तसार - 39,134,135

Scanned with CamScanner

अल्लाह उसको सजा देगा। रूह और अल्लाह का गहरा तालुक है। रूह को अल्लाह की इताअत(उपासना) में सुकुन मिलता है। इंसान दुनियाँ में जब तक रहता तब तक वह आज़ाद होता है। अल्लाह से किया गया वादा, उस वादे को पूरा करने का सिर्फ एक मौका है,जिस्म आलम ए खल्क (मिट्टी) के मलबे से बना है। रूह आलम ए अम्र से बनी है। अल्लाह पूरी क़ायनात को ख़त्म करेगा। दुनियाँ से सिर्फ इंसानी रूहों (अरवाह) को उठा लेगा। बाद में बदले के दिन सभी रूहों से(क़यामत) में हिसाब होगा। [125]

निष्कर्ष – वेदान्त के अनुसार परमात्मा ही आत्मा के रूप में स्वयं प्रकट होता है अतः दोनों एक है। जबकि रूह अल्लाह का हुक्म है। यह दोनों एक नहीं है बल्कि अलग-अलग है,दोनों की कार्य प्रणाली अलग-अलग है,पश्चमी अर्थात नास्तिक विचारधारा इन दोनों मतों की विरोधी है। वह संसार को ही सत्य मानती है। आद्यत्मिक जीवन से उनका कोई सम्बन्ध नहीं है।

गुणत्रय(सत्त्व,रज,तम)

वेदान्त के अनुसार मनुष्य कर्मों की प्रक्रिया इन तीन गुणों पर आधारित है। प्रत्येक गुण की अपनी अलग विशेषता है। जिस मनुष्य में सत्त्व गुण की प्रधानता होती है। वह शुद्ध एवं स्वेतमय होकर धर्म का पालन करता है,वह ब्रह्म में लीन रहता है। सत्त्व गुण प्रकाश का प्रतीक होता है। तमस गुण अन्धकार का प्रतीक है। यह मनुष्य को आलस्य में डुबो कर रखता है,इस कारण सारा जीवन व्यर्थ हो जाता है। इन दोनों गुणों के बीच रजों गुण रहता है। इस गुण के कारण मनुष्य में ज्ञान होते हुये भी, वह शारीरिक इच्छा के अनुसार चलता है। जिससे उसके अन्दर क्रोध, ईर्ष्या की प्रधानता रहती है। मनुष्य का स्वभाव इन तीनों गुणों पर आधारित होता है।

---

[125] पारा 15 सूरह अल-इसरा आयत - 85,86

Scanned with CamScanner

रूह,नफ़्स,क़ल्ब

रूह अल्लाह की इबादत से सुकून हासिल करती है। यह दूसरों को भी यही दावत(कहना) देती है, कि अल्लाह ही है जो हक़ीक़त है। बाकी ये दुनियाँ फ़ानी(नश्वर) है। रूह प्रकाशमान होती है। नफ़्स हमेंशा बुरे कामों में उलझाकर रखता है। हर बुरे काम को करने के लिए उत्सुक करता जो दुनियाँ और आख़रत दोनों को खराब करता है। नफ़्स अन्धेरे में डाले रहता है। क़ल्ब दोनों के बीच का हिस्सा है। जो दोनों के बीच फ़सा रहता है,यह तीनों इंसान के अन्दर रहते है। इन तीनों पर पूरी ज़िंदगी निर्भर होती है।

निष्कर्ष

वेदान्त में सत्त्व,रज,तम एवं कुर्आन में रूह,नफ़्स,क़ल्ब इन तीनों की अधिकता एवं नियुनता के आधार पर मनुष्य का जीवन निर्भर है। अतः दोनों का आधार ही जीवन को कसौटी पर रखना है।

मोक्ष

वेदान्त के अनुसार प्रत्येक सनातन धर्म के अनुयायी को मोक्ष का अधिकारी होना अत्यन्त आवश्यक है। यदि मनुष्य मोक्ष प्राप्त नहीं करता है, तो वह सात जन्मों के जीवन चक्र में फ़सा रहता है। यह क्रिया निरन्तर चलती है। इन जीवन चक्रों से मुक्ति पाना ही मोक्ष कहलाता है। मोक्ष पाने के लिए मार्गों का उचित चयन करना आवश्यक है। मनुष्य जीवित रहते हुये भी मोक्ष का अधिकारी हो सकता है, मोक्ष के लिए जीवन चक्रों में फसना अनिवार्य नहीं है। वेदान्त द्वारा बताए गए मार्गों के अनुसार मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। मोक्ष के लिए वेदान्त का अध्ययन आवश्यक है। [126]

[126] वेदान्तसार - 215,216

Scanned with CamScanner

जन्नत

कुर्आन के अनुसार इंसान की ज़िंदगी का मक़सद, हमेंशा के लिए सुकून हासिल करना है। वह दुनियाँ में एक निश्चित समय तक रहता है। इंसान को एक बार ज़िंदगी मिलती है। इस ज़िंदगी में अपने अच्छे कर्मों के बदले वह आद्यात्मिक जीवन में हमेंशा सुकून एवं सुविधाएँ प्राप्त कर सकता है। कुछ इन्सानों के लिए जन्नत में जाना असम्भव होता है,क्योकि जन्नत में जाने के लिए 'एक अल्लाह' को मानना जरूरी है। कुर्आन में जन्नत की अनेक सुविधाओं का विस्तृत वर्णन किया गया है।[127]

निष्कर्ष

वेदान्त के अनुसार स्वर्ग एक बन्धन का रूप है। जो कर्मों के आधार पर निर्भर है। अतः संसार का उत्क्रष्टतम रूप स्वर्ग है। जबकि कुर्आन में जीवन का मक़सद जन्नत को हासिल करना है। लेकिन वेदान्त मोक्ष के बाद किसी भी प्रकार का कोई वर्णन नहीं करता मोक्ष ही अन्त है,परन्तु कुर्आन में जन्नत की चर्चा की गयी है। कुर्आन जन्नत में मिलने वाली अनेक सुविधाओं के विषय में वर्णन करता है। मोक्ष नाम का कोई उद्देश्य इस्लाम धर्म में नहीं है। अतः जन्नत और स्वर्ग दोनों कर्मों के आधार पर निर्भर है। दोनों में इस आधार पर समानता दिखाई देती है।

[127] पारा 30 सूरह - बुरुज आयत - 11

Scanned with CamScanner

उपसंहार

भारतीय सभ्यता प्रचीन समय से ही आध्यात्मवादी रही है। इस मत में कोई संदेह नहीं है क्योंकि वेदों के अध्ययन से इसकी प्रामाणिकता सिद्ध होती है। वेद भारतीय सभ्यता का मूल है। एक विशेष क्षेत्र को विद्वानों ने भौगोलिक दृष्टि से अनेक नाम दिये। बाद में सभी नाम लोक प्रिय हुये। ग्रीक ने इण्डिया कहा,अरब खाड़ी के देशों ने 'हिंदुस्तान' कहा,और अन्तिम नाम 'भारत' बहुत से धार्मिक ग्रन्थों में मिलता है। वास्तव में हिन्दू शब्द एक भौगोलिक शब्द है। जिसका अर्थ- सिन्धु नदी के किनारे पर रहने वाले लोग' वह हिन्दू है। और उनके अलग-अलग धर्म है। धर्म का अर्थ- धारण करना,क्या धारण करना एक विशेष प्रकार के नियम एवं क़ानून को धारण करना ही धर्म कहलाता है। वैदिक काल में छोटे-छोटे अनेक नये धर्म निकलकर सामने आ गए थे। इन धर्मों के अनुयायी अपने-अपने मत का मंडन और दूसरे मत का खण्डन करने में लगे हुये थे, कोई भी किसी के धर्म को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था। समयानुसार धीरे-धीरे यह परम्परा निरन्तर चलती हुई आ रही है। सभ्यता में विशाल भौगोलिक क्षेत्र आता है। जिसमें अनेक धर्म एवं उसके के अनुयायियों का होना निश्चित है। भौगोलिक दृष्टि से भारतीय सभ्यता में रहने वाला प्रत्येक मनुष्य हिन्दू है। इस पर किसी भी प्रकार का कोई संदेह नहीं किया जा सकता है,परन्तु सभ्यता में अलग-अलग धर्म के अनुयायी भी होते हैं। जिसमें सनातन, इस्लाम,ईसाई,जैन,बोद्ध,पारसी,सिख एवं अन्य धर्म समाहित है। धर्म के अपने विशेष मूल सिद्धांन्त एवं नियम होते है। जिन नियमों का पालन करना प्रत्येक अनुयायी के लिए अनिवार्य है,मनुष्य स्वयं की इच्छा से किसी भी धर्म को धारण कर सकता है। परन्तु दूसरे धर्म को धारण करना वर्तमान में बहुत कठिन हो गया है,यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे धर्म के विषय में रुचि लेता है, तो बात उसके प्राणों तक आ जाती है, जबकि धर्म एक अत्यन्त सरल एवं सुखम प्रक्रिया है। सभी धार्मिक ग्रन्थ मनुष्य की बुद्धि में चल रहे अनेक प्रश्नों का उत्तर देते हैं।

Scanned with CamScanner

हैरान करने वाली बात यह है, कि एक तरफ अनेक धर्म और उन सभी धर्मों के विपक्ष में एक ही अकेली विचारा धारा वाला धर्म है, जो कि सभी धर्मों का बहिष्कार करता है। जिसे नास्तिक धर्म कहते है। मैं नास्तिकता को एक धर्म की संज्ञा देता हूँ। क्योंकि बाकी अन्य सभी धर्म नियम युक्त है,जिनमें नियमों का पालन करना अनिवार्य है। यदि मनुष्य नियमों का पालन नहीं करता तो उसको कर्मों के अनुसार शारीरिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के दण्ड दिये जाते है। दूसरी ओर नास्तिक धर्म, यह नियम मुक्त है। इसमें मनुष्य अपनी इच्छानुसार चलता है,प्रत्यक्ष संसार का भोग ही जीवन का उद्देश्य होता है। यह पूरे विश्व की जनसंख्या में मात्र सात प्रतिशत है। अधिकतर नास्तिक तार्किक शक्ति में सक्षम होते हैं। साधारण मनुष्य इनके सवालों का जवाब आसानी से नहीं दे सकता। यदि देखा जाए तो प्रत्येक धर्म एक दूसरे का दुश्मन नहीं है। बल्कि धर्म को मानने वाले अनुयायी एक दूसरे के दुश्मन बने हुये है। किसी भी धर्म को जानना हो तो उसके अनुयायी को नहीं देखना चाहिए। क्योंकि अधिकतर अनुयायियों को नहीं पता होता है कि उनका धर्म क्या कह रहा है। व्यक्ति को न देखकर उसके धर्म ग्रन्थों को पड़ना चाहिए,जब धर्म ग्रन्थों को पड़ेंगे तभी उसकी वास्तविकता के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। बड़े दुख: की बात है कि आज का मनुष्य धन के कारण अपने धार्मिक ग्रन्थों से बहुत दूर भाग रहा है। मनुष्य के पास अपने धार्मिक ग्रन्थों को पड़ने का समय नहीं है। हाँ लेकिन वह दूसरे के धार्मिक ग्रन्थों और उनके अनुयायियों के प्रति ईर्ष्या करने का समय अवश्य निकाल लेता है। दृश्यमान जगत में इतना लीन रहता है कि वह अपने अस्तित्व को ही भूल जाता है। कि वह कहाँ से आया? कहाँ जाएगा? यह विशाल संसार कैसे चलता है? इसकी रचना कैसे हुई? या फिर किसने बनाया है,यदि बनाया तो वह कौंन है? क्या मनुष्य संसार में सुख भोगने के लिए पैदा हुआ है? इस प्रकार के अनेक सवालों के जबाब मनुष्य धार्मिक ग्रन्थों के माध्यम से आसानी से प्राप्त कर सकता है। यदि मनुष्य विज्ञान के माध्यम से देखता है तो विज्ञान अधिकतर स्थानों पर धर्म के अनुसार काम करता हुआ दिखाई पड़ता है,लेकिन ईश्वर आत्मा इत्यादि के विषय में मौन रहता है। ईश्वर के विषय में धार्मिक प्रमाणो का खण्डन करता है। जीवन को 'सुख' भोगने का साधन बताता है।

Scanned with CamScanner

अनेक विद्वान कहते है कि हिन्दू शब्द सबसे पहले धार्मिक दृष्टि से अग्रेंजो के द्वारा दिया गया था। जबकि भारतीय सभ्यता का धार्मिक नाम सनातन अथवा वैदिक धर्म है। सनातन धर्म के धार्मिक ग्रन्थों के क्रम में सर्वप्रथम ऋग्वेद को रखा जाता है। ऋग्वेद सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। वेद,उपनिषद्,इतिहास,पुराण,स्मृति सभी धार्मिक ग्रन्थ है। यदि कोई स्मृति श्रुति से टकराती है तो श्रुति को सर्वोपरि माना जाता है।

इस्लाम का शाब्दिक अर्थ – अमन अथवा शान्ति है। अपनी रज़ा(इच्छा) को अल्लाह के हवाले करने वाला एक मुसलमान कहलाता है। जिस धर्म का अर्थ ही शान्ति हो, वह अपने ही अनुयायियों के कारण, वही धर्म अशान्ति प्रिय कहा जाने लगा है। क्योंकि इन लोगों ने इस्लाम को पड़ा ही नहीं है,और न कभी पढ़ने की कोशिश करते है। इस्लाम में सबसे प्रमुख किताब कुर्आन मज़ीद है। यह अल्लाह का आखिरी पैग़ाम है। इसके बाद अब कोई भी आसमानी किताब नहीं आएगी। अल्लाह ने कुर्आन में बताया है। कि हमने प्रत्येक समय में एक किताब आसमान से उतारी है, कुर्आन से पहले जितनी भी किताबे अल्लाह ने भेजीं है। वह एक समुदाय(कौम) तथा एक राष्ट्र (क़बीले) के लिए भेजी थी। उन सभी किताबों का एक समय निश्चित था। लेकिन कुर्आन को अल्लाह ने किसी भी एक जाति या देश के लिए नहीं भेजा। यह पूरे संसार के सभी मानव जाति के लिए आया है, और दूसरे स्थान पर हदीश आती है। जिसमें आख़री पैगंबर मोहम्मद साहब (अवतार) के कथन एवं जीवनशैली के विषय में बताया गया है। हदीस कुर्आन की व्याख्या है। हदीस कभी भी कुर्आन का विरोध नहीं करती है। वर्तमान में अधिकतर लोग यह नहीं जानते की दोनों धर्मों में कितने स्थानों पर समानताएँ हैं। यहाँ पर सामान्य समानता जैसे- चोरी करना, शराब पीना, जुआ खेलना, माता पिता की सेवा न करना इत्यादि अनेक विषय है जिनको दोनों धर्मों में करने से माना किया गया है। इन विषयों को छोड़कर दोनों धर्मों की तत्त्व मीमांसा में समानता को बताने का प्रयास किया गया है,लेकिन बहुत से ऐसे विषय है। जिनको सीधे नकारा नहीं जा सकता कि ऐसा नहीं है। कुर्आन के अनुसार बताया गया है कि प्रत्येक समय में एक राष्ट्र और समुदाये के लिए अवतारों

Scanned with CamScanner

को भेजा गया था। जिसमें श्री राम, श्री कृष्ण भी हो सकते है। परन्तु एक मुस्लिम होने के नाते इसको तथ्य के आधार पर नहीं कहा जा सकता है,क्योंकि कुर्आन में एक लाख चौबीस हज़ार अवतारों के विषय में आया है। लेकिन सभी के नामों को नहीं बताया गया। सिर्फ कुछ नामों को बताया गया है। एक मुसलमान होने के नाते हमें इन विषय पर किसी भी प्रकार का कोई भी कथन एवं टिप्पणी करना गलत है। यदि कोई भी व्यक्ति ऐसा करता है, तो उसको क्षमा माँगनी चाहिए। प्राचीन भारत में अनेक धर्म के मानने वाले एक साथ मिलकर जीवन व्यतीत करते थे। लेकिन वर्तमान में अधार्मिक लोगों ने धर्म को एक बड़ा हथियार बना कर मनुष्यों के बीच में छोड़ दिया है। धर्म के नाम पर आपस में झगड़ा करवाना और प्रत्यक्ष दुनिया का सुख भोगना यही अधार्मिकता के काम हैं। संसार का सुख सिर्फ धन के माध्यम से प्राप्त हो सकता है। यह विचार इतना अधिक बलशाली हो गया है, कि प्रत्येक व्यक्ति इसका शिकार बन गया है। वर्तमान में पश्चमी देशों की नक़ल करने के लिए हर एक व्यक्ति बाध्य है। लेकिन उसके बदले में धर्म,स्वदेश एवं भाई चारे को दफ़न कर चुका है। भारतीय संस्कृति किसी भी धर्म की विरोधी नहीं है। बल्कि वह तो सभी को अपने अन्दर समाहित कर लेती है। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता में परिवार एक महत्वपूर्ण इकाई रहा है। जिसको अनदेखा नहीं किया जा सकता। यदि पुत्र पिता की इच्छा के विरुद्ध जा रहा हो तो उसको दण्ड दिया जाता है। माता पिता को एक विशेष दर्जा प्राप्त है। पति पत्नी एक दूसरे को सम्मान और इज़्ज़त देते हैं। यह भारतीय संस्कृति का विधान है। पश्चमी देशों में परिवार जैसी कोई इकाई नहीं है। वहाँ सभी स्वतंत्र है। पश्चमी एवं राजनैतिक लोग यह चाहते है। कोई भी भारतीय अपने-अपने धर्म को न पढ़े। यदि वह पढ़ने लग जाएँ और दोनों धर्मों की समानताओं को एक दूसरे से साझा करेगें तो उनका धन्धा बन्द हो जाएगा। वर्तमान स्थिति को देखते हुये प्रत्येक व्यक्ति को संस्कृत एवं अरबी भाषा का ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य है। ताकि आपसी भाई चारे के साथ देश को हीन भावना से मुक्त करके आगे बड़ाया जा सके। धार्मिक मतभेद होना जरूरी है लेकिन धार्मिक मन भेद नहीं होना चाहिए। यह तभी सम्भव हो सकता है कि जब व्यक्ति धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन कर, समानताओं को व्यवहार में लाये। दोनों धार्मिक दृष्टिकोणों से तत्त्व मीमांसाओं का

Scanned with CamScanner

अध्ययन करके अनेक समानताओं को निकालने का प्रयास किया गया है। प्रयास में स्थान- स्थान पर समानता प्राप्त होती है। लेकिन उनकी क्रिया शैली में अन्तर दिखाई देता है। यदि दोनों धर्मो की समानताओं को मानते हुये खुशी के साथ आप अपना जीवन यापन कर सकते है। इससे एक दूसरे के प्रति क्रोध समाप्त हो जाएगा। अतः अंत में सभी नदियाँ समुद्र में जाकर मिल जाती हैं। सामाजिक सौहार्द को बनाए रखना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है।

इति। ।

Scanned with CamScanner

संदर्भ – ग्रन्थ सूची

(अ)प्राथमिक स्रोत –

1. ईशादि नौ उपनिषद्, शांकरभाष्यसहित,गीता प्रेस गोरखपुर, 2010

2. डा॰ विश्वेश्वर(व्याख्याकार) ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्य

3. शुक्ल,बदरीनाथ (व्याख्याकार),वेदान्तसार, मंगला प्रकाशन,2005

4. शर्मा,डा. उमा शंकर(संपादक),सर्वदर्शन-संग्रह,चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी,2008

5. जालंधरी मो. फतेह मौलाना, कुर्आन (उर्दू अनुवाद),किताब भवन लाहौर,2010

6. राज दाऊद,सही बुख़ारी(अनुवाद एवं व्याख्या),मरकज़,जमीयतुल हदीस हिन्द,2004

7. वाहिदुज्जमन अल्लामा, सही मुस्लिम(उर्दू अनुवाद) नौमानी कुतुबखाना लाहौर,2004

Scanned with CamScanner

8. पंडित रामावतार विद्याभास्कर(व्याख्याकार),पंचदशी, बिजनौर(यू.पी)

9. गंगा विष्णु श्री कृष्णदास(व्याख्याकार),विवेकचूड़ामणि:,कल्याण,मुंबई

10.वर्मा सुधींदृ(अनुवादक),तत्त्व मीमांसा,माया प्रेस,इलाहाबाद,1967

11.वर्मा अशोक कुमार,तत्त्व मीमांसा एवं ज्ञान मीमांसा,मोतीलाल बनारसीदास,दिल्ली,1956

12.श्रीमद्भगवद गीता(हिन्दी अनुवाद सहित),गीता प्रेस,गोरखपुर

13.सरस्वती दयानन्द(हिन्दीभाष्य)ऋग्वेद,पहाड़ीधीरज प्रेस,दिल्ली 1771

Scanned with CamScanner

(ख) द्वितीया स्रोत

1. उपाध्याय,बलदेव,भारतीय दर्शन,शारदामन्दिर,वाराणसी,2001

2. डा.राधाकृष्ण,भारतीयदर्शन,राजपालऐंडसन्स,कश्मीरीगेट, दिल्ली,1995

3. जैन,डा.सुधा,अद्वैत तत्त्व मीमांसा,प्रतिभा प्रकाशन,दिल्ली,1986

4. डा.मिश्र,आद्याप्रसाद(व्याख्याकार),वेदान्तसार,अक्षयवटप्रकाशन, प्रयागराज,2007

5. Muller,max,Six system of Indian Philosophy,chokhamba Sanskrit series,Vanarsi

6. Gupta, S.N Das,History of Indian Philosophy,Motilal Bnarsidas,Delhi,1975

Scanned with CamScanner

(ग) कोश-ग्रन्थ –

1. वामन,शिव राम आप्टे,संस्कृत हिन्दी कोश,नाम पुब्लिशर्स, आठवा संस्करण,2002

2. अवस्थी,बच्चूलाल,भारतीय दर्शन बृहत्कोश,शारदा पब्लिशिंग हाउस,दिल्ली, 2004

3. शुक्ल,डा. दीनानाथ,भारतीय दर्शन परिभाषा कोश,प्रतिभा प्रकाशन दिल्ली,1993

Scanned with CamScanner

(घ)अंतर्जालीय श्रोत –

1. Quran Channel,www.youtube.com/c/salsabeelquran Quranic Recitation:Mishary bin Rashid Al Afsay,Translation:Fateh Muhammad Jalandary

2. Rig Bhashya, www.tatvavada.org Shri Shashidar tIrtha Viracita,Shri Jayatirtha Stuti,Translated by Shri Hunsur Sriprasad

3. Sarvdarshan,(E-Book) www.epustakalay.com Edited By Udaya Naraya Singh

Scanned with CamScanner